3 | राजधानी
तपती गर्मी में सभा में जमे रहे लोग

6 | अभिमत
दुनिया को एकजुट करता भारत

10 | विदेश
अपहृत हिंदू लड़की कराची से बरामद

12 | स्पोर्ट्स
दिव्या को एशियाई महिला शतरंज का स्वर्ण

RNI NO.DELHIN/2012/48369
वर्ष 11 अंक 216
नई दिल्ली, सोमवार, 12 जून, 2023
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
नगर संस्करण

नई दिल्ली, लखनऊ, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

मध्य प्रदेश में सत्ता विरोधी लहर नहीं

राष्ट्रीय-11

अध्यादेश दिल्ली के लोगों का अपमान: केजरीवाल

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

सेवा पर नियंत्रण विवाद

● कहा-पहले राष्ट्रीय राजधानी पर वार, फिर अन्य राज्यों में लाए जाएंगे अध्यादेश

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तीखा हमला करते हुए राष्ट्रीय राजधानी में सेवाओं पर नियंत्रण से जुड़े अध्यादेश को 'हिटलरशाही और तानाशाही' नाम दिया। उन्होंने कहा कि सबसे पहले दिल्ली पर वार किया गया और अब अन्य राज्यों के लिए भी इसी तरह के अध्यादेश लाए जाएंगे। रामलीला मैदान में आम आदमी पार्टी (आप) की महारैली को संबोधित करते हुए केजरीवाल ने कहा कि केंद्र का अध्यादेश दिल्ली के लोगों का अपमान है। उन्होंने कहा, भाजपा मुझे गाली दे सकती है और मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन मैं दिल्ली के लोगों का अपमान बर्दाश्त नहीं करूंगा।

भीषण गर्मी के बीच हजारों लोग महारैली में भाग लेने के लिए रामलीला मैदान में एकत्र हुए, जिसमें पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के साथ-साथ आप के वरिष्ठ नेता मौजूद थे। राज्यसभा सदस्य कपिल सिब्बल ने भी इस रैली में शिरकत की। रैली को संबोधित करते हुए केजरीवाल ने आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत केंद्र संविधान में विश्वास नहीं करता। केजरीवाल ने आरोप लगाया, जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कहते हैं कि वह उच्चतम न्यायालय के फैसले को स्वीकार नहीं करते , तो यह हिटलर शाही है। मोदीजी का यह काला अध्यादेश कहता है कि मैं लोकतंत्र को स्वीकार नहीं करता। अब दिल्ली में अत्याचारी शासन होगा। अब दिल्ली के लोग नहीं, बल्कि उपराज्यपाल सर्वोच्च हैं। केंद्र ने 19 मई को दिल्ली में ग्रुप-ए के अधिकारियों के तबादले और पदस्थापना पर एक प्राधिकरण बनाने के लिए अध्यादेश जारी किया था, जिसे आप नीत सरकार ने सेवाओं के नियंत्रण पर न्यायालय के फैसले के साथ धोखा बताया था।

शीर्ष अदालत के 11 मई के फैसले से पहले दिल्ली सरकार में सभी अधिकारियों के स्थानांतरण और पदस्थापना मामले उपराज्यपाल के कार्यकारी नियंत्रण में थे। अध्यादेश के बाद, केजरीवाल गैर-भाजपा दलों के नेताओं से संपर्क कर अध्यादेश के खिलाफ समर्थन जुटाने का प्रयास कर रहे हैं ताकि संसद में इस बारे में केंद्र का विधेयक नाकाम हो जाए। दिल्ली के मुख्यमंत्री ने रैली में कहा, मैं देश भर में यात्रा कर रहा हूं और अन्य राजनीतिक दलों के नेताओं से मिल रहा हूं। कृपया यह न सोचें कि आप अकेले हैं। आपके पास भारत के 140 करोड़ लोगों का समर्थन है। आप नेता ने दावा किया कि दिल्ली वार का सामना करने वाला पहला शहर है और दिल्ली की जनता के अधिकार छीनने वाले इस अध्यादेश का अगर विरोध नहीं किया गया तो राजस्थान, पंजाब और महाराष्ट्र जैसे अन्य राज्यों के लिए भी इसी तरह के अध्यादेश लाए जाएंगे। केजरीवाल ने कहा, मोदीजी गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में और फिर प्रधानमंत्री के रूप में कुल 21 वर्षों से सत्ता में हैं। केजरीवाल आठ साल से सत्ता में है। किसने लोगों के लिए ज्यादा काम किया है? इतनी सारी बाधाओं के बावजूद उन्होंने पूरी शक्ति होने के बावजूद उस तरह का काम नहीं किया जैसा मैंने किया है। उन्होंने केंद्र की भाजपा नीत सरकार पर आरोप लगाया कि वह दिल्ली सरकार द्वारा किए जा रहे अच्छे कामों को रोकना चाहती है।

केजरीवाल ने आरोप लगाया कि मैं स्कूलों और अस्पतालों का निर्माण कराता हूं, मोदीजी कहते हैं कि वह ऐसा नहीं होने देंगे। उन्होंने दिल्ली में मुफ्त योग कक्षाएं, मुफ्त चिकित्सा परीक्षण बंद कर दिए। केजरीवाल ने साथ ही कहा कि देश बेरोजगारी और महंगाई से (शेष पेज 9)

नई दिल्ली में रविवार को रामलीला मैदान में आयोजित आम आदमी पार्टी की महारैली को संबोधित करते मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल। फोटो: रंजन डिमरी

'हमारे पास सौ-सौ सिसोदिया और जैन हैं'

नई दिल्ली। आप नेताओं मनीष सिसोदिया और सत्येंद्र जैन की गिरफ्तारी पर केजरीवाल ने कहा कि दोनों नेताओं को राष्ट्रीय राजधानी में काम रुकवाने के लिए गिरफ्तार किया गया। उन्होंने कहा, लेकिन हमारे पास 100 सिसोदिया, 100 जैन हैं। हम अच्छे काम जारी रखेंगे। पूर्व उपमुख्यमंत्री सिसोदिया को जहां दिल्ली आबकारी नीति 2021-22 के निर्माण और कार्यान्वयन में कथित अनियमितताओं के आरोप में इस साल फरवरी में गिरफ्तार किया गया था, वहीं जैन को पिछले साल मई में धनशोधन मामले में गिरफ्तार किया गया था।

मोदी 1971 में प्रधानमंत्री रहे होते तो पाक और चीन से भूमि मुक्त करा लेते: बृजभूषण

भाषा। गोंडा

कैसरगंज से भाजपा सांसद और भारतीय कुश्ती संघ के प्रमुख बृजभूषण शरण सिंह ने रविवार को कहा कि यदि 1971 में नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री रहे होते तो पाकिस्तान द्वारा 1947 में और चीन द्वारा 1962 में हड़पी गई भूमि मुक्त करा ली गई होती। सिंह केंद्र में मोदी सरकार के नौ वर्ष पूर्ण होने के मौके पर यहां बालपुर में एक विशाल जनसभा को संबोधित कर रहे थे। हालांकि उन्होंने अपने खिलाफ यौन उत्पीड़न के आरोपों को लेकर कोई बात नहीं की। उन्होंने कहा, 1947 में जब कांग्रेस सत्ता में थी, तब इस देश का बंटवारा हुआ जिसका घाव अभी तक भरा नहीं है। जब कांग्रेस सत्ता में थी, पाकिस्तान द्वारा आक्रमण कर 78,000 वर्ग किलोमीटर जमीन हड़प ली गई। वर्ष 1962 में जब कांग्रेस सत्ता में थी, चीन ने हम पर हमला किया और 33,000 वर्ग किलोमीटर जमीन हड़प ली। सिंह ने कहा, 1971 में एक अप्रत्याशित घटना में 92,000 पाकिस्तानी सैनिकों को भारतीय सेना द्वारा बंधक बना लिया गया, लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने पुराना हिसाब निपटाए बगैर उन्हें छोड़ दिया। यदि मोदी जैसा प्रधानमंत्री होता तो कब्जा की गई जमीन मुक्त करा ली गई होती। उन्होंने 1975 में देश में आपातकाल लगाने को लेकर कांग्रेस पर प्रहार किया और यह आरोप भी लगाया कि कांग्रेस ने 1984 में सिख विरोधी दंगों में सिखों का नरसंहार कराया।

गोंडा में एक रैली को संबोधित करते भाजपा सांसद ब्रजभूषण शरण सिंह

शनिवार को प्रदर्शनकारी पहलवानों ने आरोप लगाया कि सिंह यौन शोषण पीड़ितों पर दबाव बनाने के लिए अपने प्रभाव का उपयोग कर रहे हैं और उन पर अपने बयान बदलने का दबाव डाल रहे हैं। उन्होंने सिंह के खिलाफ 15 जून तक कोई निर्णायक कदम नहीं उठाए जाने पर अपना आंदोलन दोबारा शुरू करने की धमकी दी। केंद्रीय खेल मंत्री अनुराग ठाकुर द्वारा दिए गए आश्वासन के मुताबिक, इस मामले में 200 से अधिक लोगों का बयान ले चुकी दिल्ली पुलिस 15 जून तक आरोप पत्र दाखिल करेगी। रविवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह की प्रशंसा करते हुए सिंह ने कहा, शुरुआत में हम यह मांग उठाया करते थे कि जहां बलिदान मुखर्जी हुए, वो कश्मीर हमारा है। हम आज भी गर्व से यह दोहराते हैं और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह की वजह से संभव हुआ है। कांग्रेस पर हमला करते हुए भाजपा सांसद ने कहा, कांग्रेस वकील को खड़ा करके बाधाएं उत्पन्न करती थी ताकि समय पर राम मंदिर पर निर्णय न किया जा सके।

इसने एक दोषी आतंकी को फांसी की सजा से बचाने के लिए आधी रात उच्चतम न्यायालय खुलवाया। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेस भारतीय सेना की बहादुरी के प्रमाण मांगती थी और उसने भारत में वैज्ञानिकों द्वारा तैयार कोरेना रोधी टीके पर सवाल खड़ा किया था। सिंह ने कहा कि 1984 के बाद अल्पमत की सरकारें (शेष पेज 9)

अफ्रीका में नौ माह हिरासत में रहकर वतन लौटे 16 भारतीय

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

एक मालवाहक जहाज के चालक दल के 16 भारतीय सदस्य अफ्रीकी देश इक्वेटोरियल गिनी और नाइजीरिया में नौ महीने से अधिक समय तक हिरासत में रहने के बाद भारत लौट आए हैं। आधिकारिक सूत्रों ने रविवार को यह जानकारी दी। आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक भारत सरकार की ओर से संबंधित प्रशासन के साथ की गई लंबी बातचीत के बाद यह संभव हो सका है। तेल टैंकर एमटी हीरोइक इदुन और उसके चालक दल के 26 सदस्य, जिनमें 16 भारतीय शामिल हैं, पिछले साल अगस्त से हिरासत में थे। उन्हें शुरू में इक्वेटोरियल गिनी और बाद में नाइजीरिया में हिरासत में लिया गया था। जहाज और उसके चालक दल के सदस्यों पर तेल चोरी सहित विभिन्न आरोप लगाए गए थे। एक सूत्र ने कहा, लंबी बातचीत के बाद, चालक दल के खिलाफ सभी आरोप हटा दिए गए और जुर्माना भरने के बाद जहाज को 27 मई को रिहा कर दिया गया। भारतीय चालक दल के सदस्य (शेष पेज 9)

न पहले पीछे हटा था, न अब हटूंगा: पायलट

● वरिष्ठ कांग्रेस नेता अलग राजनीतिक दल बनाने की अटकलों पर चुप्पी साधे रहे

पायनियर समाचार सेवा। जयपुर/नई दिल्ली

वरिष्ठ कांग्रेस नेता सचिन पायलट ने रविवार को अपने पिता राजेश पायलट की पुण्यतिथि पर दौसा में आयोजित एक बड़े कार्यक्रम में अपना राजनीतिक दल शुरू करने को लेकर जारी अटकलों पर चुप्पी साधे रहे। इसके बजाय 45 वर्षीय नेता ने भ्रष्टाचार विरोधी तथा वंचितों की वकालत करने वाले की अपनी भूमिका पर ही ज्यादा ध्यान रखा। अपने सियासी भविष्य पर पायलट की चुप्पी ने राजनीति के पंडितों को उलझा दिया है।

कार्यक्रम में पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट ने कहा कि उनका जो विश्वास और वादा है उस पर न वह पहले पीछे हटे, न अब हटने वाले हैं और चाहे जो भी हो, लोगों के लिए लड़ना और उन्हें न्याय दिलाना उनका वादा था और वादा रहेगा। उन्होंने कहा कि उन्होंने कहा कि 'नीली छतरी वाला' (ईश्वर) सबसे बड़ा न्याय देता है और आज नहीं तो कल न्याय होगा। दौसा के गुर्जर छात्रावास में अपने पिता एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री राजेश पायलट की पुण्यतिथि पर उनकी प्रतिमा का अनावरण करने के बाद कार्यक्रम में अपने संबोधन में पायलट ने पेपर लीक मामले में अभ्यर्थियों के लिए मुआवजे की उनके द्वारा उठाई गई मांगों पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करने पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर परोक्ष हमला भी किया।

पिछले महीने पायलट ने पेपर लीक मामले में उम्मीदवारों के लिए मुआवजे, राजस्थान लोक सेवा आयोग (आरपीएससी) के पुनर्गठन और पूर्व वसुंधरा राजे सरकार के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों की उच्च स्तरीय जांच की मांग की थी। उन्होंने कहा (शेष पेज 9)

दौसा में रविवार को अपने पिता राजेश पायलट की प्रतिमा का अनावरण करने के बाद सभा को संबोधित करते कांग्रेस नेता सचिन पायलट।

पाक में घुसा इंडिगो का विमान, सुरक्षित लौटा

भाषा। इस्लामाबाद

अमृतसर से अहमदाबाद जा रहा इंडिगो एयरलाइन का एक विमान खराब मौसम के कारण पाकिस्तान के गुजरांवाला पहुंच गया। हालांकि, बाद में वह सुरक्षित भारतीय हवाई क्षेत्र में लौट आया। विमानन कंपनी ने रविवार को यह दी। एयरलाइन ने एक बयान में कहा कि इंडिगो की उड़ान 6ई-645 को शनिवार को खराब मौसम के कारण अटारी से पाकिस्तान के हवाई क्षेत्र में उतरना पड़ा। इंडिगो ने बताया, इस मामले में अमृतसर स्थित वायु यातायात नियंत्रण (एटीसी) ने पाकिस्तान के साथ फोन के जरिए बेहतर तरीके से समन्वय किया। विमान में सवार चालक दल लगातार पाकिस्तान के साथ रेडियो/टेलीफोन पर संपर्क में रहा और विमान सुरक्षित तरीके से अहमदाबाद हवाई अड्डे पर उतरा। डॉन अखबार की खबर में कहा गया है कि फ्लाइट रडार के अनुसार, 454 नॉट की गति से उड़ रहा भारतीय विमान ने शनिवार शाम करीब साढ़े सात बजे उत्तरी लाहौर में प्रवेश किया और रात आठ बजकर एक मिनट पर भारत लौट (शेष पेज 9)

चुनौतियों को अवसरों में बदलते रहेंगे: मोदी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● राष्ट्रीय प्रशिक्षण सम्मेलन में पीएम ने क्षमता निर्माण के महत्व को रेखांकित किया

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को यहां पहले राष्ट्रीय प्रशिक्षण सम्मेलन का उद्घाटन किया और क्षमता निर्माण, भेदभाव को समाप्त करने और सेवा आपूर्ति बढ़ाने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रगति मैदान में आयोजित कार्यक्रम में देश भर के प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थानों से संबंधित 1,500 से अधिक प्रतिभागियों को संबोधित किया।

मोदी ने कार्यक्रम के बाद ट्विटर पर कहा, आज राष्ट्रीय प्रशिक्षण सम्मेलन में भाग लिया, जो सीखने और बेहतर सेवा देने के हमारे प्रयासों का एक हिस्सा है। क्षमता निर्माण, भेदभाव को समाप्त करने और सेवा वितरण को बढ़ाने के महत्व पर प्रकाश डाला। मोदी ने कहा, हम नए भारत के लिए चुनौतियों को अवसरों में बदलते रहेंगे। आधिकारिक बयान में कहा गया कि प्रधानमंत्री मोदी सिविल सेवा के क्षमता निर्माण के माध्यम से, देश में शासन प्रक्रिया और नीति कार्यान्वयन में सुधार के समर्थक रहे हैं।

इसमें कहा गया है कि इस सिलसिले में राष्ट्रीय सिविल सेवा क्षमता निर्माण कार्यक्रम (एनपीसीएससीबी) मिशन कर्मयोगी की शुरुआत की गई। इसके अनुसार, मिशन कर्मयोगी का लक्ष्य सही दृष्टिकोण, कौशल और ज्ञान के साथ, भविष्य की जरूरतों के अनुरूप सिविल सेवा को तैयार करना है। यह सम्मेलन इसी (शेष पेज 9)

फैशन शो के दौरान हुआ हादसा, मॉडल की मौत

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

फिल्म सिटी में स्थित एक स्टूडियो में फैशन शो के दौरान बड़ा हादसा हो गया। इस हादसे में एक मॉडल की मौत हो गई है। फैशन शो के दौरान मॉडल के ऊपर लाइटिंग ट्रस्ट गिर गया, जिससे मॉडल की मौत हो गई है। जबकि एक अन्य व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया है। उसको इलाज के लिए नोएडा के सेक्टर-27 स्थित कैलाश अस्पताल में एडमिट करवाया गया है। पुलिस ने मॉडल के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस ने बताया कि रविवार की दोपहर करीब 1.30 बजे सेक्टर-20 थाना क्षेत्र अंतर्गत फिल्म सिटी में स्थित एक स्टूडियो में फैशन शो का आयोजन किया जा रहा था। जिसमें 24 वर्षीय वंशिका चोपड़ा नाम की मॉडल भी आई हुई थी। जो ग्रेटर नोएडा वेस्ट की दिव्यांश फ्लोरा हाउसिंग सोसाइटी में रहती थी। पुलिस ने बताया कि फैशन शो के आयोजन के दौरान लाइटिंग ट्रस्ट टूट कर अचानक नीचे गिर गया। जिसके नीचे वंशिका चोपड़ा दब गईं। उनकी मौके पर (शेष पेज 9)

क्विक न्यूज

कर्नाटक में महिलाएं सरकारी बसों में मुफ्त यात्रा करेंगी

बेंगलुरु। कर्नाटक मे सत्तारूढ़ कांग्रेस की पांच गारंटी मे शामिल शक्ति योजना को लागू किए जाने के बाद अब महिलाएं रविवार से सरकारी बसो मे मुफ्त यात्रा कर सकती है। अधिकारियो ने बताया कि इस मुफ्त यात्रा सुविधा से प्रतिदिन 41.8 लाख से अधिक महिलाओ को लाभ होगा और सरकारी खजाने पर सालाना 4,051.56 करोड़ रुपए का भार पड़ेगा। यह योजना, राज्य की मूल निवासी महिलाओ के लिए आज अपराह्न एक बजे से प्रदेश की सीमा के अंदर लागू हो गई। मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने यहां विधानसौध की सीढ़ियों से इस योजना की शुरुआत की, जो महिलाओ एवं छात्राओं को लाभ पहुंचाएगा। राज्य विधानमंडल और सचिवालय को संयुक्त रूप से विधानसौध कहा जाता है। उपमुख्यमंत्री डी के शिवकुमार, परिवहन मंत्री रामलिंगा रेड्डी कार्यक्रम मे मौजूद थे, जहां शक्ति योजना के प्रतीक चिह्न का अनावरण किया गया तथा प्रतीकात्मक रूप से पांच महिलाओ को शक्ति स्मार्ट कार्ड जारी किए गए। महिलाएं इस योजना का लाभ उठाने के लिए सरकारी पोर्टल सेवा सिंधु पर पंजीकरण कराकर शक्ति स्मार्टकार्ड के लिए आवेदन कर सकती हैं।

भारत ने जीता महिला जूनियर एशिया कप हॉकी खिताब

खुशी

● चार बार की चैंपियन दक्षिण कोरिया को 2-1 से हराया

भाषा। काकामिगाहारा

भारत ने रविवार को यहां चार बार के चैंपियन दक्षिण कोरिया को 2-1 से हराकर पहली बार महिला जूनियर हॉकी एशिया कप का खिताब जीता। भारत के लिए अनु और नीलम ने गोल दागे जबकि कोरिया के लिए एकमात्र गोल पार्क सियो यिओन ने किया।

पहला क्वार्टर गोल रहित बराबर रहने के बाद भारत ने 22वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर पर अनु के गोल की बदौलत बढ़त बनाई। जापान के खिलाफ सेमीफाइनल की निराशा को पीछे छोड़ते हुए अनु ने गोलकीपर के बाईं ओर से गोल दागते हुए भारत को 1-0 से आगे किया। दक्षिण कोरिया ने हालांकि तीन मिनट बाद पार्क सियो यिओन के गोल की बदौलत स्कोर 1-1 कर दिया। नीलम ने 41वें मिनट में दक्षिण कोरिया की गोलकीपर के दाईं ओर से गोल दागकर भारत को 2-1 से आगे कर दिया जो निर्णायक स्कोर साबित हुआ। भारतीय टीम ने इसके बाद अंतिम क्वार्टर में अपनी बढ़त बरकरार रखते हुए जीत दर्ज की। दक्षिण कोरिया को पेनल्टी कॉर्नर के रूप में गोल करने के कई मौके मिले लेकिन टीम इसका फायदा नहीं उठा सकी। इससे पहले महिला जूनियर एशिया कप में भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 2012 में था जब टीम बैंकॉक में पहली बार फाइनल में पहुंची थी लेकिन चीन से 2-5 से हार गई।

मैच की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुनी गई भारतीय कप्तान प्रीति ने कहा कि राउंड रोबिन चरण में कोरिया के खिलाफ 1-1 से ड्रॉ खेलने के बाद उन्होंने इस मुकाबले के लिए रणनीति बनाई थी। उन्होंने कहा, हमें अच्छी तरह से जानकारी थी कि कोरिया को हराने के लिए हमें किन विशिष्ट क्षेत्रों में काम करने की जरूरत है। प्रीति ने कहा, फाइनल को लेकर हम नर्वस थे। हालांकि हमें पता था कि कुछ विशेष हासिल करने के लिए हमें टीम के रूप में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा। और हमने ऐसा ही किया।

अपने देश को गौरवान्वित करने की हमें खुशी है। भारत ने मुकाबले में आक्रामक शुरुआत की। टीम को पहले ही मिनट में पेनल्टी कॉर्नर मिला लेकिन भारतीय टीम इसका फायदा नहीं उठा सकी। दक्षिण कोरिया ने हालांकि पलटवार करते हुए लय हासिल की (शेष पेज 9)

ऑस्ट्रेलिया ने भारत को हरा जीता डब्ल्यूटीसी फाइनल

निराशा

भाषा। लंदन

विश्व क्रिकेट में अपने रूतबे के बावजूद भारतीय टीम के आईसीसी खिताब जीतने पर लगा ग्रहण अभी टलने का नाम नहीं ले रहा और अब ऑस्ट्रेलिया से 209 रन से हारकर रोहित शर्मा की टीम लगातार दूसरी बार विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप खिताब से वंचित रह गई।

जीत के लिए 444 रन के विश्व रिकॉर्ड लक्ष्य के जवाब में आखिरी दिन सभी की नजरें विराट कोहली और आईपीएल के वंडर ब्वॉय रविंद्र जडेजा पर लगी थी लेकिन स्कॉट बोलैंड ने दोनों को एक ही ओवर में रवाना करके आस्ट्रेलिया की जीत दीवार पर लिखी इबारत की तरह साफ कर दी। भारत ने आखिरी दिन पहले ही सत्र में सात विकेट 70 रन के भीतर गंवा दिए और दूसरी पारी में 234 रन पर सिमट गई। चयन के गलत फैसले हों या आईपीएल खेलने के परिणाम, बल्लेबाजों की नाकामी हो या गेंदबाजी आक्रमण की कमजोरी। सिक्के की उछाल के अलावा इस मैच में भारत के पक्ष में कुछ नहीं रहा।

आईपीएल में रनों के अंबार लगाने वाले उसके बल्लेबाजों के बल्लों को मानों जंग लग गई और गेंदबाज दहशत पैदा नहीं कर सके। पिछली बार न्यूजीलैंड से हारने वाली भारतीय टीम इस बार आस्ट्रेलिया के खिलाफ भी वही कहानी दोहरा गई। आस्ट्रेलिया के पहली पारी के 469 रन के जवाब में भारत ने 296 रन बनाए थे। आस्ट्रेलिया ने दूसरी पारी आठ विकेट पर 270 रन पर घोषित करके भारत को 444 रन का लक्ष्य दिया था। भारत ने आखिरी आईसीसी खिताब 2013 में महेंद्र सिंह धोनी की कप्तानी में इंग्लैंड को हराकर चैम्पियंस ट्रॉफी के रूप में जीता था। उसके बाद से टीम 2014 टी20 विश्व कप फाइनल, 2015 वनडे विश्व कप और 2016 टी20 विश्व कप सेमीफाइनल, चैम्पियंस ट्रॉफी 2017 फाइनल, वनडे विश्व कप 2019 सेमीफाइनल, 2021 टी20 विश्व कप (शेष पेज 9)

धर्मांतरण मामले का मास्टरमाइंड ठाणे से गिरफ्तार

गाजियाबाद और महाराष्ट्र पुलिस ने संयुक्त अभियान चलाकर बद्दो को दबोचा

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

ऑनलाइन गेमिंग एप के जरिए धर्मांतरण मामले का मास्टरमाइंड शहनवाज ऊर्फ बद्दो को महाराष्ट्र और गाजियाबाद पुलिस ने ठाणे से गिरफ्तार किया है। बताया जा रहा है कि बद्दो अलीबाग की एक चॉल से गिरफ्तार हुआ है।

गाजियाबाद के राजनगर निवासी किशोर का धर्मांतरण कराने के बाद मास्टरमाइंड बद्दो उसे अपने मोहरे की तरह इस्तेमाल कर रहा था। उसके इशारे पर किशोर अपने चार दोस्तों पर धर्मांतरण का दबाव रहा था। इससे पहले महाराष्ट्र में भी करीब 400 लोगों के धर्मांतरण की सूचना पर गरमाए मामले की जांच के लिए शनिवार को महाराष्ट्र की मुंब्रा पुलिस गाजियाबाद के कविनगर थाने पहुंची। मुंब्रा क्राइम ब्रांच के सीनियर इंस्पेक्टर मालोजी शिंदे के नेतृत्व में पहुंची दो

धर्मांतरण के आरोपी शहनवाज उर्फ बद्दो को महाराष्ट्र के ठाणे से गिरफ्तार करने के बाद पेश करती गाजियाबाद और महाराष्ट्र की पुलिस।

अधिकारियों की टीम ने कविनगर पुलिस और एसीपी से मुलाकात कर गेमिंग एप के जरिए हुए धर्मांतरण के मामले की पूरी जानकारी ली।

उन्होंने अब तक की गई जांच में जुटाए गए सुबूत और दस्तावेज मांगे हैं, ताकि महाराष्ट्र में गरमाए इस मुद्दे पर रिपोर्ट दी जा सके। कमिश्नरेट

● ठाणे के चॉल में छिपा था आरोपी, धर्मांतरण के बाद पीड़ित को मोहरे की तरह कर रहा था इस्तेमाल

पुलिस ने कुछ जरूरी दस्तावेज और जानकारी मुंब्रा पुलिस से साझा किए हैं, हालांकि अधिकारियों का कहना है कि मुंब्रा पुलिस ने केस से संबंधित सामान्य जानकारियां मांगी थीं। दरअसल, गाजियाबाद में गेमिंग एप के जरिए छात्र के धर्मांतरण का मामला सामने आने पर गुजरात के एक व्यक्ति ने कमिश्नरेट पुलिस के एक सीनियर अधिकारी को फोन करके बताया था कि मुंब्रा में करीब 400 लोगों का धर्मांतरण कराया जा चुका है। गुजरात के इस व्यक्ति का दावा है कि राजेश जानी नाम के एक व्यक्ति का धर्मांतरण भी वहां हो चुका है और राजेश की बेटी ने इसकी सूचना उन्हें दी है।

यह मामला प्रमुखता से प्रसारित हुआ तो महाराष्ट्र में भी यह मुद्दा गरमा गया है। मुंब्रा के एनसीपी विधायक ने इस दावे का विरोध कर ठाणे के पुलिस कमिश्नर से जांच कराने की मांग की थी। इसी मामले में पुलिस कमिश्नर ने मुंब्रा के पुलिस अधिकारियों को यहां जांच के लिए भेजा है।

मुंब्रा पुलिस के अधिकारी ने बताया कि वह धर्मांतरण मामले से जुड़े सबूत और प्रमुख तौर पर मुंब्रा में 400 लोगों के धर्मांतरण के किए गए दावे के बारे में जानकारी जुटाने आए हैं। उन्होंने उन पुलिस अधिकारियों से भी मुलाकात की, जिनके पास गुजरात के व्यक्ति की कॉल आई थी।

तुस्याना में भूमि घोटाले में बड़े अफ़सरों की खुलेगी पूरी कुंडली

ग्रेटर नोएडा। नोएडा के बहुचर्चित तुस्याना भूमि घोटाले में जांच एक कदम और आगे बढ़ गई है। अब बड़े अफसरों की कुंडली को खंगालने का काम किया जाएगा। बड़े अफसरों की कुंडली खंगालने की तैयारी में शासन के आला अफसर जुट गए हैं।

संभावना जताई जा रही है इस घोटाले में भाजपा के एमएलसी नरेंद्र भाटी के भाई कैलाश भाटी का सहयोग करने वाले तमाम बड़े अफसरों पर बड़ी कार्रवाई हो सकती है। दरअसल, आपको बता दें कि एसआईटी ने जांच पूरी होने के बाद शासन को एक पत्र भेजा है।

जिसके बाद तुस्याना भूमि घोटाले से जुड़े तमाम बड़े अफसरों के नामों की सूची शासन स्तर पर तैयार की जा रही है। प्रदेश सरकार ने तुस्याना भूमि घोटाले में शामिल प्रशासनिक और प्राधिकरण के अधिकारियों के नामों की सूची और तैनाती की जानकारी मांगी है।

संक्षिप्त समाचार

गृह मंत्रालय के पूर्व अधिकारी से 1.43 लाख की ठगी

गाजियाबाद। कोतवाली क्षेत्र के अभयखंड-3 में गृह मंत्रालय से सेवानिवृत्त अधिकारी को ऑनलाइन बिजली बिल अपडेट करने का झांसा देकर ठग तीन खातों से एक लाख 43 हजार रुपये ठग लिए। बैंक से पैसे कटने का मैसेज आने पर उन्हें ठगी का पता चला। इंदिरापुरम पुलिस मामले की जांच कर रही है। समाचार एजेंसी से सेवानिवृत्त दिनेदु कुमार घोष ने पुलिस को शिकायत दी कि दोपहर 12 बजे उनके पास युवक ने फोन कर खुद को बिजल विभाग का कर्मी बताया। बातचीत में उनसे कहा कि बिजली का बिल अपडेट नहीं होने पर आपके घर का कनेक्शन काट दिया जाएगा। आरोप है कि आरोपी ने उन्हें झांसे में लेकर एक मैसेज भेजा। इस बीच उनका, पत्नी शुभ्रा सान्याल जो गृह मंत्रालय से सेवानिवत्त हैं, व बेटी ईषा के बैंक खातों की भी जानकारी ले ली। फिर उनसे ओटीपी पूछकर कई बार में अलग-अलग खातों में एक लाख 43 हजार रुपये ट्रांसफर कर लिए। इंदिरापुरम एसीपी स्वतंत्र कुमार सिंह का कहना है कि मामले की जांच के लिए सइबर सेल को निर्देश दिए हैं। जल्द आरोपियों का सुराग मिलने पर गिरफ्तारी के प्रयास किए जाएंगे।

ब्वायफ्रेंड की बहन का महिला ने रेता गला, हालत गंभीर

गाजियाबाद। गाजियाबाद में एक महिला का हैरतअंगेज कारनामा सामने आया है। इस महिला ने अपने ब्वायफ्रेंड की बहन के साथ ऐसा काम किया है, जिसे सुनकर हर कोई परेशान है। लोग कह रहे हैं कि ब्वॉयफ्रेंड की बहन के साथ ऐसी हरकत किया जाना बेहद ही शर्मनाक है। महिला के ब्वॉयफ्रेंड की बहन दिल्ली के एम्स अस्पताल में जिंदगी और मौत के बीच जूझ रही है। मामला गाजियाबाद के कवि नगर थाना क्षेत्र के गोविंदपुरम का है। जानकारी के अनुसार, गोविंदपुरम में 30 साल की महिला सविता सिंह अपने पति और बच्चे के साथ किराए के मकान में रहती है। सविता के भाई यश चौहान के प्रेम संबंध दिल्ली निवासी शादीशुदा महिला योगिता के साथ थे। जिसकी जानकारी सविता को भी थी। योगिता कई बार उसके घर यश के साथ भी आ चुकी थी। फिलहाल योगिता और सविता के भाई यश के बीच प्रेम संबंध अच्छे नहीं चल रहे और विवाहित होने के चलते यश अपने परिवार के समझाए जाने पर उससे अलग होना चाहता था। शुक्रवार को योगिता अपने प्रेमी यश की बहन सविता के घर पहुंची। जहां यश से न मिलने देने की बात पर योगिता का सविता से विवाद हो गया। इसके बाद योगिता ने घर में रखे चाकू से सविता का गला रेत दिया और मौके से फरार हो गई। लहूलुहान सविता को देख घर के बच्चों की चीख पुकार मच गई। जिसके बाद आस पड़ोस के लोग मौके पर पहुंचे और घायल सविता को पास के एक प्राइवेट अस्पताल पहुंचाया गया। जहां से उसे गंभीर हालत में दिल्ली के एम्स रेफर किया गया। महिला का इलाज फिलहाल एम्स ट्रॉमा सेंटर में किया जा रहा है।

संजय नगर में शुरू हुआ अल्ट्रासाउंड सेंटर

गाजियाबाद। मरीजों को बेहतर व उचित दर पर सुविधा देने के लिए गाजियाबाद के संजय नगर में रविवार को सोहन इमेजिंग एवं अल्ट्रासाउंड सेंटर का उद्घाटन वरिष्ठ भाजपा नेता ब्रजपाल तेवतिया व नवीन अस्तपाल के समूह चिकित्सा निदेश डॉ. अनिल तोमर ने किया। इस सेंटर का संचालन अनुभवी डॉ. मोहिनी चौधरी के कुशल निर्देशन में किया जाएगा। इस अवसर पर डॉ. अनिल तोमर ने कहा कि इस सेंटर का संचालन नर सेवा नारायण सेवा के रूप में करने का डॉ. मोहिनी चौधरी और टीम का संकल्प है। इस अवसर पर डॉ. विश्वेंद्र तोमर, डॉ. सोहन वीर सिंह, डॉ. तबरेज रहमान, अनू तोमर आदि मौजूद थे।

पिकअप-बाइक की टक्कर में दो पत्रकारों की मौत

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा सेक्टर-24 कोतवाली क्षेत्र में रविवार सुबह सेक्टर-62 की ओर जाने वाली एलिवेटेड रोड पर दर्दनाक हादसा हो गया। पिकअप और बाइक की भिड़ंत में बाइक सवार दो पत्रकारों की मौत हो गई। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज जांच शुरू कर दी है।

कोतवाली प्रभारी अमित कुमार ने बताया कि रविवार सुबह करीब आठ बजे सूचना मिली कि सेक्टर-62 की ओर जाने वाली एलिवेटेड रोड पर इस्कॉन मंदिर के पास हादसा हो गया। सूचना पर पहुंची टीम ने दो लोगों को घायलावस्था में कैलाश अस्पताल पहुंचाया। दोनों के सिर और शरीर पर गंभीर चोटें आई थीं। अस्पताल में उपचार के दौरान उनकी मौत हो गई। दोनों की पहचान मनोज कुमार निवासी विजयनगर गाजियाबाद और गौरव निवासी नगला अक्कूपुरी गाजियाबाद के रूप में हुई। सूचना मिलते ही मृतकों के स्वजन गाजियाबाद से नोएडा पहुंच गए। स्वजन ने पुलिस को बताया कि दोनों फिल्म सिटी स्थित एक मीडिया हाउस में कार्य करते थे। दोनों की ड्यूटी रात 11 बजे से सुबह सात बजे तक थी। ड्यूटी पूरी करके दोनों बाइक से घर लौट रहे थे। पुलिस ने बताया कि जिस पिकअप से यह हादसा हुआ वह मदर डेयरी की थी। चालक पिकअप छोड़कर भाग गया। पिकअप को कब्जे में ले लिया है।

नवनिर्वाचित सपा जिला कार्यकारिणी की बैठक

ग्रेटर नोएडा। समाजवादी पार्टी के नवनियुक्त जिला कार्यकारिणी के पदाधिकारियों के लिए आज एक बैठक की गई। बैठक का आयोजन सूरजपुर स्थित पार्टी जिला कार्यालय पर हुआ। यह बैठक जिला अध्यक्ष सुधीर भाटी की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

बैठक का संचालन जिला महासचिव सुधीर तोमर ने किया। इस दौरान जिला कार्यकारिणी के पदाधिकारियों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष सुधीर भाटी ने पदाधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि पार्टी ने आप पर भरोसा जताते हुए जिले में पार्टी को मजबूत करने की जिम्मेदारी आपके कंधों पर दी है।

मकान की निर्माणाधीन दीवार गिरने से 3 दबे, एक की मौत

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

गाजियाबाद के खोड़ा सरस्वती विहार में लाल मंदिर के पास मकान की निर्माणाधीन दीवार गिरने से ठेकेदार और दो कामगार दब गए हैं। तीनों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

डॉक्टरों ने अस्पताल में भर्ती घायल उदय को मृत घोषित कर दिया है। वहीं, अन्य दो घायलों को इलाज के लिए दिल्ली भेजा गया है। खोड़ा में यह मकान काफी पुराना है। इसका लेंटर झड़ रहा था। मकान मालिक इसका पुनर्निर्माण कराने के लिए तुड़वा रहा था। रविवार दोपहर दो बजे कामगार हीरालाल, उदय और राजकुमार मलबे के ऊपर दीवार गिर गई। तीनों को कामगारों को अस्पताल ले जाया गया। उदय की उपचार के दौरान मौत हो गई।

दिल्ली जीटीबी में भर्ती हीरालाल और राजकुमार की स्थिति नाजुक बनी हुई है। यह मकान बिना नक्शे के बना हुआ था। कामगार मकान तोड़ने में सुरक्षा उपकरणों का प्रयोग नहीं कर रहे थे। हादसे के बाद मकान मालिक ने कामगारों की सुध नहीं ली। पुलिस का कहना है कि इस मामले में अभी लिखित में शिकायत नहीं मिली है।

वन विभाग ने मशक्कत के बाद 10 फीट केअजगर को पकड़ा

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

ग्रेटर नोएडा के थाना जारचा क्षेत्र में एक बड़ी घटना होने से बाल बाल बच गई है। दोसा क्षेत्र में गौशाला के पास 10 फीट लंबा एक अजगर निकल आया। अजगर निकलने से आसपास के लोगों में हड़कंप मच गया। घटना की सूचना पुलिस और वन विभाग टीम को दी गई। वन विभाग टीम द्वारा मौके पर जाकर काफी मशक्कत के बाद अजगर को पकड़ लिया गया है।

थाना जारचा क्षेत्र में स्थित गौशाला के पास एक बड़ा अजगर निकल आया। अजगर लगभग 9 से 10 फीट लंबा है। अजगर को देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो गए। अजगर की खबर धीरे-धीरे आस-पास के गांव में फैल गई। जिसे सुनते ही लोगों के ग्रामीण काफी अधिक संख्या में मौके पर आ खड़े हुए। ग्रामीणों द्वारा घटना की सूचना पुलिस और वन विभाग को दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस और वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची गई। वन विभाग की टीम द्वारा काफी मशक्कत के बाद अजगर को पकड़ लिया गया। पिछले 5 महीने में ग्रेटर नोएडा में यह दूसरी बार अजगर को देखा गया है।

सभी के लिए था खतरा

ग्रामीणों ने बताया कि उन्होंने आज गौशाला के पास मोटे और लंबे अजगर को देखा जिसे देखकर वह डर गए। अजगर द्वारा कोई भी बड़ी दुर्घटना की जा सकती थी। आसपास गाय के छोटे-छोटे बच्चे घूमते रहते हैं जिन्हें वह खा सकता था। साथ ही सुबह के समय आसपास के गांवों के छोटे बच्चे और बुजुर्ग टहलने के लिए आते हैं जिनकी जान के लिए अजगर खतरा बना हुआ था।

एमराल्ड कोर्ट सोसाइटी के लोगों को मिली राहत

नोएडा। सेक्टर-93 स्थित सुपरटेक एमराल्ड कोर्ट में ड्राइव वे का काम पूरा होने के बाद रविवार को शुभारंभ कर दिया गया है। आरडब्ल्यूए अध्यक्ष उदयभान सिंह तेवतिया व सुरक्षा प्रमुख ने भूमि पूजन करने के बाद ड्राइव वे की शुरुआत की है।

आरडब्ल्यूए सुरक्षा प्रमुख गौरव मेहरोत्रा ने बताया कि नौ मीटर चौडे ड्राइव वे को 28 अगस्त 2022 को ध्वस्त हुए ट्वीन टावर के कारण सोसायटी से अलग करते हुए तोड़ा गया था। बाद में आरडब्ल्यूए की तरफ से काम को पूरा करा कर इसकी शुरुआत की गई है।

सुपरनोवा बिल्डिंग से कूदकर एक और युवक ने दे दी जान

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा के सेक्टर 94 स्थित सुपरनोवा बिल्डिंग से गिरकर एक युवक की दर्दनाक मौत हो गई। जानकारी मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस के अनुसार, युवक ने बिल्डिंग से कूदकर आत्महत्या की है। मामले की जांच पड़ताल की जा रही है।

देर रात थाना सेक्टर थाना सेक्टर-126 क्षेत्रांतर्गत सेक्टर 94 स्थित सुपरनोवा बिल्डिंग से कूदकर एक 23 वर्षीय युवक अर्जुन अलोसहियस पुत्र अलोसहियस जार्ज आत्महत्या कर ली गयी है। मृतक युवक मूल रुप से केरल के एर्नाकुलम जिले का रहने वाला है।

रेलवे में नौकरी का झांसा देकर छह लाख रुपये ठगे

गाजियाबाद। गणेशपुरी में बुजुर्ग के बेटे की रेलवे में नौकरी लगवाने के बहाने छह लाख ठग लिए। शनिवार सुबह आरोपी के घर रुपये मांगने पहुंचे, जहां आरोपी ने फंदा डालकर आत्महत्या करने की चेतावनी दी। इसका वीडियो वायरल हो गया।

शालीमार गार्डन पुलिस तुरंत हरकत में आई और दोनों को थाने ले आई। पुलिस शिकायत के आधार पर मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच कर रही है। गणेशपुरी निवासी शकील अहमद ने बताया कि 2017 में शहीद नगर निवासी अलाउद्दीन अंसारी को बेटे की रेलवे में नौकरी लगवाने के लिए छह लाख रुपये दिए थे।

कार खड़ी करने के विवाद में गर्भवती महिला को मारा डंडा

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

इंदिरापुरम कोतवाली क्षेत्र की एक कालोनी में कार खड़ी करने को लेकर पड़ोसी से विवाद हो गया। आरोप है कि पड़ोसी युवक आठ लोगों के साथ महिला के घर में घुस गया। गर्भवती महिला के पेट में डंडा मार दिया और छेड़छाड़ की। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर तलाश शुरू कर दी है।

रिपोर्ट में महिला का आरोप है कि छोटी बहन पति के साथ उनके घर के सामने कार खड़ी कर रही थी। इस दौरान पड़ोसी युवक ने कार खड़ी करने को लेकर विवाद किया। मामला बढ़ने पर वह बहन और उसके पति को घर में ले आईं। आरोपित अपने साथ सात-आठ लोगों के साथ घर अंदर घुसकर उनकी बहन पर हमला कर दिया। उसके पेट में डंडा मार दिया। बीच बचाव करने आए अन्य लोगों से भी मारपीट की और डंडे से पीटा। आरोप है कि उनके और उनकी बहन के कपड़े खींचे। बंदूक दिखाकर जान से मारने की धमकी देकर छेड़छाड़ की।

युवक को रस्सी से बांधकर बेरहमी से पिटाई

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

● इस्कॉन मंदिर के पुजारी और कर्मचारियों पर मारपीट का आरोप

नोएडा सेक्टर 24 थाना क्षेत्र में स्थित इस्कॉन मंदिर के पुजारियों तथा कर्मचारियों द्वारा एक युवक को रस्सी से बांधकर बेरहमी से पीटने का मामला प्रकाश में आया है। पीड़ित जितेंद्र झा पुत्र कृतनाथ झा निवासी गिझौड़, सेक्टर-53 ने आरोप लगाते हुए बताया कि मंदिर के कर्मचारियों तथा पुजारी ने उस पर झूठा आरोप लगाते हुए उसे रस्सी से बांधकर बुरी तरीके से पीटा।

जानकारी मिलने पर उसकी मां उसे बचाने पहुंची तो लोगों ने उसकी मां को भी पीटा जिससे उसका हाथ टूट गया। मारपीट के दौरान पुजारियों ने उसकी सोने की चेन, आईफोन, घड़ी, एप्पल का इयरफोन तथा अन्य सामान ले लिया। बाद में सोने की चेन वापस कर दी। उसने बताया कि उन्होंने इसकी शिकायत 1 जून को पुलिस से भी की। लेकिन पुलिस ने ना तो एफआईआर दर्ज की और ना ही आरोपियों के खिलाफ कोई कार्रवाई की। पीड़ित जितेंद्र झा ने बताया कि मंदिर के पुजारी बंशीधर, राधा भाव, रजिता बल्लभ, अरविंद, निताई तथा मैनेजर गोविंद ने उसे बुरी तरीके से पीटा।

पीड़ित परिजनों का कहना है कि यदि वह भक्तों को परेशान करता था तथा उनके साथ में बदतमीजी करता था तो मंदिर प्रशासन ने इसकी शिकायत पुलिस से क्यों नहीं की। उसे रस्सी से बांधकर बेरहमी से पीटा जाना कहां का न्याय है। उन्होंने आरोप लगाया कि मंदिर के कर्मचारियों ने उसे बुरी तरीके से पीटा है और इस मामले में पुलिस लीपापोती कर रही है। तथा आरोपियों के खिलाफ कोई शिकायत नहीं कर रही है।

बस पर पत्थर मार कर लूट का प्रयास नाकाम

ग्रेटर नोएडा। यमुना एक्सप्रेस वे पर कुछ लोगों द्वारा चलती रोडवेज बस पर पत्थर मार कर शीशा तोड़ा। सवारियों से लूटपाट की कोशिश नाकाम हो गई।

जानकारी के मुताबिक इटावा से दिल्ली जाने वाली एक रोडवेज बस जेवर से दिल्ली जा रही थी। जब यह बस थाना रबुपुरा क्षेत्र में पहुंची तो कुछ लोगों द्वारा पत्थर मारने लगे, जिससे बस का शीशा टूटा गया। लेकिन ड्राइवर ने हिम्मत दिखाते हुए बस को नहीं रोका। ड्राइवर द्वारा बस को सीधा नोएडा डिपो में आकर रोका गया। बस का शीशा टूटने से एक्सीडेंट भी हो सकता था।

मेट्रो में टोकन नहीं, क्यूआर कोड वाली पेपर टिकट से करें एंट्री

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा और ग्रेटर नोएडा के बीच चलने वाली एक्वा लाइन में मेट्रो यात्रियों की संख्या की बढ़ोतरी को देखते हुए बड़े फैसले लिए जा रहे हैं। बेहतर सुविधा से लेकर कनेक्टिविटी को लेकर नोएडा मेट्रो काम कर रही है। नोएडा मेट्रो के सभी स्टेशनों पर अगले महीने से क्यूआर कोड आधारित टिकटिंग सिस्टम को लागू कर दिया जाएगा। इसमें डायनेमिक क्यूआर कोड से भी टिकट भुगतान की सुविधा मिलेगी। इसके सभी स्टेशनों पर टिकट काउंटर पर ये कोड लगाया जाएगा। मेट्रो की ओर से जारी टिकट पर एक क्यूआर कोड छपा होगा, जिसके जरिए आप मेट्रो गेट से एंट्री कर सकते हैं। यात्री अब टोकन के बदले पेपर टिकट के जरिए मेट्रो में सफर कर पाएंगे। नोएडा मेट्रो अधिकारियों ने बताया कि मेट्रो स्टेशन आने वाले लोग काउंटर पर पहुंचकर क्यूआर कोड को अपने मोबाइल फोन से स्कैन कर गंतव्य तक टिकट राशि का भुगतान कर सकेंगे। इसके लिए लगी स्क्रीन का रंग हर बार बदलता रहेगा। भुगतान होते ही कर्मचारी के सामने लगी स्क्रीन पर भुगतान होने की जानकारी आ जाएगी। इसके बाद काउंटर से पेपर टिकट ले सकेंगे। ऐसे में पर्स में नगद पैसे की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। यानी अब मेट्रों में स्मार्ट कार्ड, नेशनल कामन मोबिलिटी कार्ड (एनसीएमसी), स्मार्ट फोन के अलावा क्यूआर कोड भुगतान की सुविधा होगी।

स्मार्ट कार्ड का भी प्रयोग

इस लाइन पर स्मार्ट कार्ड के जरिए भी लोग सफर कर सकते हैं। कार्ड को लेने की फीस 100 रुपये है। इसके बाद इसको रिचार्ज कराना पड़ता है। इसमें 50 रुपये बैलेंस रखना अनिवार्य है, पहले इसकी सीमा 10 रुपये थी। कार्ड से प्रयोग करने पर यात्रा के किराये पर 10 की छूट मिलती है। इससे टिकट काउंटर पर लगने वाली लंबी लाइन में कमी आएगी। इस क्यूआरकोड को इस लाइन के सभी 21 स्टेशनों के टिकट काउंटर पर लगाया जाएगा।

मोबाइल ऐप की सुविधा

आपको बता दें, एनएमआरसी पहले से ही मोबाइल ऐप की सुविधा भी दे रहा है। इसमें ऐप में क्यूआर कोड है जिसका इस्तेमाल प्रवेश-निकासी में कर सकते हैं। लोग घर से मेट्रो स्टेशन का टिकट घर बैठे बुक कर सकते हैं। ऑनलाइन बुकिंग के बाद 30 मिनट के अंदर संबंधित स्टेशन पर पहुंचना होगा। वहां पर स्कैन पर फोन के क्यूआर कोड को दिखना होगा, जिसे दरवाजा खुलेगा।

भैंस के आगे बीन बजाकर जताया विरोध

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

किसानों को पागल समझने की गलती ना करें प्राधिकरण

भारतीय किसान यूनियन अजगर के नेतृत्व में यमुना विकास प्राधिकरण क्षेत्र के किसानों ने रविवार को भैंस के आगे बीन बजाकर अपना विरोध प्रदर्शन? किया। यह किसान सलारपुर अंडरपास पर पिछले 26 दिनों से अनिश्चितकालीन धरने पर बैठे हुए हैं। भारतीय किसान यूनियन अजगर के राष्ट्रीय अध्यक्ष हरवीर नागर ने बताया कि पीड़ित किसान 15 मई से लगातार अनिश्चितकालीन धरने पर बैठे हुए हैं। लेकिन यमुना प्राधिकरण के अधिकारियों के कानों पर जूं तक नहीं रेंग रही है। जिसमें भैंस के आगे बीन बजाना कहावत बिल्कुल सटीक बैठती है। इसलिए आज किसानों ने भैंस के आगे बीन बजाकर यमुना प्राधिकरण के अधिकारियों के कान खोलने का काम किया।

कोर्ट के आदेशों की अवहेलना : उन्होंने बताया कि पिछले 9 सालों से आश्वासन से परेशान होकर किसान मजबूर होकर अनिश्चितकालीन धरने पर बैठे हैं। लेकिन अधिकारी एयर कंडीशनर कमरों में बैठकर केवल किसानों को बरगलाने का काम कर रहे हैं। यमुना प्राधिकरण द्वारा माननीय सुप्रीम कोर्ट के आदेश की अवहेलना की जा रही है। जिस आदेश में कोर्ट ने किसानों को 64 प्रतिशत अतिरिक्त प्रतिकर देने का निर्णय किया था, लेकिन सरकार की गैरजिम्मेदारी और यमुना प्राधिकरण के भ्रष्ट और तानाशाह अधिकारियों के मनमाने रवैया के चलते अभी तक मुआवजा वितरित नहीं किया गया है। इस मौके पर अट्टा गुजरान, रीलख,सिलारपुर, अट्टा फतेहपुर, नवादा, महमदपुर, गुनपुरा, औरंगपुर, चचूला आदि के लोग थे।

किसानों ने कहा कि बहुत ही शांतिपूर्ण और संवैधानिक तरीके से किसान अपनी मांगों को लेकर धरने पर बैठे हैं। लेकिन यमुना प्राधिकरण किसानों को पागल समझने की गलती कर रहा है। अगर किसान धरने पर बैठा है तो इसका मतलब यह नहीं है कि किसान अपने घर से फ्री है या उसके घर कोई काम नहीं है। प्राधिकरण के कान खोलने के लिए आने वाले समय में अन्य प्रकार से रणनीति बनाकर अधिकारियों के कान खोलने के लिए किसान बाध्य होगा।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक नरेन्द्र कुमार द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ऐ, बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष: 011-40110455 से प्रकाशित तथा बीएफएल इन्फोटेक लिमिटेड सी-9 सेक्टर-3, नोएडा-201301 (उ.प्र.) से मुद्रित। कार्यकारी संपादक: नवीन उपाध्याय, स्थानीय सम्पादक: प्रदीप तिवारी। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। पत्रवार्ता ऑफिस- एफ-31, सेक्टर 6, नोएडा, गौतमबुद्धनगर-201301, उत्तर प्रदेश, दूरभाष- 120-4879900।

पायनियर
नई दिल्ली, सोमवार, 12 जून, 2023

तपती गर्मी के बीच रामलीला मैदान में जमे रहे लोग

तापमान 40 डिग्री सेल्सियस तक चढ़ने के बावजूद सुबह से ही सभा स्थल पर पहुंचने के लिए लगा रहा तांता

● आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता रैली में आने वाले लोगों को दे रहे थे बोतल बंद पानी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

केंद्र सरकार के अध्यादेश के खिलाफ तपती गर्मी में भी हजारों की संख्या में लोग आम आदमी पार्टी की महारैली अपने नेता को सुनने के लिए घंटों जमे रहे। दिल्ली का तापमान 40 डिग्री पहुंचने के बावजूद रविवार सुबह से ही महिलाएं और पुरुषों के साथ-साथ बच्चे और बुजुर्ग भी रामलीला मैदान पहुंचे। कुछ लोग गर्मी से बचने के लिए सड़कों किनारे पेड़ों के नीचे खड़े रहे। लू के थपेड़ों से बचने के कई महिलाओं और पुरूषों ने अपने सिर पर दुपट्टा, स्कार्फ और गमछा बांधा हुआ था और चेहरे पर पानी के छिंटे मार रहे थे।

रामलीला मैदान के भीतर कुछ लोग कूलर और पंखों के पास खड़े थे, वहीं कुछ लोग कागज के पंखे बनाकर हवा करते नजर आए। वहीं आप के कार्यकर्ता सड़क के किनारे लाइन से खड़े थे और रैली में आने वालों को पानी की बोतलें और पाउच दे रहे थे। आम आदमी पार्टी की टोपी लगाए और हाथों में तिरंगा व आप का झंडा लहराते समर्थकों ने रैली में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। वहीं, बड़ी संख्या में लोग सेल्फी भी लेते नजर आए। रामलीला मैदान और उसके आसपास की सड़कें केजरीवाल जिंदाबाद और केंद्र के अध्यादेश व भाजपा विरोधी नारों से गूंज रही थी। रैली में आए लोगों ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की तारीफ करते हुए कहा कि वह शहर के गरीबों की जिंदगी बेहतर बनाने को प्रतिबद्ध हैं। वहीं कई लोगों ने आप सरकार के कार्यकाल में स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में हुए कामकाज को लेकर प्रसन्नता जताई।

आप के 68 वर्षीय समर्थक मुख्तार बेग ने कहा कि पहले उनके पोते-पोतियां निजी स्कूल में पढ़ते थे। लेकिन पिछले साल उनका दाखिला करोल बाग के सरकारी स्कूल में करवा दिया। उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि सरकारी स्कूलों में इतनी अच्छी शिक्षा मिल सकती है। पूर्वी दिल्ली से आई 38 वर्षीय शिक्षिका राधिका शर्मा ने शिक्षा के क्षेत्र में आप सरकार के कामकाज की सराहना की। उन्होंने कहा, भाजपा गरीबों का भला नहीं चाहती। उन्होंने आप सरकार द्वारा किए जा रहे कामकाज को रोकने के लक्ष्य से फर्जी आरोप लगाकर पूर्व शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया को गिरफ्तार कर लिया। जनता मूर्ख नहीं है उसे सच्चाई पता है।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उनकी सरकार ने दिल्ली में शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव किए हैं। ऐसे प्रयासों को बाधित करने की कोशिशें चिंता की बात है। उद्यमी कुमार ने कहा, मोहल्ला क्लीनिक और सरकारी अस्पताल आम जनता के लिए वरदान साबित हुए हैं। वे जो बेहतरीन स्वास्थ्य सुविधा दे रहे हैं, उसका वह खुद लाभ लिया है। यह शर्म की बात है कि उपराज्यपाल और भारतीय जनता पार्टी इस विकास को बाधित करना चाहते हैं।

रामलीला मैदान में रविवार को आम आदमी पार्टी की महारैली में भीषण गर्मी के बावजूद नेताओं को सुनने के लिए हजारों की संख्या में उमड़े लोग। फोटो : रंजन डिमरी

महारैली में गर्मी से बेहाल समर्थक पानी पीकर अपनी प्यास बुझाते हुए।

अध्यादेश वापस लो नारे से गूंजा रामलीला मैदान

नई दिल्ली। रामलीला मैदान में समर्थक सुबह 9 बजे से पहुंचना शुरू हो गए थे। दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश समेत अन्य राज्यों से बड़ी संख्या में लोग महारैली में पहुंचे और पूरा मैदान खचाखच भर गया। अध्यादेश के जरिए संवैधानिक अधिकार छीन जाने पर अपनी नाराजगी व्यक्त करने के लिए अलग-अलग टुकड़ियों में लोग रामलीला मैदान पहुंचे और मोदी तेरी तानाशाही, नहीं चलेगी, अध्यादेश वापस लो, सुप्रीम कोर्ट का आदेश लागू करो, अरविंद केजरीवाल जिंदाबाद समेत अनेकों नारों से मैदान गूंज रहा था।

केजरीवाल ने स्वीकार किया कि उनके पास भ्रष्टाचारियों की फौज है : सचदेवा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● 12 साल पहले इंडिया अगेंस्ट करप्शन की बातें करते थे आज अपने ही भ्रष्टाचार को छिपाने के लिए चिल्ला रहे : तिवारी

एक तरफ रामलीला मैदान में सीएम अरविंद केजरीवाल अध्यादेश के खिलाफ सीधे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा पर हमला बोल रहे थे तो दूसरी तरफ भाजपा नेताओं ने भी आप के राष्ट्रीय संयोजक के खिलाफ मोर्चा खोल दिया।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि केजरीवाल अपने भ्रष्टाचार और झूठ को छुपाने के लिए कुछ भी बोल रहे हैं। आज उन्होंने माना कि उनके पास 100 मनीष सिसोदिया और 100 सत्येंद्र जैन है। यह अपने आप में बताता है कि केजरीवाल ने भ्रष्टाचारियों की पूरी फौज खड़ी रखी है, क्योंकि एक सत्येन्द्र जैन ने दिल्ली को लूटा है और मनीष सिसोदिया ने युवा पीढ़ी को नशे में धकेलने के साथ करोड़ो रुपए का शराब घोटाला किया।

वीरेन्द्र सचदेवा, सांसद मनोज तिवारी एवं रमेश बिधूड़ी ने रविवार को संवाददाता सम्मेलन में कहा कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल द्वारा रामलीला मैदान में अपने भ्रष्टाचार के समर्थन में बुलाई गई रैली को संबोधित करते हुए जिस निचले स्तर की भाषा का प्रयोग किया गया है। उसकी वे निंदा करते हैं। केजरीवाल पर निशाना साधते हुए भाजपा नेताओं ने कहा कि आप संयोजक ने अपने मंत्रियों, विधायकों और निगम पार्षदों को सिर्फ इतना ही प्रशिक्षण दिया है कि कैसे दिल्ली को लूटना है। उन्होंने दावा किया कि रामलीला मैदान में भीड़ा इक्ट्ठा नहीं हुई और पूरी रैली असफल हो गई जिसका गुस्सा केजरीवाल के चेहरे पर साफ दिख रहा था। केजरीवाल ने जिन बच्चों की कसम राजनीति में नहीं आने के लिए खाई थी उन्हीं बच्चों के सिर पर हाथ रखकर बतायें कि 8 लाख का पर्दा, 6 करोड़ की वियतनामी टाइल्स, 15-15 बाथरूम में लगने वाले महंगे टायलेट पॉट कैसे लगे है।

राजधानी में रविवार को संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते भाजपा प्रदेश वीरेन्द्र सचदेवा, सांसद मनोज तिवारी और रमेश बिधूड़ी।

आम आदमी पार्टी की महारैली के दौरान मंच पर मौजूद मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, पंजाब के सीएम भगवंत मान के साथ वरिष्ठ नेता कपिल सिब्बल व अन्य।

केजरीवाल ने फिर से सुनाई चौथी पास राजा की कहानी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने एक फिर चौथी पास राजा की कहानी सुनाकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर जोरदार हमला बोला।

उन्होंने कहा कि सभी ने बचपन में बहुत से राजा-रानियों की कहानियां सुनी होंगी। इस कहानी में राजा तो है लेकिन रानी नहीं है। यह एक महान देश की कहानी है, जो कई हजार साल पुराना देश है। उस देश में एक गांव में एक बहुत गरीब परिवार में एक बच्चे का जन्म हुआ। बच्चे को देख ज्योतिषी ने उसकी मां से कहा कि उनका लड़का बड़ा होकर बहुत बड़ा सम्राट बनेगा। मां को ज्योतिषी की बातों पर यकीन नहीं हुआ। वो सोचने लगी कि वह तो बहुत गरीब है, बेटा कैसे सम्राट बनेगा। लड़का बड़ा होने लगा। वह गांव के एक स्कूल में पढ़ने जाता था लेकिन उसका मन पढ़ाई में नहीं लगता था। उसने चौथी कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ दिया और गांव के पास ही एक स्टेशन पर चाय बेचने लगा। उसे भाषण देने का शौक था। वह किसी भी मुद्दे पर भाषण देने लगता था।

भाजपा ने शुरू किया सेल्फी विद भ्रष्टाचार का राजमहल अभियान

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● यह अभियान केजरीवाल की असलियत को उजागर करने में कारगर साबित होने वाला है : सचदेवा

प्रदेश भाजपा ने केजरीवाल सरकार के खिलाफ एक सियासी अभियान शुरू किया है। जिसमें पार्टी के नेताओं ने सीएम केजरीवाल के सरकारी आवास के एक मॉडल को कनॉट प्लेस पर रखा।

भाजपा नेताओं ने इस अभियान में केजरीवाल के प्रतिकात्मक शीशमहल के साथ सेल्फी लेकर उनके द्वारा किए भ्रष्टाचार का उजागार किया। इस मॉडल को हर दिन अलग-अलग जगहों पर रखा जाएगा।

इस मौके पर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा कि सेल्फी विद भ्रष्टाचार का राजमहल का यह अभियान केजरीवाल की असलियत को पूरी दिल्ली के सामने उजागर करने में कारगर साबित होने वाला है। केजरीवाल ने जनता की गाढ़ी कमाई का 52 करोड़ रुपये अपने शीशमहल में खर्च कर भ्रष्टाचार को अंजाम दिया है और उसको हर घर तक सेल्फी विद भ्रष्टाचार का शीश महल अभियान के माध्यम से पहुंचाने का काम किया जाएगा।

दिल्ली भाजपा द्वारा कनॉट प्लेस पर रखा गया मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के सरकारी आवास का मॉडल।

सरकार बृजभूषण को बचाने की कोशिश में लगी : विनेश

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● जिस दिन बृजभूषण की गिरफ्तारी होगी पहलवान अपना विरोध समाप्त कर देंगे

बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे पहलवानों ने दावा किया है कि सरकार भारतीय कुश्ती महासंघ के निवर्तमान अध्यक्ष को बचाने की कोशिश कर रही है।

खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने सात जून को भरोसा दिया था कि बृजभूषण के खिलाफ 15 जून तक आरोपपत्र दायर कर दिया जाएगा, जिसके बाद पहलवानों ने अपना आंदोलन रोक दिया था। केंद्र ने पहलवानों की कई मांगों को स्वीकार कर लिया है, जिसमें बृजभूषण के परिवार के किसी भी सदस्य या सहयोगी को भविष्य में डब्ल्यूएफआई चुनाव लड़ने की अनुमति नहीं दी जाएगी। साक्षी मलिक, बजरंग पूनिया और विनेश फोगाट के नेतृत्व में पहलवानों ने कहा है कि जब तक सिंह को सलाखों के पीछे नहीं पहुंचाया जाता, वे अपना विरोध प्रदर्शन समाप्त नहीं करेंगे।

किशोरी के साथ तिपहिया वाहन में बलात्कार

शर्मनाक

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● पीड़िता की सहेली का जानने वाला है आरोपी ऑटो चालक, वाहन को जब्त किया गया

उत्तरी दिल्ली के बुराड़ी इलाके में एक सुनसान जगह पर एक मालवाहक तिपहिया वाहन के अंदर 13 वर्षीय एक किशोरी के साथ कथित रूप से बलात्कार किए जाने का मामला सामने आया है। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी।

पुलिस ने बताया कि आरोपी ने स्कूल के स्तर पर ही पढ़ाई छोड़ दी थी और वह तिपहिया वाहन (ऑटो) चलाता है। उसने बताया कि आरोपी को गिरफ्तार कर उसकी आयु सत्यापित जा रही है।

पुलिस के अनुसार, बलात्कार की यह घटना आठ जून को अपराह्न करीब साढ़े सात बजे हुई थी। उसने बताया कि पीड़िता अपनी सहेली के साथ पैदल घर जा रही थी, जिस दौरान वे दोनों आरोपी के वाहन में सवार हुई थीं। पुलिस ने बताया कि पीड़िता की सहेली आरोपी से परिचित थी।

उसने बताया कि आरोपी, पीड़िता की सहेली को उसके घर छोड़ने के बाद उसे शक्ति एन्क्लेव के अजीत विहार में एक सुनसान जगह पर ले गया और वहां वाहन के अंदर उसके साथ बलात्कार किया।

पुलिस उपायुक्त (उत्तर) सागर सिंह कलसी ने बताया कि किशोरी के बयान के आधार पर भारतीय दंड संहिता की धारा 376 (बलात्कार) और 506 (आपराधिक धमकी), तथा यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (पॉक्सो) कानून के तहत आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है।

उन्होंने बताया कि किशोरी की काउंसलिंग की जा रही है और उसकी मेडिकल जांच भी की गई है। पुलिस ने बताया कि वाहन को फॉरेंसिक जांच के लिए जब्त कर लिया गया है। मामले की जांच जारी है।

टक्कर बाज गैंग के तीन बदमाश गिरफ्तार

नई दिल्ली। पैदल चलने के दौरान अचानक कोई टक्कर मारकर आप से बहस करने लगे तो सावधान हो रहे। ऐसे लोग सामना चुराने वाले या लूटपाट करने वाले हो सकते हैं।

बाहरी जिला पुलिस के स्पेशल स्टाफ ने ऐसे ही एक गैंग के तीन बदमाशों को धर दबोचा है। जिन्होंने अलग-अलग इलाकों में लगभग दो दर्जन ऐसे ही वारदात को अंजाम दिया है। इन लोगों के पास से 22 मोबाइल, दो तमंचा, कारतूस, चाकू के एक ऑटो बरामद किया है, जिसका इस्तेमाल ये लोग लूट और चोरी की वारदात को अंजाम देने के लिए करते थे। इनमें से एक बदमाश दिल्ली पुलिस का घोषित बादमाश है जिसकी 2 साल से तलाश थी।

गांधी के भजनों पर दिल्ली की वल्लभी के नृत्य ने बांधा समां

दक्षिण अफ्रीका के पीटरमारित्जबर्ग में गांधी-किंग-मंडेला सम्मेलन के उद्घाटन पर दी भरतनाट्यम प्रस्तुति

एजेंसी। जोहानिसबर्ग/नई दिल्ली

दिल्ली की प्रसिद्ध नृत्यांगना वल्लभी चेल्लम अन्नामलाई ने दक्षिण अफ्रीका के पीटरमारित्ज़बर्ग में में इस सप्ताह आयोजित गांधी-किंग-मंडेला अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 2023 के उद्घाटन की संध्या पर अपनी अनूठी भरतनाट्यम प्रस्तुति से वहां मौजूद 400 से अधिक दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय के निदेशक अलागन अन्नामलाई की बेटी वल्लभी ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के पसंदीदा भजन वैष्णव जन तो... पर भरतनाट्यम प्रस्तुति दी।

वल्लभी ने कहा कि उनके लिए इस भजन पर नृत्य तैयार करना मुश्किल नहीं था, क्योंकि उनके माता-पिता गांधीवादी विचारधारा के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध से हैं और वह उनकी विचारधाराओं के साथ पली-बढ़ी हैं। उन्होंने कहा कि गांधीवादी

● राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय के निदेशक अलागन अन्नामलाई की बेटी हैं नृत्यांगना

विचारधारा बहुत कम समय में मेरे भीतर घर कर गई थी। मैं पिछले दो दशक से प्रशिक्षित भरतनाट्यम नृत्यांगना हूं और बीते 15 साल से बड़े स्तर पर प्रस्तुतियां दे रही हूं।

वल्लभी ने कहा कि मुझे जब यहां प्रस्तुति देने का निमंत्रण मिला, तब मैंने सोचा कि यदि मैं दोनों कला प्रारूपों को मिलाकर पेश करूं, तो यह बहुत प्रासंगिक रहेगा। इसलिए मैंने इस गीत पर प्रस्तुति तैयार की।

युवा वकील मोहनदास गांधी को 1893 में पीटरमारित्जबर्ग स्टेशन पर एक ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया था, क्योंकि वह केवल श्वेत यात्रियों के लिए आरक्षित डिब्बे में बैठे थे।

इस घटना के 130 साल पूरे होने पर गांधी-किंग-मंडेला अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। ट्रेन से बाहर फेंके जाने की घटना के बाद गांधी ने सत्याग्रह शुरू किया था। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका एवं भारत में अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के खिलाफ ऐतिहासिक संघर्ष कर भारत को आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा किया और अंततः महात्मा का दर्जा हासिल किया।

मनोरोगी से बलात्कार के दोषी को 15 साल सश्रम कारावास

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● आरोपी ने घटना को रिकॉर्ड करने के साथ ही वीडियो क्लिप को दोस्तों के साथ किया था साझा

दिल्ली की एक अदालत ने 2018 में एक मनोरोगी लड़की से बलात्कार करने, घटना को रिकॉर्ड करने और अन्य लोगों के साथ वीडियो क्लिप साझा करने के दोषी व्यक्ति को 15 साल सश्रम कारावास की सजा सुनाई।

अदालत ने बलात्कार पीड़िता को 10.5 लाख रुपये मुआवजा देने का आदेश देते हुए कहा कि अपराध पूर्वनियोजित था और इसके पीछे सिर्फ वासना मंशा थी।

अनिल कुमार (35) को यौन अपराध से बच्चों का संरक्षण (पॉक्सो) अधिनियम की धारा छह और सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) अधिनियम की धारा 67 बी के अलावा भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की संबंधित धारा के तहत बलात्कार और आपराधिक धमकी के जुर्म में दोषी ठहराया गया।

पिछले महीने फैसला सुनाते हुए अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश सुनील कुमार ने कहा, रिकॉर्ड से ऐसा प्रतीत होता है कि दोषी ने महज अपनी वासना की तुष्टि के लिए यह कृत्य किया। यह घटना पूर्व नियोजित थी।

मंडियों में एमएसपी पर खरीदारी सुनिश्चित की जाए : कांग्रेस

नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता डा. नरेश कुमार ने मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल और उपराज्यपाल को ज्ञापन देकर मांग की है कि नरेला और नजफगढ़ में एमएसपी पर 13 अनाजों की खरीददारी सुनिश्चित की जाए ताकि किसानों को एमएसपी का फायदा मिल सके।

नरेश कुमार ने एक आरटीआई के हवाले से बताया कि केंद्र सरकार 13 अनाजों पर एमएसपी निर्धारित की हुई है, लेकिन दिल्ली में सिर्फ गेहूं को एफसीआई द्वारा एमएसपी खरीददारी की जाती है जबकि इस साल वह भी नहीं हुई।

कांग्रेस प्रवक्ता ने आरोप लगाया कि केजरीवाल दूसरे प्रदेशों में बड़ी बातें करते हैं कि जबकि दिल्ली में सच्चाई के बिल्कुल उलट है।

निरंकारी के इंग्लिश मीडियम संत समागम में दिया प्रेम का संदेश

इंग्लिश मीडियम संत समागम में भजन प्रस्तुत करते श्रद्धालु।

आध्यात्मिकता से कॉरपोरेट लाइफ में भी आता है सुकून

प्रवीन शर्मा। गुरुग्राम

आध्यात्मिकता के आने से कॉरपोरेट लाइफ में भी सुकून आ जाता है। प्रतिस्पर्धा से भरी कॉरपोरेट लाइफ में प्रभु भक्ति से जुड़ाव सहजता प्रदान करता है और एक दूसरे के लिए सहयोग की भावना उत्पन्न करता है। ये उद्गार संत निरंकारी मंडल दिल्ली से आए संत तरनजीत कुकल ने गुरुग्राम के सेक्टर-31 स्थित संत निरंकारी सत्संग भवन पर आयोजित इंग्लिश मीडियम संत समागम को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि हर एक मन में दूसरे से प्रतियोगिता करने की भावना होती है। परिस्थिति के अनुकूल ही हम जीवन जीते हैं, मगर इसमें अपनी मनो स्थिति भी खराब कर लेते हैं। अपनी अवस्था को ठीक करने के लिए हम दवाइयों का भी सहारा लेते हैं। दवाइयां कुछ समय मदद करती हैं। मगर वास्तविकता यही रहती है कि हमारी परिस्थिति वही रहती हैं। यदि हम परमात्मा से जुड़ जाते हैं तो हमारी मनो स्थिति में वह परिवर्तन आता है कि उस स्थिति को स्वीकार कर सकते हैं। उस परिस्थिति में भी फिर हमें सुकून मिलता है। परमात्मा से जुड़ने के बाद पता लग जाता है की करने, कराने वाला केवल एक परमात्मा ही है। हम तो अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। समाज में रहते हैं तो जिम्मेदारियों का निर्वहन करना है और अपने दायित्व निभाते हुए जीवन जीना है। उन्होंने फरमाया कि आज सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के आशीर्वाद से ब्रह्मज्ञान मिल रहा है। परमात्मा की अनुभूति हो रही है। इसके साथ जीवन का हर पल प्रेम और आनंद में गुजर जाता है। इंग्लिश मीडियम संत समागम में गुरुग्राम जिले के युवा संतों ने भाग लिया। अनिल सिंह ने मुंबई के राकेश बसोर ने अपने न्यूयॉर्क अमेरिका के व्यक्तिगत अनुभवों को साझा किया। कवि आशीष भूटानी, नरेता आहूजा ने कॉरपोरेट कल्चर को कविता में पिरोया। संत समागम में सतगुरु के दिव्य और सुनहरे वचनों को भी प्रोजेक्टर पर प्रदर्शित किया गया।

गुरुग्राम भाजपा चिकित्सा प्रकोष्ठ ने लगाया रक्तदान शिविर

रक्तदान शिविर में रक्तदाताओं को सम्मानित करते सीएमओ डा. वीरेंद्र यादव।

गुरुग्राम। विश्व रक्तदान दिवस के उपलक्ष्य में चिकित्सा प्रकोष्ठ भाजपा गुरुग्राम की टीम ने ओमप्रकाश धनखड़ के नेतृत्व में गुरु कमल भाजपा कार्यालय में मेगा कैंप का आयोजन किया है। सिविल सर्जन डॉ. वीरेंद्र यादव भी उपस्थित रहे।

जिला अध्यक्ष भाजपा गार्गी कक्कड़ के दिशा-निर्देश पर गुरुग्राम की पूरी भाजपा टीम ने रक्तदान में उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविर में 200 यूनिट से अधिक रक्त एकत्रित कर सिविल अस्पताल व रोटरी ब्लड बैंक को दिया गया। भाजपा के विभिन्न मोर्चा और प्रकोष्ठ दल नियमित रूप से इस प्रकार की सामाजिक गति विधियों में निरंतर कार्य कर रहे हैं। डा. हनीश बजाज जिला संयुक्त चिकित्सा प्रकोष्ठ भाजपा और उनकी टीम ने इस तरह की सामाजिक गतिविधि करने का सराहनीय काम किया। कमला अस्पताल, आयुष्मान एंबुलेंस सेवा और मायरा फाउंडेशन ने इस कार्यक्रम में अपना सहयोग दिया। चिकित्सा प्रकोष्ठ टीम से डॉ. हनीश बजाज, डॉ. विजय कपूर, डॉ. एमएस गर्ग, डॉ. ज्योति यादव, डॉ. विनीता यादव, डॉ. हरिओम वशिष्ठ, डॉ. योगेश तनेजा, डॉ. सर्वोत्तम चौहान, डॉ. ईरा शर्मा, डॉ. सुरेश पुण्डीर, डॉ. त्रिवेंद्र सिंह चौहान प्रदेश कार्यसमिति सदस्य, संदीप, धीरेंद्र शर्मा, शिवम, दीपक आदि मौजूद रहे।

छात्र संघ चुनाव बहाली के लिए इनसो चलाएगी हस्ताक्षर अभियान

इनसो ने की डीयू और आरयू में छात्र संघ चुनाव लड़ने की घोषणा

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

हरियाणा में प्रत्यक्ष रूप से छात्र संघ चुनाव करवाने को लेकर जननायक जनता पार्टी के प्रधान महासचिव एवं पूर्व इनसो राष्ट्रीय अध्यक्ष दिग्विजय सिंह चौटाला जल्द फील्ड में उतरेंगे। वे जुलाई में प्रदेश की सभी स्टेट यूनिवर्सिटी का दौरा करेंगे और इस विषय पर विद्यार्थियों के साथ संवाद करेंगे। इसके साथ-साथ इनसो छात्र संघ चुनाव के समर्थन में हस्ताक्षर अभियान भी चलाएगी।

यह निर्णय गुरुग्राम में आयोजित छात्र संगठन इनसो की राष्ट्रीय एवं प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक में लिए गए। बैठक में विद्यार्थियों से संबंधित विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। साथ ही इनसो ने दिल्ली विश्वविद्यालय और राजस्थान विश्वविद्यालय में छात्र संघ चुनाव मजबूती से लड़ने की घोषणा की। बैठक को संबोधित करते हुए दिग्विजय चौटाला ने कहा कि विद्यार्थियों के हित में प्रदेश में प्रत्यक्ष रूप से छात्र संघ चुनाव बहाल होने चाहिए। उन्होंने कहा कि इस विषय को लेकर इनसो शुरू से निरंतर प्रयासरत है। दिग्विजय चौटाला ने कहा कि इनसो छात्र संघ चुनाव बहाली के मुद्दे को पुरजोर तरीके से उठाएगी और इसके लिए वे अगले माह में सभी विश्वविद्यालयों का दौरा करेंगे और विद्यार्थियों से संवाद करेंगे। दिग्विजय ने कहा कि जरूरी है कि छात्र संघ चुनाव बहाल हों ताकि छात्र राजनीति से आए युवा देश-प्रदेश का नेतृत्व करें। दिग्विजय चौटाला ने इनसो पदाधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि दिल्ली विश्वविद्यालय और राजस्थान विश्वविद्यालय में छात्र संघ चुनाव की तैयारी में जुट जाए। उन्होंने कहा कि यहां इनसो के साथ विद्यार्थियों को जोड़े ताकि इनसो की फतेह हो।

बैठक में इनसो राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रदीप देशवाल ने कहा कि छात्र हित में इनसो सबसे अग्रणी संगठन है। उन्होंने कहा कि इनसो की छात्र संघ चुनाव बहाली की मांग बहुत पुरानी है। उन्होंने कहा कि इनसो की भूख हड़ताल के बाद ही प्रदेश में 21 साल बाद छात्र संघ चुनाव बहाल हुए थे।

गुरुग्राम शहर में तोड़फोड़ के खिलाफ हुई 20 गांवों की पंचायत

पंचायत में हुआ निर्णय, अब कोई भी घर नहीं तोड़ने दिया जाएगा

15 को डीसी कार्यालय पर सांकेतिक धरना देकर राज्यपाल के नाम ज्ञापन देंगे

गुरुग्राम के नाथूपुर में पंचायत में अपनी बात रखते लोग।

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

अवैध बताकर मकानों की तोड़-फोड़ की कार्यवाही के खिलाफ नगर निगम क्षेत्र के अंतर्गत 20 गांवों की पंचायत यहां नाथूपुर में बुलाई गई। ग्रामीणों ने निगम क्षेत्र में अवैध ठहराकर ग्रामीणों के मकान लगभग सभी गांवों में तोड़ने की कार्यवाही नगर निगम कर रहा है। अधिकारी ग्रामवासियों को नोटिस चिपकाकर परेशान कर रहे हैं। इस सब से बचने के लिए सभी गांवों को एक होना पड़ेगा।

पंचायत में निर्णय लिया गया कि अब निगम की इस तोडफ़ोड़ का विरोध होगा और किसी का घर नहीं तोड़ने दिया जाएगा। भोले गुर्जर और योगी सिकंदरपुर ने अपनी परेशानियों को बताने एवं भविष्य में ग्रामवासियों के मकानों को बचाने के लिए इस पंचायत का आयोजन किया। जिसकी अध्यक्षता पूर्व सरपंच नत्थूराम ने की। पंचायत में किसान नेता संतोख सिंह (झाड़सा) ने आगामी 15 जून को डीसी कार्यालय पर सांकेतिक धरना देने व संयुक्त घर-ग्राम बचाओ समिति द्वारा राज्यपाल के नाम ज्ञापन सौंपे जाने की बात कही। पंचायत में आम आदमी पार्टी के नेताओं ने भी शिरकत की। पंचायत में शामिल हुए अनेकों गांव के मौजिज लोगों में अजीत सरपंच दौलताबाद, महासिंह, दुलीचंद, सूबेदार रणबीर, विनोद नंबरदार, योगी यादव, संयोजक महासिंह ठाकरान, मातादीन, कन्ही खैराती नंबरदार, परवीन सिलोखरा, मास्टर महिपाल सिंह, सुदर्शन सैन (कालू), कर्मवीर सरपंच, अमित, विजय यादव शिखोपुर, अजीत सिंह सरपंच, पवन चौधरी, अजितपाल नाथूपुर आदि ने एकमत होकर निर्णय लिया कि भविष्य में किसी भी व्यक्ति का घर तोडने नहीं दिया जाएगा। योगी यादव ने बताया कि आगामी 25 जून को पूरे जिले की एक बड़ी महापंचायत का आयोजन करने की भी तैयारी शुरू कर दी गई है। जिसमें गुरुग्राम व मानेसर नगर निगमों के ग्रामीण शिरकत करेंगे।

गढ़ी में हुआ श्रीभभूता सिद्ध जोतराम महाराज का 5वां विशाल जागरण

शाम से लेकर देर रात तक अटूट भंडारा भी चलता रहा

गांव गढ़ी-हसरू में श्रीभभूता सिद्ध जोतराम महाराज के 5वें विशाल जागरण में पहुंचे श्रद्धालु, सजा भव्य दरबार।

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गढ़ी-हरसरू गांव में शनिवार की शाम को शुरू हुआ अटूट भंडारा व विशाल जागरण में हजारों भक्तों ने शिरकत की। श्रीभभूता सिद्ध जोतराम महाराजजी के 5वें विशाल जागरण व भंडारे में दूरदराज से श्रद्धालु पहुंचे। भंडारे में प्रसाद ग्रहण करने के बाद मां भगवती और जोतराम महाराज जी के भजनों का रसपान किया।

गांव के वाल्मीकि मंदिर पुराना जोहड़ शिव मंदिर प्रांगण की बेहतरीन सजावट की गई थी। तिरंगे गुब्बारों से सजावट करने के साथ फूलों, चुन्नियों से आसमानी सजावट की गई। भव्य दरबार भी यहां सजाया गया, जिसमें मां भगवती, शिवजी, हनुमान जी, गणेश जी व अन्य कई देवी-देवताओं को प्रतिमा के रूप में विराजमान कराया गया। समारोह में तारानगर सेवा समिति के चेयरमैन ज्ञानप्रकाश चौधरी, संजय महरोलिया प्रधान, करतार सिंह फौजी प्रधान, रण सिंह महरोलिया, भगत राजेश शाहजहांपुर, भगत मुकेश हसनपुर ने शिरकत की। श्री गुरू निरंजन नाथ एवं श्री गुरू भभूता सिद्ध जी जोतराम महाराज के बड़े स्वरूप भी यहां पूजा स्थल पर स्थापित किए गए। ज्योति प्रज्जवलित दादा गुरू दूल्हा राम गोदारा, गुरू माता धर्मकौर एवं भगत भारत सारसर की छत्र छाया में हुई। मंदिर प्रांगण से ज्योति प्रचंड करके जागरण पंडाल में लायी गयी। मास्टर महेंद्र भाटी एंड पार्टी गोहाना वाले द्वारा रातभर भजनों का गुणगान किया। हनुमान कौशिक व पप्पू ने जागरण में अपनी नृत्य कला से भक्तों को भी झूमने पर मजबूर कर दिया। मंदिर के संचालक भगत अजय ढीका एवं भगवान दास ने बताया कि इस कार्यक्रम को भव्य बनाने के लिए पिछले कई दिनों से तैयारियां चल रही थी। दूर-दराज से भक्त यहां पहुंचे और महाराज जी का आशीर्वाद लिया। इस विशाल जागरण में मंदिर के कार्यकर्ता मुरारी लाल, पुत्री राम, विकास यादव, संजय प्रजापति, सोनू, मोनू काकरान, संदीप, राहुल, योगेश, प्रदीप, सुमित, गौरव, साहिल, अमित, अजय, रोहित, सौरभ, मिट्ठी, जोनी, दिनेश प्रजापति, रमेश, नवीन, रविंद्र, शरद, राकेश प्रजापति, प्रीतम, कुलदीप, दीपांशु, अक्षय, मुकेश, विशाल, शिवम, ओमप्रकाश, हितेश बागोरिया आदि ने अहम भूमिका निभाई। जीतू सारसर, रोहताश कंडेरा ने प्रचार की कमान संभाली। विशाल जागरण में कलाकारों ने गणेश जी की स्तुति, शिव जी स्तुति के बाद भजन गाने का क्रम शुरू किया।

एलिवेटेड मार्ग के किनारे जमा नाले का पानी दे रहा जानलेवा हादसे को न्योता

नगर परिषद, बीएंडआर और एनएचएआई के अधिकारी नहीं दे रहे ध्यान

सोहना की चुंगी नंबर एक पर एलिवेटेड मार्ग के सर्विस रोड पर जमा नाले का पानी दे रहा जानलेवा हादसों को न्योता।

पायनियर समाचार सेवा। सोहना

गुरुग्राम-सोहना एलिवेटेड मार्ग के सर्विस रोड पर जमा नाले का पानी जानलेवा हादसे को न्योता दे रहा है। सड़क के साथ बना नाला भी जमा पानी के कारण नजर नहीं आ रहा है। जिसमें असंतुलित वाहन गिरने से जानलेवा हादसा घटित हो सकता है। नगर परिषद समेत बीएंडआर और एनएचएआई के अधिकारी व कर्मचारी इस तरफ ध्यान नहीं दे रहे हैं।

शहर की चुंगी नंबर एक के समीप एलिवेटेड मार्ग के साथ बने बरसाती नाला की सफाई न होने से गंदा पानी सड़क के ऊपर जमा हो रहा है। यह पानी सुबह और शाम को अधिक क्षेत्र में फैल जाता है। यह पानी पिछले करीब तीन माह से जमा हो रहा है। इस जमा पानी के निकट से नगर परिषद से लेकर बीएंडआर विभाग और एनएचआई के कर्मचारी व अधिकारी रोजाना आते व जाते हैं। लेकिन जमा पानी को हर कोई नजरअंदाज कर रहा है।

हो सकता है जानलेवा हादसा : स्थानीय नागरिक ईश्वर का कहना है कि सर्विस मार्ग पर जमा पानी के पास से वाहन तेज गति से निकलते हैं। ऐसे में बाइक व स्कूटी सवार तेज गति से जा रहा वाहन से बचाव या उसकी टक्कर से जमा पानी में जाकर गिर सकता है। जिससे उसकी जान भी जा सकती है। इसके अलावा चार पहिया वाहन पिकअप, कार व अन्य गाड़ी भी तेज गति में संतुलन बिगड़ने पर जमा पानी में घुसने से हादसा जानलेवा हो सकता है। राजू का कहना है कि जमा पानी के कारण मच्छरों का आतंक बढ़ता जा रहा है। जिससे हैजा, मलेरिया व डेंगू जैसी जानलेवा बीमारी के क्षेत्र में रहने वाले नागरिक कभी भी शिकार हो सकते हैं।

जीडी गोयनका यूनिवर्सिटी में छात्रों के बीच चले लात घूसे, तीन छात्र घायल

सोहना थाना पुलिस ने पांच नामजद समेत 10 अन्य के खिलाफ मामला दर्ज किया

सोहना। जीडी गोयनका यूनिवर्सिटी की पार्किंग में छात्रों के बीच चले लात घूसों में बीए एलएलबी का छात्र समेत उसके दो दोस्तों को दर्जनभर युवकों ने जमकर धुनाई की। पीड़ित छात्र की शिकायत पर शहर सोहना थाना पुलिस ने पांच नामजद समेत 10 अन्य के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। बसई गुरुग्राम निवासी यतीन सांगवान ने पुलिस को बताया कि वह सोहना में स्थित जीडी गोयनका यूनिवर्सिटी में बीए एलएलबी प्रथम वर्ष का छात्र है।

शुक्रवार को उसका पेपर था। पेपर देने के बाद वह अपने दोस्त गौरव दहिया के साथ पार्क में से होता हुआ पार्किंग में घर जाने के लिए अपनी गाड़ी निकाल रहा था। तभी वहां पर राजीव खटाना व अनमोल अरोड़ा ने आगे अपनी गाड़ी को उनकी गाड़ी के आगे लगा दिया। वे लोग अपनी गाड़ी से नीचे उतरे और उसे मां-बहन की गालियां देने लगे। उसने जब राजीव खटाना व अनमोल अरोड़ा को गालियां देने का कारण पूछा तो उन्होंने मारना पीटना शुरू कर दिया। उन्होंने फोन करके विक्की खटाना, रोहित पंडित, यश मंगला व 8-10 अन्य को बुलाया लिया। जिन्होंने आते ही मारना शुरू कर दिया। उन्हें बचाने के लिए उसका दूसरा दोस्त आसू आया तो आरोपियों ने उसकी भी धुन डाला। सभी आरोपी उन्हें जान से मारने की धमकी देते हुए वहां से चले गए। उन्होंने ने गंभीर हालत में अस्पताल जाकर अपना उपचार कराया। इससे पहले पुलिस को फोन पर हुआ झगड़े की जानकारी दी। सोहना शहर थाना पुलिस ने शनिवार को यतीन सांगवान की शिकायत पर नामजद समेत अन्य आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया।

परिषद के बनाए वाटर हार्वेस्टिंग पिट की पानी सोंखने की क्षमता समाप्त

सोहना के सामान्य बस स्टैंड परिसर में बना हार्वेस्टिंग कचरा से भरा हुआ।

> **हरियाणा** रोडवेज ने नगर परिषद को हार्वेस्टिंग के लिए जमीन दी है। सफाई करने का दायित्व भी परिषद का है।
>
> **रमेश शर्मा**
> **(बस स्टैंड प्रभारी सोहना)**

बरसाती पानी को जमींदोज करने के इरादे से बनाए थे तीन हार्वेस्टिंग पॉइंट

पायनियर समाचार सेवा। सोहना

सामान्य बस स्टैंड परिसर में बनें तीन वाटर हार्वेस्टिंग पिट्स कूड़ा कचरा से लबालब होने के कारण पानी पीने की क्षमता समाप्त हो गई है। नगरपरिषद और हरियाणा रोडवेज विभाग भरे वाटर हार्वेस्टिंग को खाली कराने का नाम नहीं ले रहे है।

नगर परिषद की तरफ से स्थानीय सामान्य बस स्टैंड परिसर में शहर से आने वाले बरसाती पानी को जमींदोज करने इरादे से तीन हार्वेस्टिंग बनाए थे। जिससे शहर में बरसात के दिनों होने वाले बाजार, चौक चौराहे पर जलभराव से छुटकारा मिल सके। लेकिन परिषद प्रशासन इन हार्वेस्टिंग को बनाकर भूल गई है। जिनकी समय पर देखरेख न होने के कारण पानी शौकने की क्षमता समाप्त हो चुकी है। जिसके चलते बस स्टैंड परिसर में होने वाला जलभराव तीन से पांच दिन समाप्त नहीं होता।

जलभराव से यात्रियों को परेशानी

बस स्टैंड परिसर में जलभराव होने से यहां आने व जाने वाले यात्रियों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। बाजार में जाने वाले से लेकर बाजार की तरफ से आने वालों को शहर थाना का चक्कर लगाना पड़ता है। या फिर उन्हें शहर के अन्य रास्तों से चक्कर काटने के लिए मजबूर होना पड़ जाता है।

नगर परिषद और रोडवेज विभाग की अनदेखी से नहीं हो पा हार्वेस्टिंग

नगर परिषद और हरियाणा रोडवेज विभाग वाटर हार्वेस्टिंग की सफाई या उनकी हर वर्ष बरसात होने से पहले सफाई करने पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। दोनों ही विभाग इस जनसमस्या को नजरअंदाज करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं।

गुरुग्राम में दो दिन तक दिखेगी उड़ीसा की कला, संस्कृति और संस्कारों की झलक

17 व 18 जून को मनाया जा रहा है प्रवासी उड़िया रज महोत्सव

नवीन गोयल बनाए गए हैं सेलिब्रेशन कमेटी के चेयरमैन

प्रवासी उड़िया रज महोत्सव को लेकर पत्रकार वार्ता में जानकारी देते नवीन गोयल व कलिंग भारती फाउंडेशन के पदाधिकारी।

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

मिलेनियम सिटी गुरुग्राम में दो दिन तक उड़ीसा की कला, संस्कृति और संस्कारों की झलक नजर आएगी। आगामी 17 व 18 जून को यहां शीतला माता रोड स्थित जवैल गार्डन में आयोजित किए जा रहे प्रवासी उड़िसा रज महोत्सव को ऐतिहासिक बनाने पर जोर दिया जा रहा है। कलिंग भारती फाउंडेशन की ओर से 5वें प्रवासी उड़िया रज महोत्सव की तैयारियां व्यापक पैमाने पर की जा रही हैं।

रविवार को कलिंग भारती फाउंडेशन की ओर से 5वें प्रवासी उड़िया रज महोत्सव को लेकर यहां सेक्टर-15 पार्ट-1 स्थित भगवान जगन्नाथ मंदिर में पत्रकार वार्ता में पर्यावरण संरक्षण विभाग भाजपा हरियाणा प्रमुख नवीन गोयल ने कहा कि गुरुग्राम के विकास में उड़ीसा के लोगों का अहम योगदान है। यहां एक मजदूर से लेकर सीईओ के पदों तक उड़ीसा के लोग हैं। एक लाख से भी अधिक उड़ीसा लोगों की गुरुग्राम में मौजूदगी है, जो कि बहुत बड़ी बात है। नवीन गोयल ने कहा कि उड़ीसा के लोगों के साथ भारतीय जनता पार्टी भी है और कैनविन फाउंडेशन भी है। उन्होंने कहा कि पिछले दिनों गुरुग्राम में भारतीय जनता पार्टी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अभियान एक भारत-श्रेष्ठ भारत के तहत उड़ीसा दिवस समारोह आयोजित किया। उन्होंने गुरुग्राम के लोगों से भी आग्रह किया कि वे इस समारोह में पहुंचे, ताकि हम सब एक-दूसरे की संस्कृति से परिचित हो सकें। कार्यक्रम में ना केवल उड़ीसा की संस्कृति, बल्कि वहां के रहन-सहन, खान-पान, धर्म-कर्म से आधारित कार्यक्रमों का भी आयोजन होगा। उन्होंने कहा कि द्वापर युग से ही उड़ीसा और हरियाणा का गहरा संबंध है। भगवान श्री कृष्ण ने दोनों ही जगह पर रहकर अपनी लीलाएं दिखाई। उन्होंने कहा कि गुरुग्राम आज सिर्फ एक शहर नहीं बल्कि मिनी इंडिया बन गया है। हर राज्य, धर्म, संस्कृतियों के लोग यहां पर निवास करते हैं। यही हमारी संस्कृति है। उड़ीसा अपने आप में इतिहास को समेटे हुए है।

रज महोत्सव को लेकर कलिंगा भारती फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष इंजीनियर अक्षय कुमार सामल ने बताया कि 5वां प्रवासी उडिया रज महोत्सव आगामी 17 व 18 जून को जवैल गार्डन शीतला माता रोड पर धूमधाम से मनाया जाएगा। दो दिवसीय कार्यक्रम में उड़ीसा की कला, संस्कृति, खान-पान आदि का प्रदर्शन होगा। महिलाओं के लिए रज क्वीन और लड़कियों के लिए रज कुमारी प्रतियोगिता खास होगी। उन्होंने कहा कि रज महोत्सव सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह परम्पराओं को आगे बढ़ाने का, अगली पीढ़ियों तक पहुंचाने का माध्यम है। उड़ीसा के लोग जहां भी रहते हैं, अपनी संस्कृति, अपनी जड़ों से जुड़े रहते हैं। डा. विक्रम मोहंती ने बताया कि रज उत्सव का उड़ीसा के लोगों के लिए बहुत खास महत्व रहता है। इस समय में सभी लोग अपनी संस्कृति को सहेजने का काम करते हैं। हम सब भगवान जगन्नाथ से भी यही प्रार्थना करते हैं कि वे जहां भी रहें उनसे जुड़े रहें। उनका परोक्ष रूप में आशीर्वाद मिलता, फलीभूत होता रहे। सूर्य नारायण मिश्रा ने कार्यक्रम को लेकर विस्तृत जानकारियां सांझा की। इस अवसर पर पर्वकार सामल, विष्णु प्रिया साहू, अनिल जेना, संतोष रौत, सुधांशु पाढी, सुप्रिया मोहंती, सलील दास, प्रमोद सामल, श्रीमंत बिसवाल, निरंजन त्रिपाठी, जजाती पाल, देवी पटनायक, संग्राम पाणिग्रही, संजय दाश, संजय बेहरा, सुजीत नंदा समेत अनेक महिलाएं, पुरुष मौजूद रहे।

जीआईएए-2023 अवार्ड से नवाजे गए मैमोरी गुरू डा. हिम्मत भारद्वाज

गुरुग्राम। गुजरात के अहमदाबाद में जिनियस फाउंडेशन की ओर से हरियाणा के निवासी मैमोरी गुरू डा. हिम्मत भारद्वाज को 8वें जीनियस इंडिया अचीवर्स अवार्ड-2023 से नवाजा गया। पहले मैमोरी किंग और अब मैमोरी गुरू के नाम से विख्यात डा. हिम्मत भारद्वाज ने भारत ही नहीं, विदेशों में भी नाम कमाया है। इससे पहले डा. हिम्मत भारद्वाज अपने नाम 29 वर्ल्ड रिकॉर्ड कर चुके हैं। उनकी स्मरण शक्ति गजब की है।

उन्होंने आने वाले देश के भविष्य बच्चों को भी इस हुनर में पारंगत करने का बीड़ा उठाया है। दसवीं कक्षा में मात्र 33 प्रतिशत अंक लेने वाले हिम्मत भारद्वाज आज मैमोरी में बड़ों-बड़ों को मात देते हैं। डा. हिम्मत भारद्वाज के नाम अब से पहले रसायन शास्त्र की पीरियोडिक टेबल सुनाने का विश्व रिकॉर्ड है। वे चुटकियों में ही गणित कैलकुलेशन, क्यूब रूट्स को सॉल्व कर देते हैं। उन्हें यूके से ऑनरेरी डॉक्टरेट की उपाधि से अलंकृत किया जा चुका है। वे एक घंटे में 60 मोबाइल नंबर याद करने की क्षमता रखते हैं। वे भूतकाल और भविष्यकाल के कितने भी वर्षों का कैलेंडर बना सकते हैं।इन सब उपलब्धियों के बीच अब अहमदाबाद में डा. हिम्मत भारद्वाज को विशेष सम्मान मिला है। 8वां जीनियस इंडिया अचीवर्स अवार्ड-2023 मिलने पर उन्होंने कहा कि यह सम्मान सिर्फ उनका नहीं है, बल्कि हर व्यक्ति का है, जो उनके जीवन से किसी न किसी रूप में जुड़ा है।

आईटीआई में दाखिले की प्रक्रिया शुरू, 21 जून तक करें आवेदन

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

पलवल के राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में 48 ट्रेडों में 2120 सीटों पर होंगे दाखिले

राजकीय व निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान आईटीआई में दाखिला प्रक्रिया शुरू हो गई है। नए सत्र के लिए 21 जून तक दाखिले के लिए आवेदन कर सकते हैं। कौशल विकास एवं औद्योगिक प्रशिक्षण विभाग हरियाणा निर्देश दिए हैं कि विद्यार्थी केवल वही विकल्प भरें जिस में दाखिला लेना चाहते हैं।

सीट आवंटित होने के उपरांत यदि विद्यार्थी ने दाखिला नहीं लिया तो उसे आगामी दाखिला काउंसलिंग में भाग लेने से वंचित कर दिया जाएगा। बाद में छात्र को 500 व छात्रा को 250 जुर्माना राशि भरनी होगी। दाखिले से संबंधित दस्तावेज जैसे आधार कार्ड, हरियाणा रिहायशी प्रमाण पत्र, ईमेल आईडी, दसवीं आधारित योग्यता प्रमाण पत्र, चरित्र प्रमाण पत्र, बैंक अकाउंट की कॉपी व मोबाइल नंबर के साथ साथ फैमिली आईडी को भी जरूरी किया गया है। वहीं लड़कियों को आईटीआई में दाखिला लेने पर स्ट्राइव योजना के तहत सरकार विशेष सुविधाएं उपलब्ध करवाएगी।

> **आईटीआई** में दाखिले की प्रक्रिया आरंभ हो चुकी है। आवेदक 21 जून तक आवेदन कर सकते हैं। छात्र-छात्राओं की सहूलियत को देखते हुए आईटीआई में हेल्प डेस्क स्थापित कर दी गई है। ताकि छात्र छात्राओं को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।
>
>
>
> **-भगत सिंह, प्रधानाचार्य कम नोडल अधिकारी आईटीआई पलवल**

पलवल जिला स्थित राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में 48 ट्रेडों में कुल 2120 सीटों पर दाखिले किए जाने हैं। जिनमें से आईटीआई पलवल की 23 ट्रेडों में 1008 सीटों पर, आईटीआई हथीन की 14 ट्रेडों में 684 सीटों पर, आईटीआई कुशक की आठ ट्रेडों में 320 सीटों पर व आईटीआई दीघोट की तीन ट्रेडों की 108 सीटों पर दाखिला होना है।

विशेष सुविधा : प्रदेश भर में 36 आईटीआई केवल महिलाओं के लिए हैं। को एजुकेशनल आईटीआई में 30 प्रतिशत सीटें व हिंदी व अंग्रेजी स्टेनो व्यवसाय में 50 प्रतिशत सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित हैं।

ट्यूशन फीस पूरी तरह से माफ है। महिलाओं को 1000 तक की निशुल्क टूल किट दी जाएगी। विशिष्ट इंजीनियरिंग व्यवसाय में दाखिले पर 500 प्रोत्साहन राशि भी दी जाएगी।

हेल्प डेस्क स्थापित : आवेदक को एडमिशन साइट पर आवेदन करना होगा। दाखिले को लेकर हर तरह की जानकारी वेबसाइट पर उपलब्ध होगी। कौशल विकास व औद्योगिक प्रशिक्षण विभाग हरियाणा की तरफ से राजकीय आईटीआई सहित अन्य आईटीआई में छात्रों की सहूलियत के लिए हेल्प डेस्क स्थापित कर दिए गए हैं।

इन कोर्सों में ले सकते हैं भाग : औद्योगिक क्षेत्र में कुशल कारीगरों की बढ़ती हुई मांग को देखते हुए इच्छुक छात्र-छात्राएं राजकीय आईटीआई पलवल में वर्तमान में चल रहे कोर्स इलेक्ट्रिशियन, कोपा, स्टेनो इंग्लिश, स्टेनो हिंदी, कारपेंटर, पलंबर, इलेक्ट्रॉनिक्स मैकेनिक, सोलर टेक्नीशियन इत्यादि व्यवसायों में दाखिला लेकर अपने कौशल का विकास कर सकते हैं।

खेतों में खनन से रोकने पर दंपति पर जानलेवा हमला किया, केस दर्ज

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

महिला को घायल कर उसके पति को अगवा कर ले गए

खेतों में खनन से रोकने पर दबंगों ने एक घर में घुसकर हवाई फायरिंग कर दंपति से मारपीट की। पत्नी को घायल करके पति का अपहरण करके ले गए। चांदहट थाना पुलिस ने शनिवार देर रात पीड़ित की पत्नी की शिकायत पर 11 लोगों को नामजद करके 20 के खिलाफ केस दर्ज कर लिया।

चांदहट थाना प्रभारी कैलाश भड़ाना के अनुसार, गुरवाड़ी गांव निवासी वर्षा ने शिकायत दी है। इसमें उसने कहा है कि कमलजीत और उसके साथी उनके खेतों से मिट्टी-रेती का खनन करते हैं। पीड़िता और उसके पति हरेंद्र ने विरोध किया तो वे रंजिश रखने लगे। वे दोनों अपने घर में बैठे थे। इसी दौरान उनके घर के बाहर एक बुलेट बाइक आकर रुकी, जिस पर कमलजीत उर्फ बबलू व प्रमोद सवार थे। उनके साथ ही एक वैगनार, एक स्विफ्ट और एक ईको कार आई, जिनमें अंकित, राकेश, संजय, दलवीर, धीरज, कृष्ण, राजेश, गुलशन, प्रमोद, सोनू व 7-8 अन्य लोग शामिल थे। वर्षा ने बताया कि जब तक वे कुछ समझ पाते, उन्होंने हवाई फायर करने शुरू कर दिए। एक गोली दीवार में लगी। उन्होंने विरोध किया तो आरोपियों ने उनके साथ मारपीट करनी शुरू कर दी। इसके बाद वे पति हरेंद्र को हथियार की नोंक पर गाड़ी में डालकर अपने साथ अपहरण कर ले गए। वर्षा ने पुलिस को बताया कि उसके पति हरेंद्र आरोपियों के कब्जे से जैसे-तैसे छूटकर उनकी कार से कूदकर घर वापस आए। इस बीच उसने पुलिस को फोन कर दिया था। जानकारी मिलते ही पुलिस भी मौके पर पहुंची और उन्होंने घटना के बारे में बताया। आरोपियों ने पति हरेंद्र का मोबाइल फोन भी छीन लिया है।

घायल हरेंद्र।

वर्षा के अनुसार, आरोपियों ने उल्टा उसके पति हरेंद्र के खिलाफ ही हत्या के प्रयास का झूठा मुकदमा चांदहट थाना में दर्ज करा दिया है। इस मुकदमे में अभी तक हरेंद्र की गिरफ्तारी भी नहीं हुई है, क्योंकि यह मामला ही झूठा था। अब वे दोनों अपने परिजनों के साथ चांदहट थाने पहुंचे और लिखित शिकायत पुलिस को दी।

दौड़ प्रतियोगिता के प्रतिभागियों को सम्मानित कर उत्साह बढ़ाया

पलवल। खेल गतिविधि एबीवीपी पलवल और धतीर रेस क्लब ने रविवार को अग्निवीर भर्ती की तर्ज पर 1600 मीटर चैंपियनशिप दौड़ का सागर डागर की अध्यक्षता में आयोजन किया। जिसमें 200 युवाओं ने भाग लिया। इस चैंपियनशिप में पहले, दूसरे तीसरे स्थान पर आए अभ्यर्थियों को पुरस्कृत किया गया।

एबीवीपी खेल गतिविधि और धतीर रेस क्लब ने धतीर टहरकी रोड पर इस रैली का आयोजन किया गया। आयोजन का उद्देश्य अग्निवीर भर्ती में ज्यादा से ज्यादा युवाओं को प्रेरित कर भेजना है। इस दौरान आयोजित 1600 मीटर दौड़ में बालक वर्ग में पहले स्थान पर 1100 रुपये, ट्रॉफी-टी शर्ट, दूसरे स्थान पर 751 रुपये ट्रॉफी-टी शर्ट, तीसरे स्थान पर 551 रुपये ट्रॉफी-टी शर्ट और अन्य पहले 20 प्रतिभागी को टी शर्ट देकर पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में खेल आयाम प्रांत प्रमुख आजाद भड़ाना ने प्रतियोगिता में भाग ले रहे अभ्यर्थियों को बताया कि सेना में जवान और समाज के बीच मे विद्यार्थी परिषद 75 वर्षों से निरंतर कार्य करता आ रहा है। खेल के माध्यम से युवाओं की प्रतिभा को निखारने का काम करते हैं।

आपदा प्रबंधन पर जागरुकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

प्राचार्य रविंद्र मनचंदा ने कहा, प्रकृति में असंतुलन होने पर आती हैं आपदाएं

राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सराय ख्वाजा में आपदा प्रबंधन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। बच्चों को संबोधित करते हुए प्राचार्य रविंद्र मनचंदा ने कहा कि जब प्रकृति में असंतुलन की स्थिति होती है तब आपदाएं आती हैं। जिसके कारण विकास एवं प्रगति बाधक होती है।

प्राकृतिक आपदाओं के अतिरिक्त कुछ विपत्तियां मानवजनित भी होती हैं। प्राकृतिक आपदाएं जैसे भूकंप, सुनामी, भूस्खलन, ज्वालामुखी, सूखा, बाढ़, हिमखंडों का पिघलना आदि हैं। धैर्य, विवेक, परस्पर सहयोग व प्रबंधन से ही इन आपदाओं से पार पाया जा सकता है। आपदा प्रबंधन दो प्रकार से किया जाता है। आपदा से पूर्व एवं आपदा के पश्चात। आपदा पूर्व प्रबंधन को जोखिम प्रबंधन के नाम से भी जाना जाता है।

आपदा के जोखिम भयंकरता व संवेदनशीलता के संगम से पैदा होते हैं, जो मौसमी विविधता व समय के साथ बदलते रहते है। जोखिम प्रबंधन के तीन अंग हैं। जोखिम की पहचान, जोखिम में कमी व जोखिम का स्थानांतरण किसी भी आपदा के जोखिम को प्रबंधित करने के लिए एक प्रभावकारी रणनीति की शुरुआत जोखिम की पहचान से ही होती है। इसमें प्रकृति ज्ञान और बहुत सीमा तक उसमें जोखिम के बारे में सूचना सम्मिलित होती है। इसमें विशेष स्थान के प्राकृतिक वातावरण के बारे में जानकारी के अतिरिक्त वहां आ सकने का पूर्व निर्धारण सम्मिलित होता है।

इस प्रकार एक उचित निर्णय लिया जा सकता है कि कहां व कितना निवेश करना है। एक ऐसी परियोजना को डिजाइन करने में सहायता मिल सकती है। इसी प्रकार से पूर्व आपदा प्रबंधन तंत्र तैयार करना होता है। युवाओं और सामान्य नागरिकों को भी आपदाओं के बारे में जागरूक किया जाता है।

हसनपुर के रक्तदान शिविर में 102 लोगों ने किया रक्तदान

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

पलवल डोनर्स क्लब ज्योतिपुंज ने जिला रेडक्रॉस सोसायटी पलवल के सहयोग से हसनपुर के मेन बाजार स्थित चौहान क्लीनिक में 102 लोगों ने रक्तदान किया। शिविर का आयोजन पलवल डोनर्स क्लब ज्योतिपुंज के संयोजक विकास मित्तल, डॉ. कुलदीप सिंह चौहान और क्लब की सहसंयोजक अल्पना मित्तल ने किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ समाजसेवी डॉ. पदम सिंह चौहान, मास्टर शेर सिंह चौहान, वैश्य भारती के मुख्य संपादक हितेष जिंदल, डालचंद वर्मा, संजय बॉबी, मनोज गोयल, देवीलाल, ज्योति, होडल के पूर्व पार्षद लखविंदर सौरोत, भव्या, धन्य ने किया। अतिथियों ने रक्तदाताओं की सराहना करते हुए कहा कि रक्त को कृत्रिम रूप से बनाया नहीं जा सकता है। यह इंसान के शरीर में स्वयं ही बनता है, इसकी आपूर्ति का कोई अन्य विकल्प नहीं है। सभी ने रक्तदान को महादान बताया। शिविर संयोजक विकास मित्तल, डॉ. कुलदीप सिंह चौहान और अल्पना मित्तल ने सभी का धन्यवाद करते हुए बताया कि एक बार रक्तदान करने से आप तीन लोगों का जीवन बचा सकते हैं। रक्तदान करने से शरीर में रक्त बनने की प्रक्रिया पहले की अपेक्षा ज्यादा बेहतर हो जाती है। रक्तदान शरीर से अतिरिक्त आयरन निकालने का बेहतरीन तरीका है। रक्तदान से कोलेस्ट्रॉल घटाने में मदद मिलती है और रक्त पतला होकर शरीर को उर्जा प्रदान करता है। कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने के लिए डॉ. नरेश डागर, नेपाल सिंह, संजीव, कमलेश, ललिता, मनीषा, भूषण, तरुण, आरती आदि ने अपना विशेष सहयोग दिया।

योग के नियमित अभ्यास से स्वस्थ ऊर्जा का होता है संचार : अजीत यादव

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

योग के नियमित अभ्यास से शरीर और मन में स्वस्थ ऊर्जा का संचार होता है। जिला आयुष अधिकारी डॉक्टर अजीत यादव ने बताया कि अंतराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को जिला स्तर का कार्यक्रम नेताजी सुभाष चंद्र बोस स्टेडियम में, ब्लॉक स्तर के कार्यक्रम राजकीय वरिष्ठ विद्यालय हथीन, होडल, हसनपुर ,पृथला, बडोली में मनाया जाएगा। योग दिवस में 45 मिनट का कॉमन योग प्रोटोकॉल शामिल किया गया है। जिसके नियमित अभ्यास से शरीर और मन में स्वस्थ ऊर्जा का संचार होता है और शरीर क्रियाशील होता है। काम करने में मन भी लगता है। योग की थीम को प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए विगत एक माह से आयुष विभाग ने जिले के सभी स्कूलों के पीटीआई, डीपीई को प्रशिक्षण दे दिया है।

ब्लॉक स्तर पर भी तीन दिवसीय योग प्रशिक्षण 9, 10, 11जून को संपन्न हुआ है। जिले की प्रत्येक योग व्यायामशाला और आयुष हेल्थ एंड वैलनेस सेंटर के माध्यम से योग का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जिले के पार्कों, मुख्य स्थानों पर पतंजलि योग समिति, पतंजलि महिला योग समिति, पतंजलि खेल योगासन समिति, क्रीड़ा भारती, ब्रह्मकुमारी के माध्यम से योग और योग दिवस के आयोजन के लिए आमजन को जागरूक किया जा रहा है।

आगामी 14,15,16 जून को विभिन्न विभागों के अधिकारी, कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। 19जून को पायलट रिहर्सल एवं योग मैराथन का आयोजन किया जाएगा। 21जून को अंतराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया जाएगा।

310 ग्राम गांजा सहित आरोपी गिरफ्तार

फरीदाबाद। क्राइम ब्रांच सेक्टर-56 प्रभारी की टीम ने अवैध नशा तस्करी करने वाले आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रवक्ता सूबे सिंह ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी का नाम पवन है, जो सुंदर कॉलोनी का रहने वाला है।

आरोपी को क्राइम ब्रांच टीम ने सूचना पर थाना सेक्टर-58 एरिया से काबू किया है। आरोपी की तलाशी लेने पर 310 ग्राम गांजा बरामद हुआ है। आरोपी के खिलाफ थाने में मामला दर्ज कर लिया गया है। पूछताछ में सामने आया कि आरोपी नशा करने का आदी है और नशे की आपूर्ति के लिए गांजा तस्करी करता था। वह दिल्ली से किसी अनजान व्यक्ति से खरीदकर लाया था।

एडवांस कॉलेज में बारहवीं के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को विधायक ने किया सम्मानित

एडमिशन में छात्राओं को दी जाएगी विशेष स्कॉलरशिप : डॉ. पूनम गोयल

पायनियर समाचार सेवा। फरीदबाद

आप सभी विद्यार्थी भारत का भविष्य हैं, आपका शिक्षित होने के साथ अनुशासित होना बहुत जरूरी है। विद्यार्थी अपने गुरुजनों व माता पिता का सम्मान करें। सभी विद्यार्थी निरंतर ऐसे ही उत्तम कार्य करके आगे भी सम्मान प्राप्त करते रहें।

यह बात विधायक होडल जगदीश नायर ने एडवांस्ड एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन के सभागार में 12वीं पासआउट विद्यार्थियों के लिए आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह के दौरान बतौर मुख्य अतिथि कही। कार्यक्रम के शुभारंभ पर संस्था के चेयरमैन डॉ. पुनीत गोयल ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि अभिभावकों को अपने बच्चों की दूसरे बच्चों से तुलना न करके उन्हें क्षमता के अनुसार विकसित होने दें। हर एक बालक की अपनी प्रतिभा है।

विद्यार्थियों को सम्मानित करते विधायक जगदीश नायर व कॉलेज स्टाफ।

एडवांस्ड एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन छात्रों की प्रतिभाओं को निखारने के लिए निरंतर तत्पर है। साथ ही संस्था की चेयरपर्सन डॉ. पूनम गोयल ने द्वारा एडवांस्ड एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन में प्रवेश प्राप्त करने वाली छात्राओं को विशेष स्कॉलरशिप देने की घोषणा की। प्रशासक डॉ. सुनील दलाल ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी गणमान्य लोगों का स्वागत करते हुए अर्जुन की भांति अपने लक्ष्य को जीवन में धारण करने की बात कही।

साथ ही अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरंतर कार्य करने की प्रेरणा दी। प्रतिभा सम्मान समारोह में पलवल जिले में कक्षा 12वीं में 96.8 प्रतिशत लाकर प्रथम स्थान पर आने वाली रोनिका को सम्मानित किया गया। साथ ही जिले के अच्छे अंकों से 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने वाले 350 छात्रों को सम्मानित किया। कार्यक्रम में राजकीय विद्यालयों के प्रिंसिपल सरला रावत, संत ज्ञानेश्वर पब्लिक स्कूल के चेयरमैन भोलेराम गौड़ तथा विभिन्न स्कूलों के अध्यापक योगेश सौरोत, विष्णु गौड़, हरीश, राजकुमार एवं विद्यार्थियों की गरिमामयी उपस्थित रही।

कार्यक्रम के अंत में प्रतिभा सम्मान समारोह की कोर्डिनेटर प्रोफेसर लक्ष्मी शर्मा ने कार्यक्रम में उपस्थित विशिष्ट अतिथि, शिक्षकों, अभिभावकों, छात्रों व श्रोताओं का आभार व्यक्त किया। प्रो. शर्मा बताया कि आज हम सबके लिए ये गौरव की बात है कि लड़कियां बेहतर शिक्षा पाकर बेहतर परिणाम ला रहीं हैं। इससे नए समाज का निर्माण संभव हो रहा है। कार्यक्रम में शानदार मंच संचालन प्रवक्ता गीता हर्षाना द्वारा किया गया।

11 क्विंटल गेहूं के गबन पर महिला डिपो होल्डर पर केस

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

खाद्य आपूर्ति विभाग ने मारा था छापा

खाद्य आपूर्ति विभाग की टीम ने दीघोट गांव में एक डिपो पर छापमारी की। डिपो की रिकॉर्ड की जांच में 11 क्विंटल गेहूं कम पाया गया। इसको डिपो धारक द्वारा खुर्द-बुर्द किया गया है। सदर थाना पुलिस ने खाद्य एवं पूर्ति विभाग के निरीक्षक कपिल खटाना की शिकायत पर डिपो संचालक महिला गीता के खिलाफ केस दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

सदर थाना प्रभारी विश्व गौरव के अनुसार, खाद्य एवं पूर्ति विभाग हथीन के निरीक्षक कपिल खटाना ने दी शिकायत में कहा है कि राशन डिपो पर गड़बड़ी की शिकायतें मिल रही थी। जिसके चलते वह उच्चाधिकारियों के आदेश पर विभाग के उप निरीक्षक होडल दिनेश व विभाग एनआईटी के उदय सिंह की गठित टीम के साथ डिपोधारिका गीता देवी के राशन डिपो की जांच की गई।

मौके पर बताया गया कि उनके पास विभाग की दो मशीन है। जिन्हें चैक किया गया तो रिकॉर्ड अनुसार डिपो पर 88 क्विंटल 97 किलो 470 ग्राम गेहूं होना चाहिए था, लेकिन डिपो पर जांच के दौरान 155 बैग में 77 क्विंटल 50 किलो गेहूं पाया गया। जोकि रिकॉर्ड अनुसार 11 क्विंटल 47 किलो कम था। डिपो धारिका से पूछा तो वह कोई स्थिति स्पष्ट नहीं कर सकी। जिससे प्रतीत होता है कि डिपोधारिका द्वारा राशन के गेहूं को खुर्द बुर्द किया गया है।

सदर थाना पुलिस ने विभाग के निरीक्षक कपिल खटाना की शिकायत पर डिपो धारिका गीता देवी के खिलाफ संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है। वहीं, विभागीय कार्रवाई भी शुरू कर दी गई है।

संक्षिप्त समाचार

डॉ. गजराज सिंह बने आर्य समाज सेक्टर-19 के प्रधान

आर्य समाज सेक्टर-19 फरीदाबाद की नई कार्यकारिणी के पदाधिकारी।

फरीदाबाद। आर्य समाज सेक्टर-19 के द्विवार्षिक चुनावों में डॉक्टर गजराज सिंह आर्य को एक बार पुन: सर्वसम्मति से प्रधान मनोनीत किया गया। इससे पूर्व भी डॉक्टर गजराज सिंह आर्य इस संस्था के प्रधान थे। इसके अलावा चुनाव अधिकारी महेश चंद गुप्ता, जेपी मल्होत्रा और मदन लाल तनेजा ने वरिष्ठ उप प्रधान विमला ग्रोवर, मंत्री रविंद्र तनेजा, कोषाध्यक्ष सुरेश कुमार आर्य तथा महिला प्रकोष्ठ की प्रधान कमला तनेजा को भी सर्वसम्मति से पदों पर नियुक्त करने की घोषणा की। इस अवसर पर नवनियुक्त प्रधान डॉक्टर गजराज सिंह आर्य ने कहा कि आर्य समाज के लोगों ने इस चुनाव में उनपर जो विश्वास और स्नेह व्यक्त किया है, वह उनकी भावनाओं पर खरा उतरने के लिए प्रयासरत रहेंगे। पिछले दो वर्ष की तरह ही वह अपनी नई टीम तथा समाज के बुजुर्ग लोगों के आशीर्वाद के साथ संस्था के विकास और प्रगति के लिए कार्य करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि वैदिक संस्कृति को बढ़ाने, युवाओं को जागरूक करने का कार्य आर्य समाज करता रहेगा। इस अवसर पर आर्य समाज के लोकनाथ क्वात्रा, एडवोकेट विजय आर्य, राजकुमार आर्य, नरेश अग्रवाल, सुभाष ग्रोवर, अशोक आर्य, नरेंद्र छाबड़ा, अशोक गर्ग, नंदलाल टुडेजा, देवेंद्र तनेजा, राजेंद्र कुमार, ओपी वधवा सहित शहर के अनेक गणमान्य एवं आर्य समाज के सदस्य उपस्थित थे।

मशीन में आने से महिला का हाथ कटा

पलवल। एक फैक्टरी में काम करते हुए महिला का हाथ मशीन में आने से कट गया। उसे घायलावस्था में फरीदाबाद के निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। गदपुरी थाना पुलिस ने पीड़िता के पति की शिकायत पर एक नामजद सहित अन्य के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है। पुलिस जांच अधिकारी लाल सिंह के अनुसार कानोली गांव निवासी गजेंद्र ने दी शिकायत में कहा है कि उसकी पत्नी पूनम करीब आठ माह से पृथला गांव के निकट स्थित साईं ऑटो कंपनी (प्राइवेट लिमिटेड) में काम करती थी। एक दिन कंपनी के एचआर प्रेमचंद ने उसे फोन कर बताया कि पूनम का हाथ मशीन में आ गया है और उसे फरीदाबाद अस्पताल भर्ती कराया गया है। वह कंपनी पहुंचा तो उसे पूनम से मिलने नहीं दिया गया। होश आने पर पूनम से मिला तो उसने बताया कि एचआर प्रेमचंद व सुपरवाइजर ने उसे जबरन मशीन पर काम करने के लिए बैठा दिया था। उसने कहा कि वह मशीन चलाना नहीं जानती तो उसे नौकरी से निकालने की धमकी दी। उसे मशीन पर बैठाकर किसी ने चालू कर दी, जिससे उसका हाथ मशीन में आकर कट गया। काफी ज्यादा रोने-चिल्लाने पर आरोपी उसे अस्पताल लेकर आए। रास्ते में पुलिस कार्रवाई करने की बात कहने पर उसे जान से मारने की धमकी दी। आरोप है कि आरोपियों ने पीड़िता का ईएसआई कार्ड व अन्य दस्तावेज भी नहीं दिए। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है। जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

घर में घुसकर मारपीट व तोड़फोड़ कर कैश लूटा

पलवल। रंजिश के चलते एक परिवार के दो मकानों में घुसकर मारपीट, लूटपाट व तोड़-फोड़ करने का मामला सामने आया है। हसनपुर थाना पुलिस ने शनिवार देर शाम पीड़ित की शिकायत पर 32 नामजद सहित 57 के खिलाफ केस दर्ज करके कार्रवाई शुरू कर दी है। हसनपुर थाना प्रभारी रामचंद्र जाखड़ के अनुसार, भेंडोली गांव निवासी दिनेश कुमार ने शिकायत दी। इसमें उसने बताया कि वह शाम के समय अपनी दुकान पर बैठा था। इसी दौरान सतपाल, पुष्पेंद्र, मान सिंह, लाल सिंह, दिगंबर, नितिन, विष्णु, मनीष, आकाश, राहुल, रवि, रोदु, सन्नी, चरण सिंह, सुरेंद्र, श्रीपाल, गुड्डू, दीपक, अरुण, ढप्पी, जीतू, दिनेश, राहुल, दीपक, करतार, देवगोडा, देव, कैलाश, देवराज व हीरो के अलावा 20-25 अन्य लोग हाथों में लाठी, डंडा, फरसा, कुल्हाड़ी व देसी कट्टा लेकर उसकी दुकान में घुस आए। पीड़ित के अनुसार, आरोपियों ने आते ही कहा कि आज तुम्हें मजा चखाते हैं। इसके बाद उन्होंने दुकान का सामान तोड़ दिया और गल्ले में रखे 10-12 हजार रुपये लूट लिए। पीड़ित घर के अंदर भागा तो आरोपी अंदर आ गए और उसकी बाइक को तोड़ दिया। इसके बाद आरोपी रिश्तेदार जगपाल के घर में घुस गए और जगपाल के घर में टीवी, फ्रिज, कूलर व उनकी दो बाइकों को तोड़कर जगपाल की जेब से 40 हजार रुपए लूट ले गए। इसके बाद आरोपी हथियारों को हवा में लहराते हुए उन्हें जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गए।

पलवल में हादसों में दो लोगों की मौत

पलवल। जिले में अलग-अलग जगहों पर हुए सड़क हादसों में कंपनी कर्मचारी सहित दो लोगों की मौत हो गई। नेशनल हाईवे पर गांव बघौला के पास सड़क किनारे पैदल चले रहे कंपनी कर्मचारी को अज्ञात वाहन ने टक्कर मारी। वहीं गांव मंडकौला के पास दो बाइकों की टक्कर में एक युवक की मौत हो गई। गदपुरी थाना प्रभारी इंस्पेक्टर राजबीर सिंह के अनुसार, दिनेश रविदास ने शिकायत दर्ज कराई है। बिहार के लक्खीसराय का रहने वाला उसका जीजा सुरेंद्र गांव बघौला स्थित एक निजी कंपनी में काम करता था। वह अपने परिवार के साथ गांव पृथला में रहता था। शनिवार शाम को वह घर से कंपनी की तरफ पैदल जा रहा था। रास्ते में हाईवे पर किसी अज्ञात वाहन ने सुरेंद्र को टक्कर मार दी और मौके से फरार हो गया। घायलावस्था में उसे जिला नागरिक अस्पताल लाया गया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। वहीं दूसरे मामले में राजस्थान के जिला भरतपुर ?स्थित गांव उदयपुर निवासी आशीष ने शिकायत दर्ज कराई है। उसके पिता बृजलाल अपने रिश्तेदार के यहां पलवल के गांव मंडकौला आए हुए थे। वापस लौटते समय गांव मंडकौला के पास तेज गति से आए बाइक सवार ने उनकी बाइक में टक्कर मार दी। गंभीर रूप से घायल उनके पिता को जिला नागरिक अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां से हालत गंभीर होने के कारण नल्हड़ मेडिकल कॉलेज के लिए रेफर कर दिया गया, लेकिन रास्ते में ही उनकी मौत हो गई।

गुरुकुलों की वजह से बची हुई है वेद व संस्कृति : दीपक डागर

फरीदाबाद। गुरुकुल गदपुरी के प्रांगण में आर्य वीरदल के सौजन्य से युवक चरित्र निर्माण शिविर के समापन समारोह में मुख्य अतिथि समाजसेवी बीजेपी नेता दीपक डागर ने कहा कि गुरुकुलों की वजह से हमारी संस्कृति बची हुई है व वेद भी बचे हुए है। इस तरह के युवक चरित्र निर्माण शिविर से बच्चों में जागरूकता आती है, बुरी आदतों से बचे रहते हैं। बच्चे संस्कारवान बनते है। योग का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। योग करने से हम बीमारियों से बचे रहते हैं। मैं हमेशा गुरुकुल व आर्य वीरदल की सेवा के लिए तैयार रहूंगा। दीपक डागर को गुरुकुल के स्वामी आनंद मित्र, हरिचंद शास्त्री, योगाचार्य गुरमेश, नानकचंद आर्य व गुरुकुल की प्रबंधन समिति ने पगड़ी बांधकर सम्मानित किया। गुरुकुल के स्वामी आनंद मित्र ने इस अवसर पर बताया कि आर्यवीर दल पलवल के सौजन्य से चार जून से 11 जून तक साप्ताहिक युवक चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन हुआ। स्वामीजी ने सभी उपस्थित अतिथियों व आर्य वीरदल की टीम का एवं मुख्य अतिथि समाजसेवी दीपक डागर का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर विशेष रूप से हरिचंद शास्त्री, महेंद्र शास्त्री, नानकचंद आर्य, स्वामी आनंद मित्र, जनहित सेवा संस्था के अध्यक्ष संत सिंह हुड्डा, महासचिव सुभाष गहलोत, अमरदीप डागर, प्रवीण शास्त्री, ओमी रावत, राजेश रावत, गुरुकुल की प्रबंधन समिति एवं आर्य वीरदल की टीम और आसपास गांवों के गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

कनाडा प्रकरण

विवादास्पद झांकी

कनाडा में भारत की पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या की झांकी प्रदर्शित करना निन्दनीय कृत्य है। इस विवादास्पद झांकी पर खासकर कनाडा और भारत में जनता का व्यापक गुस्सा सामने आया है। एक सांस्कृतिक आयोजन में प्रदर्शित इस झांकी ने कलात्मक स्वतंत्रता, ऐतिहासिक संवेदनशीलता तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमाओं पर चर्चा तेज की है। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या 31 अक्टूबर, 1984 को उनके अंगरक्षकों ने की थी। यह हत्या इंदिरा सरकार द्वारा अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में छिपे उग्रवादियों को निकालने के लिए की गई कार्रवाई के विरोध में थी। इसकी व्यापक प्रतिक्रिया हुई थी जिसमें पूरे भारत में सिख समुदाय पर निशाना लगाने वाले दंगे और हिंसा शामिल थी। हाल ही में कनाडा में आयोजित एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या की झांकी दिखाई गई थी। इस झांकी में अभिनेताओं ने हत्यारों की भूमिका निभाते हुए पूरे दृश्य को जीवन्त किया था। सार्वजनिक रूप से इस झांकी के प्रदर्शन की व्यापक निन्दा हुई है। निन्दा और गुस्सा प्रकट करने वालों में प्रवासी भारतीयों के साथ ही बड़ी संख्या में कनाडा के नागरिक भी शामिल हैं। इस प्रकार की झांकी का प्रदर्शन न केवल अतार्किक है, बल्कि यह उस जघन्य हत्या के महिमामंडन का प्रयास भी है। कोई चाहे जितना भी किसी का विरोधी हो, मृत्यु के बाद उसका अपमान करना ठीक नहीं कहा जा सकता है। इस झांकी में भारतीय इतिहास की एक कष्टदायक घटना के प्रति संवेदनहीनता व अपमान का भाव निहित है। श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या एक त्रासद घटना थी। एक विख्यात राजनेता की हत्या के बाद प्रतिक्रिया स्वरूप व्यापक सांप्रदायिक हिंसा हुई थी। बिना किसी खास संदर्भ के इस घटना का पुन: प्रस्तुतीकरण उस समय जनता द्वारा झेली गई पीड़ा का मजाक उड़ाने की तरह है।

यह झांकी 39 साल पहले हुए जख्म कुरेदने की तरह है। इससे न केवल सभी सिखों की छवि खराब होती है, बल्कि यह धारणा भी बनती है कि जैसे सभी सिख इंदिरा गांधी की हत्या के समर्थन में थे। इससे सिखों की पीड़ा एक बार फिर जीवन्त हो उठी है। पूरे सिख समुदाय को पूर्वाग्रही व नकारात्मक रूप से प्रदर्शित करने के कारण इस झांकी की कठोर निन्दा की जानी चाहिए। सिख धर्म शांति के पक्ष में है और कुछ लोगों की घृणित कार्रवाई पूरे समुदाय के विश्वास व मूल्यों का प्रतिनिधित्व नहीं करती है। ऐसी झांकी के माध्यम से सिखों को हिंसा के साथ जोड़ना उनके प्रति व्याप्त वर्तमान पूर्वाग्रहों को मजबूत कर सकता है जिससे पूरे समुदाय के साथ भेदभाव बढ़ सकता है। कहने का यह अर्थ नहीं कि कलात्मक अभिव्यक्ति को सुरक्षा नहीं मिलनी चाहिए, पर इससे किसी को कष्ट नहीं होना चाहिए तथा यह निन्दा करने वाले अभियान में नहीं बदलनी चाहिए। कलात्मक अभिव्यक्ति तथा सांस्कृतिक संवेदनशीलता के बीच संतुलन बनाना एक चुनौती है जो परस्पर जुड़ी तथा विविधतापूर्ण दुनिया में कठिन होती जा रही है। ऐसे में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सिद्धान्त का सम्मान करते हुए समझदारी तथा परस्पर सम्मान बढ़ाने के लिए निरंतर संवाद जरूरी है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने ठीक यही किया है। उन्होंने झांकी की निन्दा करते हुए एक बयान जारी किया है। उन्होंने कहा है कि इस प्रकार झांकी प्रदर्शित करने को ठीक नहीं कहा जा सकता है और इससे भारत-कनाडा संबंधों को नुकसान हो सकता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भारतीय विदेश मंत्री ने दलगत राजनीति से ऊपर उठ कर अपनी बात रखी है। अपने बयान में उन्होंने देश की छवि को केन्द्र में रखा है। इस दृष्टिकोण के लिए उनकी प्रशंसा की जानी चाहिए।

दुनिया को एकजुट करता भारत

भारत 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना से ऐसी विश्व व्यवस्था बनाने का प्रयास कर रहा है जो न्यायोचित, समतापूर्ण व परस्पर सम्मान पर आधारित हो।

शिवानी राज
(लेखिका, राजनीति विज्ञान की शोधार्थी हैं।)

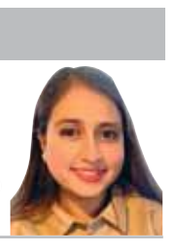

वर्ष 2022 अनेक प्रकार से भारत के लिए बहुत खास तथा स्मरणीय रहा है। एक ओर इस साल भारत ने विभिन्न वैश्विक चुनौतियों का दृढ़ता से सामना किया, वहीं दूसरी ओर हमने अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय सफलतायें प्राप्त कीं। इन क्षेत्रों में खेल, शिक्षा, बिजनेस, अर्थव्यवस्था, विज्ञान और तकनीक शामिल हैं। बहुत पुरानी कहावत है कि 'अंत भला तो सब भला।' भारत ने इस कहावत को सफलतापूर्वक चरितार्थ करते हुए आधिकारिक रूप से जी-20 समूह की अध्यक्षता वर्ष 2022 के अंतिम महीने दिसंबर की पहली तारीख को प्राप्त की। जी-20 समूह की अध्यक्षता सभी भारतवासियों के लिए गौरव का विषय है। यह विशिष्ट अवसर हमें ऐसे समय मिला है जब भारत अपनी 'स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव' मना रहा था। यह संपूर्ण भारत और उसकी जनता के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित करते हुए इच्छा प्रकट की थी कि भारत अगले 25 साल में दुनिया की मजबूत विश्व शक्ति बन जाएगा।

इस अवसर पर उन्होंने देशवासियों से 'पंच प्राण' की प्रतिज्ञा लेने का आह्वान किया। लेकिन प्रधानमंत्री मोदी तथा सरकार के अनेक आलोचकों को इस विश्वास तथा जी-20 की अध्यक्षता के अवसर पर संदेह था। ऐसे अनेक लोग हैं जिनको जी-20 के बारे में ही विश्वास नहीं है। उनका कहना है कि आखिरकार भारत में इस अध्यक्षता को लेकर इतनी चर्चा क्यों हो रही है? आलोचकों को गौर करना चाहिए कि जी-20 यूरोपीय संघ समेत 19 देशों का एक अंतरराष्ट्रीय समूह है। इस समूह में भारत, रूस, जर्मनी, अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, चीन, जापान, अर्जेन्टाइना, आस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, इंडोनेशिया, इटली, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका व तुर्किये शामिल हैं।

इसकी स्थापना 1999 में विश्व आर्थिक मुद्दों पर चर्चा के लिए की गई थी। हर साल एक सदस्य देश को इसकी अध्यक्षता का दायित्व सौंपा जाता है। सभी जी-20 देश विश्व व्यापार के लगभग 85 प्रतिशत, विश्व बाजारों के 75 प्रतिशत से अधिक तथा दुनिया की दो तिहाई जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं।

भारत को पहली बार जी-20 की अध्यक्षता करने तथा इसके सम्मेलन का आतिथेय बनने का अवसर मिला है, इसलिए इसे देश के लिए बड़ी उपलब्धि माना जा रहा है। वर्तमान समय में जी-20 समूह संयुक्त राष्ट्रसंघ के बाद वैश्विक स्तर पर सर्वाधिक शक्तिशाली संगठन है। हर साल जी-20 शिखर सम्मेलन के समय तीन देशों के समूह 'त्रोइका' का स्वत: गठन हो जाता है। रूसी शब्द त्रोइका का अर्थ 'तीन' है। तीन देशों के इस समूह या त्रोइका में जी-20 के निवर्तमान अध्यक्ष देश, वर्तमान अध्यक्ष देश तथा आगामी साल बनने वाले अध्यक्ष देश को शामिल किया जाता है। इस वर्ष 'त्रोइका' में निवर्तमान अध्यक्ष देश इंडोनेशिया, वर्तमान अध्यक्ष देश भारत तथा आगामी अध्यक्ष देश ब्राजील को शामिल किया गया है।

इस बार त्रोइका का विशेष महत्व इस कारण भी है कि ये तीनों देश विकासशील देश हैं। त्रोइका में शामिल तीनों देशों का विशेष महत्व इस कारण भी है कि जी-20 सम्मेलन में त्रोइका देशों द्वारा उठाए जाने वाले चर्चा के मुद्दों को विशेष महत्व दिया जाता है। इस दृष्टिकोण से देखें तो इस बार के जी-20 शिखर सम्मेलन में इंडोनेशिया व ब्राजील के साथ ही भारत का विशेष महत्व उल्लेखनीय है।

इस प्रकार जी-20 की अध्यक्षता एक ओर भारत के लिए इस कारण महत्वपूर्ण है कि वह सारी दुनिया के सामने अपनी विश्वसनीयता बढ़ाने के प्रयास कर सकता है और दूसरी ओर यह उसके सामने अनेक चुनौतियों का समाधान पेश करने के अवसर भी प्रदान करता है। वर्तमान समय की प्रमुख वैश्विक चुनौतियों में रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण यूक्रेन में शांति स्थापित करना तथा विश्व आर्थिक संकट से निपटने के समाधान खोजना शामिल है। भारत ने रूस-यूक्रेन युद्ध के संबंध में पहले ही अपनी स्थिति और दृष्टिकोण स्पष्ट कर दिया है। सितंबर, 2022 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रूसी राष्ट्रपति व्लादीमिर पुतिन के साथ बैठक में स्पष्ट कहा था कि 'आज का युग युद्ध का नहीं है।' प्रधानमंत्री मोदी के इस दृष्टिकोण की सारी दुनिया में न केवल प्रशंसा हुई, बल्कि अनेक शासनाध्यक्षों व राष्ट्राध्यक्षों ने अनेक वैश्विक मंचों से इसे दुहराया भी। इंडोनेशिया में नवंबर, 2022 में जी-20 शिखर सम्मेलन के अंत में स्वीकृत 'बाली घोषणापत्र' में इस दृष्टिकोण को पुन: पुष्ट किया गया। इस घोषणा को सभी सदस्य देशों ने सर्व सम्मति से स्वीकार किया था। यह भारत के राजनयिक कौशल का प्रमाण है कि अनेक देशों के बीच परस्पर मतभेदों के बावजूद इस सम्मेलन में कोई राजनीतिक टकराव देखने को नहीं मिला। अनेक देशों को इस सम्मेलन में राजनीतिक टकराव की आशंका थी। यह सर्व-सम्मति प्राप्त करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सभी राज्यों के प्रमुखों से एक एक कर अलग से बात की। अपने संबोधन में भारत का पक्ष रखते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था, 'कोविड के पश्चात नई विश्व व्यवस्था बनाने की जिम्मेदारी हमारे ऊपर है। समय की आवश्यकता है कि हम एक साथ आएं, शांति व सुरक्षा बनाने की स्पष्ट प्रतिज्ञा करें तथा इसके प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रकट करें।'

दुनिया के प्रति भारत का दृष्टिकोण हमेशा से 'वसुधैव कुटुम्बकम' का रहा है। इसका अर्थ है कि सारी दुनिया हमारे लिए एक परिवार की तरह है। यह भारतीय संस्कृति तथा भारतीय मिट्टी की विशेषता रही है कि वह सबको समान मानती है तथा सबके कल्याण की इच्छा करती है। इस भारतीय दृष्टिकोण की झलक जी-20 सम्मेलनों में बार-बार दिखाई पड़ी है। भारत ने वसुधैव कुटुम्बकम के रास्ते पर चलते हुए अतीत की तरह वर्तमान समय में भी दुनिया को जोड़ने के अनेक मंत्र सामने रखे हैं। भारत ने दुनिया के समक्ष नवीकरणीय ऊर्जा का मंत्र 'एक सूरज, एक दुनिया, एक ग्रिड' के रूप में रखा है। इसी प्रकार उसने वैश्विक स्वास्थ्य ढांचागत संरचना मजबूत करने के लिए 'एक धरती, एक स्वास्थ्य' का दृष्टिकोण सामने रखा है। पिछले साल बाली में आयोजित शिखर सम्मेलन में जी-20 अध्यक्षता का दायित्व स्वीकार करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था, 'मेरा विश्वास है कि यदि भगवान बुद्ध और महात्मा गांधी की भूमि पर जी-20 की बैठक के समय सभी नेता एकजुट संदेश दें तो इससे दुनिया में शांति स्थापित होगी। इससे हम एक मजबूत व स्पष्ट संदेश देंगे।'

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत को जी-20 की अध्यक्षता मिलना बहुत महत्वपूर्ण अवसर है। एक साल तक जी-20 की अध्यक्षता के दौरान भारत पूरे देश में 55 अलग-अलग स्थानों पर जी-20 के विविध समूहों की 190 से अधिक बैठकों का आयोजन करेगा। देश भर के इन आयोजन स्थलों में जम्मू कश्मीर को भी स्थान मिला है। जी-20 शिखर सम्मेलन की मुख्य बैठक 9 व 10 सितंबर को नई दिल्ली में आयोजित की जाएगी। भारत द्वारा जी-20 की अध्यक्षता के इस पूरे साल सारी दुनिया देखेगी कि भारत पर टिकी उसकी उम्मीदों का क्या आधार है।

इस सम्मेलन से दुनिया भर में भारत का राजनीतिक कद और मजबूत होगा। देखना होगा कि जी-20 की अपनी अध्यक्षता के इस पूरे साल तथा मुख्यत: सितंबर के शिखर सम्मेलन में भारत विभिन्न मुद्दों पर सहमति बनाने में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सफल होता है। यह भी महत्वपूर्ण है कि इस कालखंड में राज्य प्रमुखों के साथ ही सदस्य देशों के सामाजिक व बिजनेस संगठन, उद्योगपति, वैज्ञानिक व संयुक्त राष्ट्रसंघ जैसे महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय संगठन भी अनेक बैठकों का हिस्सा बनेंगे। इस बात में कोई संदेह नहीं कि भारत अपने राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक व बौद्धिक नेतृत्व के माध्यम से दुनिया के सबसे बड़े समूह में नई सोच व गतिशीलता पैदा करेगा। इसके साथ ही यह सारी दुनिया के सामने भारत की आश्चर्यजनक विविधता, विशिष्ट परंपराओं तथा समृद्ध सांस्कृतिक विरासत पेश करने का मौका भी होगा।

अपने हृदय को स्वस्थ रखना अनिवार्य

जितना आप सोचते हैं उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण आपका हृदय है; अच्छी देखभाल करना सर्वोपरि है।

अमित देशपांडे
(लेखक, एक एक्टिविस्ट हैं)

हर साल 17.9 मिलियन से अधिक लोगों को प्रभावित करने वाले दुनिया भर में दिल की समस्याएं मौत का प्रमुख कारण हैं। मानव शरीर में हृदय का स्वास्थ्य सबसे महत्वपूर्ण है और इसे साबित करने के लिए हमें किसी अध्ययन की आवश्यकता नहीं है। आपका मस्तिष्क और हृदय लगभग पूरे शरीर और उसके कार्यों को आकार देते हैं। शरीर में मानसिक और शारीरिक समस्याओं के कारण स्ट्रोक और उच्च रक्तचाप जैसी स्थितियां उत्पन्न होती हैं। हां, ऐसे मामलों में तनाव भी एक प्रमुख कारक है। क्या आपको लगता है कि आपका दैनिक आहार आपके दिल के लिए पर्याप्त प्रदान करता है?

'मिलावटी' एक छोटा सा शब्द है, आपके खाने की चीजों को अगर ठीक से न धोया जाए तो उनमें अस्वास्थ्यकर तत्व होते हैं। इससे शरीर में आवश्यक पोषक तत्वों की भारी कमी हो जाती है। और, सप्लीमेंट्स इस पोषण संबंधी अंतर को पाटने को बढ़ावा देते हैं। हां, लोगों को अब भी इसके फायदे पर शक है।

पूरक आसानी से उपलब्ध हैं और कभी-कभी नुस्खे की भी आवश्यकता नहीं होती है। लेकिन एक विशेषज्ञ से परामर्श करें, एक मत बनो! हमारे व्यस्त कार्यक्रम में पोषण से भरपूर आहार के लिए कोई जगह नहीं है और हम गतिहीन जीवन शैली के साथ बहुत सहज हो गए हैं। जंक फूड, असंतुलित नींद की दिनचर्या, मानसिक तनाव और स्वास्थ्य की अनदेखी हमारे हृदय स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाती है। हालाँकि, हम इन सात सप्लीमेंट्स के साथ पोषण कोटा पूरा कर सकते हैं :

ओमेगा -3 फैटी एसिड :

ये पूरक ट्राइग्लिसराइड्स (शरीर में सबसे आम प्रकार की वसा), सूजन, स्ट्रोक और अन्य हृदय स्थितियों को कम करने में चमत्कारिक रूप से काम करते हैं। अखरोट, चिया बीज, मछली, अलसी का तेल और कनोला तेल जैसे खाद्य पदार्थ ओमेगा 3 फैटी एसिड के समृद्ध स्रोत हैं। इन वस्तुओं को पर्याप्त मात्रा में जोड़ने के लिए एक दिनचर्या को बनाए रखने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। यदि आहार के माध्यम से संभव न हो, तो ओमेगा 3 फैटी एसिड कैप्सूल लेना एक बढ़िया विकल्प है। यह कार्डियोवैस्कुलर कामकाज के रखरखाव और कोलेस्ट्रॉल के स्तर के नियमन में सहायता करता है।

मैगनीशियम :

एक अध्ययन के अनुसार मैग्नीशियम ब्लड प्रेशर को 12 प्वाइंट कम कर देता है। यह शरीर में लगभग 300 जैव रासायनिक प्रतिक्रियाओं के लिए जिम्मेदार 3 सूक्ष्म खनिजों (कैल्शियम और जस्ता के साथ) में से एक है। मैग्नीशियम की कमी से मांसपेशियों में संकुचन, ऐंठन, दौरे, असामान्य हृदय ताल, व्यक्तित्व परिवर्तन और कोरोनरी ऐंठन हो सकती है। काजू, बादाम, साबुत अनाज, फलियां, बीज और डेयरी उत्पाद मैग्नीशियम के कुछ समृद्ध स्रोत हैं।

कॉड लिवर तेल :

यह मछली के तेल का पूरक मानव शरीर को इसके कई लाभों के लिए प्रसिद्ध है। एंटीऑक्सिडेंट, स्वस्थ वसा और खनिजों से भरपूर, कॉड लिवर ऑयल हृदय रोगों के जोखिम कारकों को कम करने में मदद कर सकता है। पूरक सूजन को कम करने और यकृत वसा को कम करने में बहुत योगदान दे सकता है। यह भी कहा जाता है कि कॉड लिवर ऑयल स्वस्थ हड्डियों और दांतों के विकास और रखरखाव में उत्कृष्ट है। ये अक्सर स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं द्वारा सुझाए जाते हैं और यही इनका सेवन करने का सही तरीका है। बिना प्रिस्क्रिप्शन या डॉक्टर की सलाह के सप्लीमेंट न लें।

फोलेट (फोलिक एसिड) :

ऐसा कहा जाता है कि फोलिक एसिड (विटामिन बी) कई लोगों में दिल के दौरे और स्ट्रोक के जोखिम को कम करता है। सब्जियां, बीन्स और खट्टे फल फोलेट के बेहतरीन स्रोत हैं। पूरक कई खाद्य पदार्थों में स्वाभाविक रूप से मौजूद होता है लेकिन कैप्सूल या अन्य के रूप में यह आपकी दिनचर्या का हिस्सा हो सकता है। यदि आप पहले से ही कुछ दवाएं, उपचार या उपचार ले रहे हैं, तो फोलिक एसिड का सेवन प्रभावी नहीं हो सकता है। खुराक शुरू करने से पहले बेहतर होगा कि आप किसी विशेषज्ञ से बात कर लें।

अंगूर के दाने का रस :

यदि आपको उच्च रक्तचाप का निदान किया जाता है, तो अंगूर के बीज का अर्क आपकी दिनचर्या में शामिल करने के लिए बिल्कुल सही है। यह एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होता है और रक्तचाप को कम करता है। एक अध्ययन के अनुसार, अगर आपको लक्षण हैं या आप प्री-हाइपरटेंशन से पीड़ित हैं, तो लगभग 100 मिलीग्राम से 800 मिलीग्राम तक अंगूर के बीज का अर्क 8-16 सप्ताह तक हर दिन रक्तचाप को बनाए रखने में मदद कर सकता है।

मल्टीविटामिन :

स्कर्वी, बेरीबेरी, पेलाग्रा और रिकेट्स विटामिन की कमी के कुछ उत्कृष्ट उदाहरण हैं। जबकि विकासशील देशों में कुपोषण एक मूक अपराधी है, मल्टीविटामिन की खुराक एक बड़ा अंतर ला सकती है। बहुत सारे फल, सब्जियां, साबुत अनाज, प्रोटीन और अधिक से युक्त भोजन अच्छा होता है लेकिन कभी-कभी पर्याप्त नहीं होता है। कार्डियोवैस्कुलर बीमारियों जैसी पुरानी स्थितियों से पीड़ित व्यक्ति के लिए आवश्यक पोषण पर विचार करने में पहले ही देर हो चुकी है; हालांकि, आप परेशानी से बचने के लिए कम उम्र से ही इन सप्लीमेंट्स का सेवन शुरू कर सकते हैं।

अश्वगंधा :

हाई ब्लड प्रेशर वाले लोगों को शांत करने वाले खाद्य पदार्थों की सख्त जरूरत होती है। जबकि ये हमेशा पर्याप्त नहीं होते हैं, अश्वगंधा युक्त पूरक मस्तिष्क को शांत करते हैं, सूजन कम करते हैं, रक्तचाप कम करते हैं और प्रतिरक्षा प्रणाली को बदलने में मदद करते हैं। अश्वगंधा का उपयोग सदियों से किया जा रहा है और यह किसी भी प्रकार के शारीरिक और मानसिक तनाव को कम करने में आश्चर्यजनक रूप से काम करता है। इन दिनों, अश्वगंधा प्रीमियम पेय पदार्थों में भी एक प्रमुख चाय संस्करण बन गया है। हृदय स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए इसे कई तरह से शामिल किया जा सकता है।

आप की बात

कट्टरपंथियों की पराजय

दो रूढ़िवादी पूर्व राष्ट्रप्रधानों का राजनीतिक कैरियर का अंत क्या एक ही समय में होने जा रहा है? अमेरिका एवं ब्रिटेन की नई घटनाओं से तो ऐसा ही कुछ प्रतीत हो रहा है। ब्रिटेन के पूर्व प्रधान मंत्री बोरिस जॉनसन एवं अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के राजनीतिक सफर का अंत शुरू हो चुका है। बोरिस जॉनसन को सांसद पद से इस्तीफा देना पड़ा । उन्होंने इस्तीफे में जिस भाषा का प्रयोग किया ठीक वैसी ही प्रतिक्रिया डोनाल्ड ट्रम्प की भी है। दोनों का कहना है कि उनके खिलाफ यह कार्रवाई राजनीतिक द्वेष से की जा रही है या उनको जानबूझकर निशाना बनाया जा रहा है। यह एक प्रकार का विचहंट है। अमेरिका में घोषणा हुई कि गोपनीय दस्तावेज़ मामले में ट्रंप पर जासूसी एक्ट के तहत मुकदमा चलेगा। इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता है कि कट्टरपंथी ट्रंप व जान्सन ने अपने अपने देश की राजनीति में व्यापक उथलपुथल पैदा की थी। ऐसे में ट्रंप के रिपब्लिकन पार्टी से राष्ट्रपति उम्मीदवार बनने की संभावना बहुत क्षीण हो गई है। देखना होगा कि दुनिया के महत्वपूर्ण लोकतंत्रों में यह कट्टरपंथियों की पराजय है अथवा वे बदलती परिस्थितियों में किसी नए रूप में दुनिया के सामने आने में सफल होते हैं।

– **जंग बहादुर सिंह,** जमशेदपुर

मधुमेह की मार

देश में डायबिटीज या मधुमेह के मरीजों की संख्या 10 करोड़ से ऊपर हो गई है और गत 3 वर्षों में इनमें 44 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। हेल्थ जरनल लाइसेंट की यह रिपोर्ट अलर्ट करने वाली है। देश में इतनी बड़ी तादाद में मधुमेहियों का होना और इससे अधिक संख्या में नए लोगों के डायबिटिक होने का खतरा चेतावनी देते हैं कि यदि समय रहते स्थिति पर कंट्रोल नहीं किया गया तो भविष्य में डायबिटीज से होने वाली बीमारियों से होने वाले किडनी व अन्य प्रकार के गंभीर रोगों के मरीजों की बड़ी संख्या देश में तैयार हो जाएगी। भारतीय खानपान में मिठाइयां व मीठे पेय अत्यधिक लोकप्रिय हैं। उसके ऊपर फैशनेबल ड्रिंक पीना फैशन बन गया है । आज के युवा विभिन्न व्यर्थ गतिविधियों में व्यस्त रहने के कारण टहलना, दौड़ना और व्यायाम करना तो लगभग भूल ही चुके हैं। वे अपने खान-पान में शुगर व नमक जैसी वस्तुओं में कमी करना भी पसंद नहीं करते हैं। फास्ट फूड इस स्थिति को गंभीर बनाने में सहायक हैं। ऐसे में मधुमेह पर नियंत्रण तथा स्वस्थ जीवनशैली व खानपान अपनाने के लिए व्यापक अभियान की जरूरत है जिसमें सबकी सहभागिता सुनिश्चित की जानी चाहिए।

– **सुभाष बुड़ावन वाला,** रतलाम

सुरक्षा की चिन्ता

हाल में मुख्तार अंसारी के करीबी साथी माहेश्वरी की लखनऊ की अदालत में सरेआम गोलियों से भून दिया गया। इसी तरह पूर्व में पुलिस सुरक्षा में जा रहे अतीक और उसके भाई की हत्या हुई है। भारतीय जेलों में भी अपराधियों की हत्या हुई तथा सर्वाधिक सुरक्षित तिहाड़ जेल में भी हत्या हुई है। इसके अतिरिक्त अन्य शहरी में भी अपराधियों की हत्याएं होने से पुलिस बदनाम हो रही है। पहले अपराधियों के खिलाफ गवाही देने वाले गवाहों की हत्या होना चर्चा का विषय बनता था, पर अब स्थिति शायद ज्यादा गंभीर हो गई है। यदि इसी तरह से हत्याओं का सिलसिला जारी रहा तो गवाही देने, आत्मसमर्पण करने, जेल में रहने या सुरक्षा कर्मियों के साथ जाने से भी लोग डरने लगेंगे। यह स्थिति न्यायालय और जजों की सुरक्षा पर भी सवाल खड़े कर रही है। हालांकि, सरकार ने अदालतों की सुरक्षा और कड़ी करने के निर्देश दिए हैं, पर देश में सुरक्षित माहौल देने के लिए ज्यादा गंभीर व व्यापक प्रयासों की जरूरत है। इसमें सीसीटीवी कैमरों के संजाल, पुलिस की अधिक उपस्थिति तथा निजी हथियारों पर कठोर नियंत्रण, आदि उपाय शामिल हैं।

– **बी एल शर्मा,** उज्जैन

नशे की लत

मानव समाज की विडंबना है कि प्रकृति के अन्य सभी प्राणियों के मुकाबले सर्वाधिक समझदार होने के बावजूद यही एक ऐसा प्राणी है जो अपनी मौत को अपने हाथों से गले लगाता है। धूम्रपान, शराब, ड्रग्स, आदि के बारे में सब जानते हैं कि ये कैंसर जैसे घातक रूप से लेकर कई तरह के रोग न सिर्फ सेवन करने वाले को देती हैं, बल्कि उसके आसपास रहने वाले व परिवार के लोग भी इससे प्रभावित होते हैं। आधुनिकता के नाम पर स्कूल कॉलेज के स्टूडेंट्स न सिर्फ लड़के बल्कि लड़कियां भी हुक्का बार और ऐसे ही अन्य धूम्रपान वाली जगह पर नियमित रूप से जाकर इनका सेवन करते हैं। एक बार उनकी लत लग जाने के बाद आजीवन इन से पीछा छुड़ाना मुश्किल होता है। इनका लती आदमी जीवन में कुछ भी परिश्रम पूर्वक कार्य व जिम्मेदारी का कार्य नहीं कर पाते हैं। वे न सिर्फ अपने परिवार पर और समाज पर, बल्कि देश पर भी बोझ बनकर जीते हैं। हर प्रकार के नशे की लत से मुक्ति के लिए न केवल सरकार, बल्कि समाज, परिवार तथा संस्थाओं के स्तर पर व्यापक प्रयास जरूरी हैं।

– **विभूति बुपक्या,** खाचरोद

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते है।

प्रदेश में भाजपा लक्ष्य 80 प्राप्त करेगी: भूपेन्द्र सिंह चौधरी

● महाजनसम्पर्क अभियान मिशन 2024 के पूर्व की तैयारी है: धर्मपाल सिंह

● राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा की 27 जून को श्रावस्ती व केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह 29 जून को बिजनौर में करेंगे जनसभा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार के नौ साल पूर्ण होने पर भारतीय जनता पार्टी द्वारा पूरे प्रदेश में जनसभाएं आयोजित की जा रही है। पार्टी द्वारा 30 मई से शुरू किए गए महा जनसम्पर्क अभियान में अभी तक सम्पन्न हुए कार्यक्रमों की समीक्षा एवं आगामी कार्यक्रमों व लोकसभा क्षेत्रों में होने वाली जनसभाओं की तैयारियों को लेकर पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी और पार्टी के प्रदेश महामंत्री संगठन धर्मपाल सिंह ने वर्चुअल माध्यम से बैठक कर आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए मार्गदर्शन किया। वर्चुअल बैठक में महा जनसम्पर्क अभियान के कलस्टर प्रमुख, सांसद, विधायक, प्रदेश के पदाधिकारी, क्षेत्रीय अध्यक्ष, जिलाध्यक्ष, जिला प्रभारी सहित अभियान से जुड़े पार्टी पदाधिकारी सम्मिलित हुए।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार के नौ वर्षों में देश का चहुंमुखी विकास हुआ और गरीब, वंचित वर्ग मूलभूत सुविधाओं से आच्छादित हुआ। उन्होंने कहा कि मोदी के रूप में देश को प्रधानसेवक मिला, जिन्होंने पुराने ढर्रे को बदल कर सरकार की योजनाओं को गरीब केन्द्रित किया। जिससे सिस्टम में व्याप्त लीकेज बंद होकर भ्रष्टाचार पर लगाम लगी। आज देश की जनता का आशीर्वाद तथा मजबूत समर्थन मोदी जी को लगातार काम करने की शक्ति दे रहा है। उन्होंने बैठक में कहा कि भाजपा परम्परागत रूप से अपनी सरकार के काम.काज को विनम्रता से लोक दरबार में लेकर जाती है। इसी परम्परा के अनुसार फिर एक बार महा जनसम्पर्क अभियान के माध्यम से विभिन्न कार्यक्रमों के तहत मोदी सरकार की उपलब्धियां जनता के बीच लेकर जाना है। कार्यक्रमों के साथ जनता का जुड़ाव और कार्यकर्ताओं का उत्साह यह बता रहा है कि भाजपा प्रदेश में लक्ष्य 80 अवश्य प्राप्त करेगी।

प्रदेश महामंत्री संगठन धर्मपाल सिंह ने वर्चुअल बैठक में कहा कि महा जनसम्पर्क अभियान मिशन 2024 के पूर्व की तैयारी है। अभियान के तहत प्रत्येक संसदीय क्षेत्र में जनसभाओं के माध्यम से मोदी सरकार की उपलब्धियां लेकर भाजपा जनता के दरबार में पहुंचेगी। पार्टी के वरिष्ठ नेता जनसभाओं को सम्बोधित करेंगे। उन्होंने कहा चुनाव से पूर्व चुनाव की तैयारी करके भाजपा कार्यकर्ता विजय के लिए उर्वरा भूमि तैयार करना जानते है। उन्होंने कहा कि पार्टी द्वारा आयोजित की जा रही जनसभाओं में समाज के सभी वर्गों की सहभागिता हो इसके लिए हमें योजनापूर्वक कार्य करना होगा।

पार्टी के प्रदेश महामंत्री संजय राय ने बताया कि पार्टी द्वारा महासम्पर्क अभियान के अन्तर्गत प्रत्येक लोकसभा क्षेत्र में प्रेस कान्फ्रेस, सोशल मीडिया संवादए प्रबुद्ध सम्मेलन व्यापारी सम्मेलन, वरिष्ठ कार्यकर्ता बैठक, टिफिन बैठक, संयुक्त मोर्चा के सम्मेलनों के बाद अब सार्वजनिक सभाएं भी प्रारम्भ हो चुकी है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा की 27 जून को श्रावस्ती व केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह 29 जून को बिजनौर में जनसभा प्रस्तावित है। उन्होंने बताया कि लोकसभा क्षेत्रों में हो रही जनसभाओं को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी, उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य व ब्रजेश पाठक सहित केन्द्रीय मंत्रिगण व पार्टी के वरिष्ठ नेता सम्बोधित करेंगे।

राय ने बताया कि महासम्पर्क अभियान के अर्न्तगत अभी तक गौतमबुद्ध नगर, फिरोजाबादए मिश्रिख, गोण्डा में जनसभाएं सम्पन्न हो चुकी है। लखनऊ बहराइच, एटाए खीरी और कैसरगंज लोकसभा क्षेत्रों की जनसभा रविवार को सम्पन्न हुई। उन्होंने बताया कि सोमवार 12 जून को सीतापुर, बाराबंकी, श्रावस्ती, प्रतापगढ, हाथरस और देवरिया में जनसभाएं होगी। राय ने बताया कि महासम्पर्क अभियान के अर्न्तगत आयोजित किये जा रहे प्रत्येक कार्यक्रम में समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों को बड़ी संख्या में सहभागिता हो रही है।

अन्तर्राष्ट्रीय बाल श्रम निषेध दिवस पर कार्यक्रम आज

लखनऊ। अन्तर्राष्ट्रीय बाल श्रम निषेध दिवस के अवसर पर सोमवार12 जून को इन्दिरा गांधी प्रतिष्ठान में सायं 04 बजे से नया सवेरा योजना से आच्छादित जनपदों के चिन्हित हॉट.स्पॉटों ग्राम पंचायत, शहरी वार्ड को बाल श्रम मुक्त घेषित किए जाने एवं यूपी भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड की योजनाओं से लाभान्वित कामकाजी बच्चों के परिवारों व बाल श्रमिक विद्या योजना के लाभार्थियों को हितलाभ वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इस कार्यक्रम में प्रदेश के श्रम एवं सेवायोजन मंत्री अनिल राजभर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। इसके अलावा कार्यक्रम में श्रम एवं सेवायोजन राज्य मंत्री मनोहर लाल मन्नू कोरी, अध्यक्षए यूपी भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार राज्य परामर्शदात्री समिति यूपी ठा. रघुराज सिंह भी मौजूद रहेंगे।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कैलाश मठ वाराणसी में 102 वर्षीय महामंडलेश्वर स्वामी रामचंद्र गिरी से मुलाकात कर उनकी कुशलक्षेम पूछी

दुग्ध उत्पादकों को सरकार गांव में ही उपलब्ध कराएगी बाजार

● एक हजार करोड़ की लागत से की नंद बाबा दुग्ध मिशन की हो रही शुरुआत

लखनऊ। प्रदेश को दुग्ध विकास के क्षेत्र में नई ऊंचाई पर ले जाने के साथ ही दुनिया में दुग्ध उत्पादन में नए कीर्तिमान गढ़ने को प्रतिबद्ध योगी सरकार ने एक हजार करोड़ की लागत से नन्द बाबा दुग्ध मिशन की शुरुआत कर दी है। मिशन के तहत गावों में ही दुग्ध सहकारी समितियां गठित कर दुग्ध उत्पादकों को गांव में ही उनके दूध के उचित मूल्य पर विक्रय की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। मिशन का उद्देश्य ग्रामीण दुग्ध उत्पादकों को उचित बाजार उपलब्ध कराने के साथ ही प्रति पशु प्रतिदिन दुग्ध उत्पादकता को बढ़ाने समेत प्रिसिजन डेरी फॉर्मिंग को बढ़ावा देना है। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा उत्तर प्रदेश के डेयरी सेक्टर को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने की है। इसके लिए युद्धस्तर पर किए गए कार्यों का ही परिणाम है कि फरवरी माह में आयोजित यूपी ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट.23 के माध्यम से दुनिया के नामचीन निवेशकों ने डेयरी क्षेत्र में हजारों करोड़ के निवेश प्रस्ताव पर सहमति जतायी है। इसी वर्ष ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी में इनमें से कई निवेशक प्रदेश में अपनी परियोजनाओं को धरातल पर भी उतारते नजर आएंगे।

दुग्धशाला विकास विभाग के आयुक्त शशि भूषण लाल सुशील ने बताया कि उत्तर प्रदेश देश का अग्रणी दुग्ध उत्पादक राज्य है। पूरे देश में 221 मिलियन मीट्रिक टन दुग्ध का उत्पादन होता हैए जबकि अकेले उत्तर प्रदेश में 33 मिलियन मीट्रिक टन दुग्ध का उत्पादन होता है। वहीं देश में 444 ग्राम प्रतिदिन प्रति व्यक्ति दुग्ध की उपलब्धता हैए जबकि प्रदेश में 392 ग्राम प्रतिदिन प्रति व्यक्ति दुग्ध उपलब्धता है। प्रदेश में दुग्ध संग्रह के क्षेत्र में 21 प्रतिशत संगठित क्षेत्र और 79 प्रतिशत असंगठित क्षेत्र की सहभागिता है। ऐसे में सीएम योगी की मंशा के अनुरूप प्रदेश के डेयरी क्षेत्र को वैश्विक पहचान दिलाने के लिए नन्द बाबा मिशन के तहत विभिन्न इश्यूज पर काम किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्र में दुग्ध उत्पादकों के पास बाजार की उपलब्धता कम हैए जिसे बढ़ाया जाएगा। इसी तरह वैल्यू एडेड एनिमल फीडध्फॉडर एवं आर्गनाइज्ड एनिमल फीड मैन्युफैक्चरिंग यूनिट की संख्या को बढ़ाया जाएगा। इसके साथ ही प्रदेश में अन्य राज्यों की तुलना में जो प्रति पशु प्रतिदिन दुग्ध उत्पादकता कम हैए इस पर फोकस किया जाएगा। मिल्क प्रोसेसिंग व प्रिसिजन डेरी फार्मिंग में अपेक्षित कौशल के अभाव को दूर किया जाएगा। उचित मूल्य पर प्रसंस्कृत दुग्ध व दुग्ध उत्पादों की उपलब्धता को बढ़ाया जाएगा। दुग्ध प्रसंस्करण में संगठित क्षेत्र की सहभागिता को भी युद्धस्तर पर बढ़ाया जाएगा।

दुग्ध आयुक्त एवं मिशन निदेशक ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने योजना का नाम नन्द बाबा पर रखा है। उनके अनुसार प्रदेश में नन्द बाबा विश्व के सबसे बड़े उत्कृष्ट गौ पालक, दुग्ध संग्रहकए सर्वश्रेष्ठ माखन उत्पादक एवं भगवान श्री कृष्ण के पालक थे। उनके पास 9 लाख गाय थीं। उन्होंने लोगों को अपनी जीविका चलाने के लिए 2 लाख गायों को दान किया था। साथ ही वह सर्वश्रेष्ठ दुग्ध उत्पादकए संग्रहकए प्रसंस्कर्ता एवं उपभोक्ता भी थे। इसी सब को ध्यान में रखकर योजना का नाम नन्द बाबा दुग्ध मिशन रखा गया है। मिशन का उद्देश्य गौ से ग्राहक तक पहुंचने का है। इसके तहत मूल्य श्रृंखला से उत्पादन.संग्रहण.प्रसंस्करण.उपभोक्ता तक पहुंचना है। मिशन के तहत दुग्ध उत्पादकता में वृद्धि करनाए दुग्ध

अभिलेख प्रबंधन व संरक्षण प्रशिक्षण आज से

लखनऊ। राजकीय अभिलेखाकार लखनऊ में 12 जून से 17 जून 2023 तक अभिलेख प्रबंधन एवं संरक्षण विषयक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जनपदों के जिलाधिकारी कार्यालयों के अभिलेख कक्षों में कार्य करने वाले लगभग 100 प्रभारी, कर्मचारी शामिल होंगे। यह जानकारी निदेशक अभिलेखागार उमा द्विवेदी ने रविवार को दी। उन्होंने बताया कि 12 जून 2023 को पूर्वान्ह 11 बजे प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ किया जायेगा। इस अवसर पर अरूण सिंघल महानिदेशक राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्लीए भारत सरकारए प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति मुकेश कुमार मेश्राम, विशेष सचिव संस्कृति अमरनाथ उपाध्याय, निदेशक संस्कृति शिशिर के अलावा अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहेंगे।

परीक्षाओं के पेपर लीक होने का रिकॉर्ड बना रही सरकार: खाबरी

लखनऊ। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पूर्व सांसद श्री बृजलाल खाबरी ने कहा कि मुख्यमंत्री आज अपने भाषणों में कह रहे हैं कि 15 लाख नौकरियां देंगे, जिसमें एक लाख सरकारी और 14 लाख प्राइवेट सेक्टर में। सच्चाई यह है कि प्रदेश में 45 साल में सबसे ज्यादा बेरोजगारी हैं और उसका प्रमुख कारण आपकी सरकार की नौजवान विरोधी नीतियां हैं। दो दर्जन से ज्यादा प्रतियोगी परीक्षाओं का पेपर लीक होने का सबसे बुरा रिकॉर्ड भी उत्तर प्रदेश सरकार के नाम पर दर्ज हो चुका है। युवाओं के भविष्य के साथ प्रत्येक स्तर पर खिलवाड़ करने में योगी सरकार सारी हदें पार कर चुकी है। प्रदेश अध्यक्ष खाबरी ने कहा कि प्रदेश का युवा सवाल पूछ रहा है कि मुख्यमंत्री पिछले 7 सालों में आपने कितनी सरकारी नौकरियां दी। नौजवान जब सूचना के अधिकार के तहत नौकरी की जानकारी मांगते हैं, तो सरकार उनको देने से मना कर देती है। जब युवा सड़क पर उतरते हैं तो उनको लाठियां से पिटवाती है। 2017 के विस चुनाव में पीएम ने शिक्षामित्र और अनुदेशकों से वादा किया था कि सभी को स्थाई करेंगे। 7 साल बीत चुके हैं, उन्हें तो स्थाई कर नहीं पाए और 15 लाख नौकरियों का नया जुमला फेंका जा रहा है। अनुदेशकों की हालत बद से बत्तर हो गई है, आज अनुदेशक सब्जी बेचने और मजदूरी करने के लिए मजबूर हैं। 600 से ज्यादा शिक्षामित्रों ने भाजपा सरकार की वजह से आत्महत्या कर ली लेकिन योगी सरकार की मानवीय संवेदनाएं अभी भी नहीं जागी। खाबरी ने कहा कि मुख्यमंत्री जी अब झूठ बोलना बंद करिएए जनता अब सब समझ रही हैए आपका यह झूठ और प्रपंच अब और अधिक दिनों तक नहीं चलने वाला।

राष्ट्रीय लोकदल के नेता कांग्रेस में शामिल

लखनऊ। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की नीतियों एवं उसकी समावेशी विचारधारा में आस्था रखते हुए रविवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर राष्ट्रीय लोकदल के प्रमुख नेताओं ने कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। प्रदेश अध्यक्ष पूर्व सांसद बृजलाल खाबरी ने सभी को कांग्रेस पार्टी की प्राथमिक सदस्यता ग्रहण कराई। राष्ट्रीय सचिव तौकीर आलम, प्रांतीय अध्यक्ष पूर्व मंत्री नसीमुद्दीन सिद्दीकी, विधायक प्रांतीय अध्यक्ष वीरेन्द्र चौधरी, प्रांतीय अध्यक्ष योगेश दीक्षित, प्रदेश महासचिव प्रभारी प्रशासन दिनेश कुमार सिंह, संगठन सचिव अनिल यादव प्रमुख रूप से मौजूद रहे। सदस्यता ग्रहण करने

वालों में लखीमपुर खीरी रालोद के पूर्व जिलाध्यक्ष लखीपुर खीरी सीमाब अहमद उर्फ चांद मियां, प्रदेश महासचिव ज्योति प्रकाश अग्रवाल, पंडित शिव प्रसाद द्विवेदी जिलाध्यक्ष लखीमपुर खीरी, खुर्शीद बेग ब्लाक अध्यक्ष अली अकबर एडवोकेट जिला महासचिव जनपद लखीमपुर, रामपाल सिंह यादव कार्यालय प्रभारी राष्ट्रीय लोकदल के साथ मो. असलम, मोईन खान एडवोकेट, आजाद खान, मोहम्मद इमरान, महफूज खान, चन्द्र प्रकाश बाजपेई, प्रकाश चन्द्र वर्मा, रामजी शाक्य, अजीत सिंह, प्रमोद कुमार आनंद कुमार आदि शामिल रहे।

भाजपा सरकार में दस गुना भ्रष्टाचार बढ़ा है: अखिलेश

● सबसे बड़ा घपला तो सड़कों को गड्ढा मुक्त करने के नाम पर भाजपा सरकार में हुआ है: सपा

लखनऊ। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार जो कहती है, वह करती नहीं और जो करती है वह कहती नहीं। मुख्यमंत्री बात जीरो टालरेंस की करते है लेकिन उनके संरक्षण में भ्रष्टाचार और अपराध को खुली छूट मिली हुई है। भाजपा सरकार में 10 गुना भ्रष्टाचार बढ़ गया है। सवा छह साल के कार्यकाल में भाजपा का असली काम यही है कि कागजों में सब चकाचक, विज्ञापनों में सब बेहतरीन और असलियत में बदहाल उत्तर प्रदेश है। अखिलेश ने कहा कि सबसे बड़ा घपला तो सड़कों को गड्ढा मुक्त करने के नाम पर भाजपा सरकार में हुआ है। 6 साल में इस मद में खूब पैसा जारी हुआ। तारीख पर तारीख देने के बावजूद सड़कें गड्ढा मुक्त तो हुई नहींए सड़कें जो बनी थीं वे भी उखड़ने लगी है। जनता का सारा पैसा भाजपा के नेता, मुख्यमंत्री के खास लोग और मंत्री, अधिकारी मिलकर हजम कर गए और डकार भी नहीं ली। जरा सी बारिश में ही सड़के मौत का कुआं बन जाती है।

नालों की सफाई के नाम पर लूट मची है।

जलभराव की दिक्कतें दूर करने के लिए भाजपा सरकार ने 15 जून की तारीख तय की पर अभी तक कई नालों की सफाई के आसार तक नहीं दिखे है। अखिलेश ने कहा कि लखनऊ में नालों की सफाई का हाल देखकर तो नई मेयर भी दंग रह गई है। हर साल बरसात से पहले नालों की सफाई का बजट ऐसे ही बह जाता है। भाजपा सरकार में बड़ी नदियां भ्रष्टाचार के कारण मैली हैं और छोटी नदियां संरक्षण के अभाव में सूख रही हैं।

नदी नालों और भ्रष्टाचार के संगम का परिणाम नदियों की दुर्दशा के रूप में सामने है। गंगा नदी की सफाई के नाम पर करोड़ों रूपए फूंक दिये गए। नाले पहले की तरह गंगा में गिर रहे हैं। कानपुर में बिठूर से लेकर जाजमऊ तक गंगा को निर्मल बनाने के लिए 13 अरब खर्च हुए पर गंगा मैली की मैली बनी है। अखिलेश ने कहा कि प्रयागराज में यमुना किनारे अवैध खनन का धंधा धड़ल्ले से चल रहा है। बड़ी-बड़ी प्रतिबंधित पोकलैण्ड मशीनों से बालू का खनन हो रहा है। अफसरए मंत्री, सांसद, विधायक सब भाजपा के हैं किन्तु ठेकेदार के काले कारनामों पर कोई रोक नहीं है।

अवैध धंधे पर प्रशासन ने भी आंखें मूंद ली हैं। अवैध खनन में लगे माफियाओं को किसी का डर नहीं है। उनकी दबंगई के आगे सभी पनाह मांगते हैं। अखिलेश ने कहा कि उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार में 'ईज ऑफडूइंग' का मतलब हत्या, बलात्कार, लूट और भ्रष्टाचार है। इन्वेस्टर समिट में क्या कट्टे तमंचे की सप्लाई और मैन्युफैक्चरिंग के एमओयू साइन किए गए थे, कौशल विकास के अन्तर्गत क्या अपराध की ट्रेनिंग दिलवाई जाती हैघ् व्यापारियों को सुरक्षा एवं सुविधा देने के बजाय उनसे वसूलीए फिरौती की छूट दी जाती है। अखिलेश ने कहा कि भाजपा राज में भ्रष्टाचार अब उजागर हो चला है। सवाल है कि मुख्यमंत्री जी की नाक के नीचे जो हो रहा है वह उन्हें क्यों नहीं दिखाई दे रहा हैघ् क्या उच्चस्तर पर संलिप्तता को प्रश्रय तो नहीं मिल रहा हैघ् मुख्यमंत्री जी को रटा रटाया जीरो टॉलरेंस वाला दावा क्यों नहीं याद आ रहा है।

पीपीपी मॉडल पर हर मंडल में खोले जाएंगे नए सैनिक स्कूल

लखनऊ। उप्र आबादी के लिहाज से देश का सबसे बड़ा राज्य तो है ही, सर्वाधिक युवाओं वाला प्रांत भी है। योगी सरकार के प्रयास से अब उत्तर प्रदेश के युवाओं के देश प्रेम के जज्बे एवं जुनून का रंग और चटक होगा। इसका जरिया बनेंगे वह सैनिक स्कूल जिनको खोलने का निर्णय योगी सरकार ने हाल में लिया है। इन स्कूलों से पढ़े युवाओं में फौज एवं अर्धसैनिक बलों में अफसर बनने की संभावना अधिक होगी। गाजीपुर स्थित एशिया के सबसे बड़े गांव गहमर की तो पहचान ही फौजियों के गांव के रूप में है। एक लाख 20 हजार आबादी वाले इस गांव के हर घर से कोई न कोई सेना या अर्द्धसैनिक बल में है। किसी किसी घर में तो यह तारतम्यता तीन पीढ़ियों से है। इसी तरह बस्ती के पचवस गांव को भी सैनिकों का गांव कहा जाता है। उत्तराखंड एवं हरियाणा से सटे इलाके में भी ऐसे कई गांव हैं जहां के लोग सेना और अर्धसैनिक बलों में बड़ी संख्या में हैं। जिस परीक्षा के द्वारा सेना के लिए अधकारियों का चयन होता है। वह बेहद प्रतिष्ठापरक होती है। उसमें बमुश्किल पूरे देश के कुछ सौ चुनिंदा कैडेट्स प्रशिक्षण के लिए चुने जाते हैं। इनमें आम तौर पर उत्तर प्रदेश के युवाओं की संख्या सबसे अधिक होती है। आंकड़े इस बात की तस्दीक करते हैं। मसलन इंडियन मिलिट्री एकेडमी ;आईएमएद्ध के इस साल के पासिंग आउट परेड में यह संख्या 63 है। जून 2022 में 50ए दिसंबर 2021 में 45ए जून 2021 में 66ए दिसंबर 2020 में 50ए जून 2020 में 66 रही। यह संख्या देश में सर्वाधिक है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की पहल यानी हर मंडल में सैनिक स्कूल की स्थापनाए से इस संख्या का आने वाले सालों में और बढ़ना अवश्यसंभावी है।

मौजूदा समय में उप्र में 4 सैनिक स्कूल हैं। इसमें से अमेठी, झांसी, मैनपुरी रक्षा मंत्रालय द्वारा और लखनऊ का सैनिक स्कूल प्रदेश सरकार द्वारा संचालित है। गोरखपुर के फर्टिलाइजर कारखाने में करीब 50 एकड़ रकबे में एक सैनिक स्कूल निर्माणाधीन है। अगले सत्र से यहां पढ़ाई भी शुरू हो जाएगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ हर मंडल में एक सैनिक स्कूल खोले जाने की घोषणा कर चुके हैं। घोषणा के मुताबिक आगरा, अलीगढ़, प्रयागराज, आजमगढ़, बस्ती, बरेली, मुरादाबाद, बाँदा, झांसी, देवीपाटन, अयोध्या, कानपुर नगर, मेरठ, सहारनपुर, मीरजापुर और वाराणसी में पीपीपी (पब्लिक, प्राइवेट पार्टनरशिप) मॉडल पर सैनिक स्कूल खोले जाएंगे।

योगी आदित्यनाथ जिस गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर हैं उस पीठ का शुरू से ही यह मानना रहा है कि शिक्षा संस्कार का जरिया बने। यह युवाओं को किताबी ज्ञान तक सीमित रखने की बजाय उनमें देश प्रेम का जज्बा और जुनून भी पैदा करे। यही वजह है कि 1932 में तत्कालीन पीठाधीश्वर ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ ने तब हर लिहाज से पिछड़े पूर्वांचल में शिक्षा का अलख जगाने के लिए जिस शिक्षा परिषद की स्थापना की उसका नाम महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद रखा। महाराणा प्रताप का देश प्रेम के प्रति जोशए जज्बा और जुनून जगजाहिर है। तमाम चुनौतियों के बावजूद उन्होंने अपने समय के सबसे ताकतवर सम्राट अकबर को लोहे के चने चबवा दिए। परिषद से जुड़े शिक्षण संस्थानों के बच्चों में भी प्रताप की तरह ही देश प्रेम का जोश, जज्बा और जुनून होए नामकरण के पीछे यही सोच थी।

विपक्षी पार्टियां देश में काले धब्बे के समान: ए.के. शर्मा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/लखीमपुर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के सेवाए सुशासन एवं गरीब कल्याण के 09 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में जनपद लखीमपुर खीरी के विलोबी मेमोरियल मैदान में भारतीय जनता पार्टी द्वारा आयोजित विशाल जनसभा में प्रदेश के नगर विकास एवं उर्जा मंत्री एके शर्मा बतौर मुख्य अतिथि शामिल होकर संबोधित किया और समर्थकों का मनोबल बढ़ाया। नगर विकास मंत्री एके शर्मा ने जनसभा को संबोधित करते हुए विपक्ष पर जोरदार हमला बोला। कहा कि विपक्षी पार्टियां देश में काले धब्बे के समान है। इन्होंने देश का बेड़ा गर्क कर दिया है। इन्होंने अपनी स्वार्थपूर्ण राजनीत के लिए देश का इतना नुकसान कियाए जितना कि शायद दुश्मन पड़ोसी देशों ने भी नहीं किया होगा। इन्होंने देश की अर्थव्यवस्थाए सुरक्षा को पूरी तरह से बर्बाद कर दिया। देश की प्रतिष्ठा, छवि को मिट्टी में मिला दिया था।

मंत्री एके शर्मा ने कहा कि वर्ष 2014 के बाद से प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में देश की प्रतिष्ठा बढ़ी और वैश्विक छवि बदली। देश में एक भी घोटाले नहीं हुए, जो पहले अरबों खरबों के घोटाले होते थे। आज जन धन खातों के माध्यम से पूरा पैसा गरीब के खाते में जाता है। आज नौजवानों को स्टार्टअप चलाने के लिए मुद्रा लोन मिल रहा। रेहड़ी, पटरी, ठेला, खोमचा वालों को स्वावलंबी बनाने के लिए स्वामित्व योजना से लोन मिल रहा। मोदी जी के नेतृत्व में देश आज विश्व की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है।

उन्होंने कहा कि पड़ोसी देश पाकिस्तान में लोग भूख से बिल्विला रहे हैं, वही मोदी ने कठिन परिस्थितियों में भी देश के 80 करोड़ गरीबों को राशन दे रहे। पूर्ण सुविधा वाले प्रधानमंत्री आवास करोड़ों गरीबों को दिए गए। वर्ष 2017 के बाद प्रदेश में ही 17 लाख से अधिक आवास दिए गए, जबकि इसके पहले की सरकार ने मात्र 17 हजार पात्रों की लिस्ट केंद्र को भेजी थी।

उन्होंने कहा कि शहर.शहर, गली.गली आज जो साफ़ . सफाई दिखती है, इसके लिए माननीय

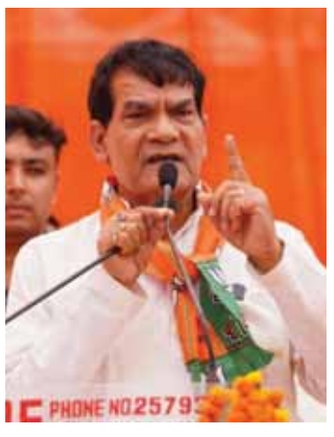

प्रधानमंत्री ने स्वच्छ भारत अभियान के तहत स्वयं झाड़ू लेकर निकले थे और गली.कूचों की साफसफाई की थी। उन्होंने कहा कि कभी प्रदेश में कुछ गिने.चुने गांवो, जिलों में बिजली आती थ। आज पूरे प्रदेश में सभी को समान रूप से बिजली मिल रही। मोदी जी ने प्रदेश के सवा लाख मजरों का विद्युतीकरण कराया। आज प्रदेश रोशनी से जगमग है। सभी के जीवन में से अंधेरा छटकर रोशनी आ रही है।

मंत्री ने कहा कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने की अपील मोदी जी ने लाल किले के प्राचीर से किया था, जिसमें देश आगे बढ़ रहा है। कोरोना के दौरान तमाम चीजों का देश में निर्माण किया गया। कोरोना वैक्सीनए किटए मास्क को बनाकर विदेशो में निर्यात भी किया गया। उन्होंने कहा कि वर्ष 2014 से पहले सेना की आयुध सामग्री के साथ सैनिकों के जूतेए मोजेएवर्दी भी विदेश से मंगाए जाते थे क्योंकि इसमें मोटा कमीशन मिलता था। लेकिन आज आगरा में सैनिकों के जूते बन रहे है। वहीं बुंदेलखंड क्षेत्र में डिफेंस इंडस्ट्रियल कॉरिडोर बन रहा, जहां पर सेवा के हेलीकॉप्टर, फाइटर जेट व आयुध सामग्री बनाए जाएंगे।

जनपद लखीमपुर खीरी में भारतीय जनता पार्टी द्वारा आयोजित विशाल जनसभा में नगर विकास मंत्री ए.के. शर्मा को सुनने हजारों की संख्या आयी जनता ने मंत्री का जोरदार स्वागत और अभिवादन किया। कार्यक्रम में केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री अजय कुमार मिश्र व भाजपा जिलाध्यक्ष सुनील सिंह, एमएलसी अनूप गुप्ता आदि वरिष्ठ पदाधिकारी एवम् हजारों समर्थक उपस्थित रहे।

मोदी सरकार के नौ साल पूरे होने पर गिनाई गईं उपलब्धियां

संवाददाता। लखीमपुर खीरी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 09 साल सेवा, सुशासन एवं गरीब कल्याण के पूर्ण होने के उपलक्ष्य में केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय कुमार मिश्रा एवं मुख्य अतिथि अरविन्द कुमार शर्मा, कैबिनेट मंत्री, नगर विकास एवं उर्जा मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा एक विशाल जनसभा विलोबी मेमोरियल प्रांगण में आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारम्भ माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री अजय कुमार मिश्रा, अरविन्द कुमार शर्मा, कैबिनेट मंत्री, नगर विकास, उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा दीप प्रज्जवलन कर किया।

कार्यक्रम को मुख्य अतिथि के रूप में अरविन्द कुमार शर्मा, कैबिनेट मंत्री, नगर विकास ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जिनके सर पर छत नहीं थी उन्हें प्रधानमंत्री आवास योजना से लाभान्वित करते हुए छत दी एवं ग्रामीण इलाकों में स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत शौचालयों से लोगों को लाभान्वित किया। आज हम विश्व की सबसे बड़ी पांचवीं अर्थव्यवस्था बन करके उभरे है। इतना ही नहीं कोरोना हालात में बड़े देश के व्यवसाई इस हालात से उभर नहीं पाए है मगर भारत जैसा देश कोरोना काल से निकल करके अपना नाम करके उन बड़े देशों में सबसे तेज गति से विकसित करने वाली सूची में आ गया है। अगर माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जैसे भारत देश के प्रधानमंत्री न होते तो देश के हालात पाकिस्तान जैसे हो जाते। प्रधानमंत्री ने जहां देश में कोविड .19 के दौरान देशवासियों को नि:शुल्क टीकाकरण कराकर जान की सुरक्षा की वहीं कई देशों में भी इसकी आपूर्ति कर वहां के नागरिकों की भी जान की रक्षा की। इसके साथ ही उन्होने कहा कि जहां पूर्व में भारत देश के सैनिकों के लिए उपयोग होने वाली सारी सामग्री विदेश से मंगाई जाती थी जिसमें कमीशन खाया जाता था वहीं मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद सारी सामग्री देश में ही निर्मित होने लगी। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री अजय कुमार मिश्रा ने कहा कि नौ वर्ष का काम करने का ख्वाब वही देखता है कि हमने पिछले नौ वर्ष में क्या किया निश्चित रूप से हमको नौ साल पीछे जाना पड़ रहा है एक समय था जब 2014 का लोकसभा चुनाव पूरे देश में हुआ था पूरे देश में हताशा और निराशा का वातावरण बीत रहा था। जबकि 2004 से 2014 के बीच में हमारे देश में एक ऐसी सरकार रही थी जिसने न केवल विकास की गति को मन्द किया था उसकी पहचान जब भी होती थी तो भ्रष्टाचार से होती थी लोगों के मन में इस तरह की बातें थी कि कैसे ये देश चलेगा कि कैसे ये देश आगे बढ़ेगा और जो लोकसभा का चुनाव हो रहा था तो भारतीय जनता पार्टी ने श्री नरेन्द्र मोदी जी को अपनी पार्टी की तरफ से प्रधानमंत्री पद का प्रत्याशी घोषित किया। जैसे ही उनको प्रधानमंत्री पद का प्रत्याशी घोषित किया गया तभी लोगों ने कमल के फूल पर मोहर लगाकर भारी मतों से भारतीय जनता पार्टी की सरकार पूरे देश में बनाने का कार्य किया। जब यह सरकार बनी तो देश की स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं थी देश में 67 साल बीत जाने के बाद भी आम लोगों की सामान्य जरूरतें पूरी नहीं हो पा रही थी। आम लोगों के पास घर नहीं थे स्कूलों में पढ़ाई नहीं होती थी अस्पतालों में सही से इलाज नहीं होता था। हमारे प्रधानमंत्री जी ने भारतीय जनता पार्टी का जो मार्गदर्शन है वो राष्ट्रीय है उसी को आधार बना करके उन्होंने काम करना शुरू किया लक्ष्यों को तय किया लक्ष्यों को तय करने के लिए रास्तों पर सर्वे किया, योजनाएं बनाई, विकास के लिए माहौल तैयार हो इसके लिए समयबद्ध तरीके से लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके इसके लिए उन्होंने कठिन परिश्रम को आधार बनाया।

इस अवसर पर जिलाध्यक्ष सुनील सिंह, एमएलसी अनूप गुप्ता, सदर विधायक योगेश वर्मा, विधायक श्रीनगर मंजू त्यागी, विधायक गोला गोकर्णनाथअमन गिरि, विधायक पलियाकलां रोमी साहनी, विधायक धौरहरा विनोद शंकर अवस्थी, आशू मिश्रा जिला महामंत्री, जिला सहकारी बैंक अध्यक्ष विनीत मनार, ब्लाक प्रमुख फूलबेहड़ विश्वनाथ सिंह, पवन गुप्ता ब्लाक प्रमुख नकहा, बीना राज ब्लाक प्रमुख बेहजम, केबी गुप्ता, अध्यक्ष नगर पालिका परिषद पलिया, विजय शुक्ला प्रिंकूष् अध्यक्ष नगर पालिका परिषद गोला गोकर्णनाथ, कीर्ति महेश्वरी अध्यक्ष नगर पंचायत मैलानी, बद्री प्रसाद मौर्य अध्यक्ष नगर पंचायत निघासन, सांसद प्रतिनिधि अरविन्द सिंह 'संजय', सांसद प्रतिनिधि जितेन्द्र त्रिपाठी 'जीतू', सांसद प्रतिनिधि संजय मिश्रा, सांसद प्रतिनिधि मुन्ना लाल अवस्थी, सांसद प्रवक्ता अम्बरीष सिंह, किरन अग्रवाल, कुलभूषण सिंह, रश्मि गुप्ता, रचना शुक्ला, अभिषेक सिंह, मंजुलता श्रीवास्तव, प्रवीण भार्गव, कन्हैया गुप्ता, शत्रोहन लाल तिवारी उर्फ भैया लाल, अटल बिहारी बाजपेई, वीरपाल मिश्रा, आचार्य अनूप मिश्रा सहित भारी संख्या में लोग मौजूद रहे।

यूपी में दूसरा मंदिर होगा भगवान कल्कि का, 23 को होगी स्थापना

संवाददाता। बरेली

● 23 जून को प्रमोद कृष्णम बरेली में, यह है उनका है विशेष कार्यक्रम, संभल के बाद बरेली में कल्कि भगवान की स्थापना

आगामी 23 जून शुक्रवार 2023 को श्री शिरडी साई खाटूश्याम सर्बदेब मंदिर श्यामगंज मे भगवान कल्कि की स्थापना कार्यक्रम में कल्कि पीठाधीश्वर आचार्य प्रमोद कृष्णम मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होंगे। इस संबंध में बरेली में आने की खुद एक पत्र भेजकर कार्यक्रम में आने की पुष्टि की है।पंडित सुशील पाठक ने बताया श्री शिरडी साईं सर्व देव मंदिर में शीघ्र ही मंदिर के आधार देव श्री लक्ष्मी नारायण भगवान की प्रेरणा से कलयुग के होने वाले अवतार श्री कल्कि महाराज के विग्रह (देव प्रतिमा) की स्थापना की जाएगी। इस संबंध में महंत पंडित सुशील पाठक ने बताया प्रदेश संभल जिले के बाद बरेली में कॅल्कि महाराज की देव प्रतिमा की स्थापना 23 जून को की जाएगी। इस कार्यक्रम में कल्कि पीठाधीश्वर आचार्य प्रमोद कृष्णम मुख्य अतिथि होंगे । विग्रह कर मंदिर निर्माणाधीन है। उन्होंने बताया कि श्रीमद् भागवत पुराण में स्पष्ट वर्णन है कि कलयुग की बढ़ती करत्तियो के निदान हेतु स्वयं के आध्यात्मिक संवर्धन हेतु कल्कि महाराज की विग्रह स्थापित किया जा रहा है। ताकि उनकी पूजा-अर्चना की जा सके। वैसे भी मंदिर प्रबंधन शतत धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक सेवाओं में रत रहा है।

महिलाओं व बालिकाओं को किया गया जागरुक

संवाददाता। लखीमपुर खीरी

● 65 लोगों को किया गया गिरफ्तार

मिशन शक्ति अभियान के अंतर्गत एण्टीरोमियों स्कवॉड द्वारा निरन्तर महिलाओंध्बालिकाओं को जागरुक करने के साथ ही टीम द्वारा 32ए028 स्थानों पर लगभग 1,03,539 व्यक्तियों को चेक कर 50 अभियोग पंजीकृत कर 65 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। साथ ही जनपद खीरी पुलिस द्वारा चलाए जा रहे 'गुड मॉर्निंग खीरी पुलिस' अभियान में गुड मॉर्निंग टीम द्वारा 11 पारिवारिक व 04 अन्य विवादों का सफ्ल निस्तारण कराया गया।

उप्र. शासन की मंशा के अनुरुप जनपद खीरी में पुलिस अधीक्षक गणेश प्रसाद साहा के निर्देशन में शिमशन शक्तिश् अभियान के अन्तर्गत महिलाओंध्बालिकाओं के विरुद्ध घटित होने वाले अपराधों एवं उनके उत्पीड़न की रोकथाम हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में जनपद खीरी के विभिन्न थानों पर गठित एन्टीरोमियो टीम द्वारा थाना क्षेत्र के खेतोंध्बस अड्डाध्सार्वजनिक स्थानोंध्रमुख चौराहोंध्कस्बोंध्रमुख बाजारोंध्मन्दिरध्शिवालयोंध्शापिंग मॉल आदि के आस.पास गश्तध्चेकिंग करते हुए महिलाओं व बालिकाओं को आत्मसुरक्षा के लिये जागरुक किया जा रहा है तथा उनकी सुरक्षा के सम्बंध में वार्ता कर आवश्यक हिदायत दी जा रही है।

साथ ही समस्त एण्टीरोमियों टीमों द्वारा अपने.अपने थाना क्षेत्र अन्तर्गत गांवए कस्बों एवं सार्वजनिक स्थानोंए मिशन शक्ति कक्ष पर उपस्थित बालिकाओं/ महिलाओं को उच्चाधिकारियों के नम्बर व नारी सुरक्षाध्मिशन शक्ति अभियान के तहत हेल्प लाइन नम्बर वीमेन पावर लाइन 1090, महिला हेल्पलाइन 181, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076, पुलिस आपातकालीन सेवा 112, चाइल्ड हेल्पलाइन 1098, स्वास्थ्य सेवा 102, एम्बुलेंस सेवा 108 व साइबर हेलपलाइन 1930 तथा थानों के सीयूजी नम्बर आदि के बारें में विस्तृत जानकारी प्रदान की जा रही है। जनपद में 25 एण्टीरोमियों स्कवायड कार्यरत है, जिसमें 48 पुरुष आरक्षी व 96 महिला आरक्षी तैनात है।

एण्टीरोमियों स्कवायड द्वारा 32,028 स्थानों पर विद्यालयोंए स्कूलोंए सार्वजनिक स्थानों जैसे चौराहोंए मार्केटए मॉलए पार्क व अन्य स्थानों पर चैकिंग करते हुए 1,03,539 लड़कों/ शोहदों की चेकिंग करते हुए 50 अभियोग को पंजीकृत कर 65 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया तथा 1,03,474 शपथ पत्र भरवाये जा चुके हैं। साथ ही साथ विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर लगे पिंक लेटर बॉक्स को भी चेक किया जा रहा है।

दो बाइकों की आमने-सामने की भिड़ंत में दो लोगों की मौत

संवाददाता। शाहजहांपुर

थाना मिर्जापुर क्षेत्र में दो बाइकों की आमने-सामने भिड़ंत में दो लोगों की मौत हो गई है। वहीं 3 लोग घायल हो गए हैं। जिन्हें गंभीर हालत में मेडिकल कॉलेज शाहजहांपुर रेफर किया गया है। वहीं पुलिस ने मृतकों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मिली जानकारी के अनुसार, मिर्जापुर थाना क्षेत्र के फर्रुखाबाद मुरादाबाद स्टेट हाईवे पर ग्राम थरिया के समीप ईट भट्ठे के पास दो बाइकों की आमने-सामने जोरदार भिड़ंत हो गई। हादसे में शाहजहांपुर जनपद के कलान कस्बे के मोहल्ला उलफ्तनगर निवासी 23 वर्षीय विशाल पुत्र दृगपाल व फर्रुखाबाद जनपद के थाना शमसाबाद क्षेत्र के गांव चितार निवासी अनवर अली पुत्र अलीमुद्दीन की घटना स्थल पर ही मौत हो गई।

गोला की बिटिया ने आईएएस परीक्षा पास कर बढ़ाया नगर का मान

संवाददाता। गोला गोकर्णनाथ (खीरी)

नगर की भारत भूषण कॉलोनी निवासी आयुषी सोनी पुत्री राकेश कुमार सोनी ने आईएएस की परीक्षा पास कर 754वीं रैंक प्राप्त की है। आयुषी ने बताया कि नगर के चिल्ड्रेन्स एकेडमी से इंटरमीडिएट की परीक्षा पास कर दिल्ली विश्वविद्यालय से ग्रेजुएशन किया है। देश की राजधानी दिल्ली में ही रहकर आईएएस की तैयारी की। उन्होंने अपनी सफ्लता का श्रेय अपने माता-पिता को दिया है। अपने नगर को मिली इस उपलब्धि से प्रफुल्लित गोला विधायक अमन अरविंद गिरि ने आयुषी के भारत भूषण कॉलोनी स्थित आवास पर जाकर उन्हें बुके भेंटकर सम्मानित करते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस मौके पर धर्मेंद्र गिरि ए दामोदर वर्माए संदीप शुक्लाए दिलीप यादवए मनोज गिरिए सचिन सिंहए अजीत वर्माए आलोक दीक्षित आदि लोग मौजूद रहे।

क्विक न्यूज

पुलिस ने मादक पदार्थ सहित दो तस्करों को पकड़ा,एनडीपीएस एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज

बरेली। थाना अलीगंज पुलिस ने दो तस्करों को गिरफ्तार कर उनकी निशानदेही पर डोडा व उसका चूर्ण बरामद किया। दोनों तस्करों की पहचान इलाके के गांव खैलम निवासी चंद्रपाल महेंद्र के नाम से हुई। पुलिस ने उनके पास से 58.600 किलोग्राम डोडा पोस्ता व 7.150 किलोग्राम डोडा चूर्ण बरामद किया। के साथ गिरफ्तार किया गया। पूछताछ में दोनों तस्करों ने बताया वह इसको पहले से तय ग्राहकों के लिए देने के लिए पंजाब ले जा रहे थे। तस्करों को गिरफ्तार करने वाली टीम में क्षेत्राधिकारी डॉ दीपशिखा अहिबरन सिंह ,थाना अध्यक्ष पुष्पेंद्र सिंह, उप निरीक्षक सुरेंद्र कुमार शर्मा ,मुख्य आरक्षी मनीष कुमार ,आरक्षी अंकुर भाटी ,नेहा, शुभम कुमार शामिल रहे।

बरेली कॉलेज बरेली के अस्थाई कर्मचारियों का धरना तीसरे दिन रहा जारी,पछास, क्रालोस का समर्थन

बरेली। कर्मचारी कल्याण सेवा समिति बरेली कॉलेज बरेली के अध्यक्ष जितेंद्र मिश्रा के नेतृत्व में आज तीसरे दिन भी धरना जारी रहा, धरना को आज परिवर्तन कामी छात्र संगठन, और क्रांतिकारी लोक अधिकार संगठन के पदाधिकारियों ने समर्थन दिया है। दोनों संगठन से कैलाश, मो फैसल ने विचार व्यक्त कर समर्थन दिया। अध्यक्ष जितेंद्र मिश्रा ने बताया आज बहुत कर्मचारियों ने धरना स्थल पर आकर एफिडेविट भरवाने पर रोष व्यक्त किया है संगठन की तरफसे साफकहा गया है कोई भी कर्मचारी एफिडेविट ना भरे, सोमवार को दोपहर 2रू00 धरना स्थल पर आमसभा होगी जिसमें आंदोलन को तेज करने का निर्णय लिया जाएगा। मंगलवार को कमिश्नर को ज्ञापन दिया जाएगा। आज धरना पर बच्ची देवी, राम अवतार, पूरनलाल, मशीह, मदनलाल, रंजीत, राजेश, श्री राम, दोदराम आदि कर्मचारी मौजूद रहे।

अवैध खनन करते पकड़ी गई जैसीबी डम्फर

लखीमपुर-खीरी। शनिवार की रात में उकरमुहाँ गांव में अवैध तरीके से हो रहे मिट्टी खनन को उपजिलाधिकारी के निर्देश पर नायब तहसीलदार राजस्व और पुलिस ने पकड़ लिया एजिसके बाद एक जेसीबी दो डम्फर कब्जे में लेने की सूचना मिली, दूरभाष पर पूछने पर नायब तहसीलदार हर्ष निशांत ने बताया कि रात में सूचना मिलने पर टीम के साथ मैं स्वयं गया था मौके पर एक डम्फर को पकड़ कर अबैध खनन में सीज किया गया है। बता दे कि यहां जेबीगंज चौकी पुलिस की मिली भगत से लगभग एक माह से मस्तीपुर गांवए पनईए रामापुरए उकरमुहाँ में लोगो का अबैध खनन के चलते सोना मुश्किल हो रहा था। जिसके बाद शिकायत होने पर जिम्मेदारों ने कार्यवाही की जिम्मेदारों ने बताया कि बांकी वाहन मौके से फरार हो गए। बीते समय मस्तीपुर के ग्राम प्रधान से खनन का मौखिक रूप से विरोध भी किया था लेकिन दबंगो के आगे उनकी एक न चली। डम्फर किसी जेबीगंज चौकी के एक दलाल का बताया जा रहा है।

जिला अध्यक्ष ने कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों का किया स्वागत

बरेली। फतेहगंज पश्चिमी ब्लाक के पास स्थित एक हॉल में भाजपा अल्पसंख्यक के जिला अध्यक्ष परवेज मियां ने फतेहगंज पश्चिमी के मंडल अध्यक्ष वाजिद अंसारी, शाही के मंडल अध्यक्ष बाबू शेख, और दुकान के मंडल अध्यक्ष खुर्शीद एवं अन्य पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं का फूल माला पहनाकर जोरदार स्वागत किया। इस मौके पर जिला अध्यक्ष परवेज मियां ने सभी पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं को भारतीय जनता पार्टी को मजबूत करने के दिशा निर्देश दिए। और आगामी 2024 के इलेक्शन में भाजपा प्रत्याशी को जिताने की अपील की। इस मौके पर भाजपा अल्पसंख्यक के जिला उपाध्यक्ष अतहर अली, जिला मंत्री इमरान, भाजपा सदस्य इलियास सकलैनी, इकबाल सकलैनी, मोहम्मद शरीफसकलैनी आदि लोग मौजूद रहे।

मंदबुद्धि युवक की ट्रेन की चपेट में आकर मौत

बरेली। एक मंदबुद्धि युवक की घर से कुछ ही दूरी पर रेलवे लाइन पार करते समय ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा और जांच शुरू कर दी ।मीरगंज थाना क्षेत्र के गांव मनकरा निवासी अनोखेलाल के 20 वर्षीय बेटे रंजीत की आज सुबह घर से कुछ ही दूरी पर रेलवे लाइन पार करते समय ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई पोस्टमार्टम हाउस पर मौजूद मृतक के परिजनों ने बताया कि रंजीत मानसिक रूप से कमजोर था और अक्सर घर से बाहर जाने के बाद खुद ही वापस लौट आता था लेकिन आज सुबह तड़के जब वह घर से बाहर गया तो वापस नहीं लौटा उसकी रेलवे लाइन पार करते समय ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई जंगल में जा रहे लोगों ने उसकी लाश को रेलवे लाइन पर देखकर घरवालों को सूचना दी जो मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी पुलिस को दे दी मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा और जांच शुरू कर दी ।

सड़क किनारे मिली वृद्धा की लाश

बरेली। शाम को घर से निकली एक वृद्धा की सड़क पार करते समय अज्ञात वाहन की टक्कर से मौत हो गई सुबह होने पर उसकी लाश सड़क किनारे पाई गई पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा।बिथरी चौनपुर थाना क्षेत्र के गांव मिंडोलिया निवासी अब्दुल हमीद की 73 वर्षीय पत्नी रुखसार बी की लाश आज सुबह गांव से कुछ दूरी पर सड़क किनारे पाई गई मृतका के घरवालों ने बताया कि रुखसार कल शाम को अपने किसी परिचित से मिलने के लिए घर से बाहर गई थी लेकिन वापस नहीं लौटी उसे तलाशने की कोशिश की गई लेकिन उसका कुछ पता नहीं चला आज सुबह लोगों ने उसकी लाश को सड़क किनारे देखा और घरवालों को सूचना दी कुछ देर बाद मौके पर पहुंचे घर वालों ने पुलिस को सूचना दी जिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज कर मामले की जांच शुरू कर दी ।

अपना दल एस पार्टी की हुई मासिक बैठक

बरेली। अपना दल एस पार्टी की मासिक बैठक हुई बैठक की अध्यक्षता हमारे विधान सभा अध्यक्ष भाई करन गंगवार ने की बैठक में उपस्थित मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य सतीश गंगवार एवं प्रदेश सचिव एस सी एस टी मंच सतीश ऋषिवाल रहे बैठक का संचालन विधान सभा अध्यक्ष किसान मंच एल गंगवार ने किया एवं पार्टी के सभी पदाधिकारी गण रहे इमरान अंसारी अहमद नवी, उस्मान, अनमोल, सतेंद्र गंगवार, अरविंद यादव, विधान सभा उपाध्यक्ष राहुल शर्मा, इरशाद मंसूरी इत्यादि पार्टी के लोग उपस्थित रहे।

रेलवे प्रशासन हटाने पहुंचा बाबा बख्शउरुद्दीन की मजार, विरोध

बरेली। थाना इज्जत नगर क्षेत्र के रोड नंबर 5 परतापुर चौधरी में वर्षों पुरानी मजार को रेलवे प्रशासन हटवाने पहुंचा। जिसको लेकर आस पास के लोगों ने इसका विरोध कर दिया है। रेलवे अधिकारियों ने मजार हटाने को लेकर वहां आज भारी पुलिस बल को तैनात कर दिया है। इस मामले में वहां रहने वाले लोगों ने बताया रेलवे की जमीन पर काफी वर्षों पुरानी रोड नंबर 5 परतापुर चौधरी स्थित बाबा बख्शउरुद्दीन की मजार है। इस मजार को रेलवे हटाना चाहता है। जो हमारी भावनाओं को ठेस पहुंचाने के समान है। मजार पर सभी धर्मों के लोग आते हैं। आज मजार हटाने को लेकर भारी फोर्स तैनात कर दी गई है।। इस मामले में रेलवे अधिकारियों का कहना है कि रेलवे की जमीन पर किसी भी प्रकार का कब्जा बर्दाशत नहीं होगा।

काकोरी काण्डः रामप्रसाद बिस्मिल की जयंती मनाई

संवाददाता। शाहजहांपुर

काकोरी काण्ड के महानायक, महान क्रांतिकारी पंडित रामप्रसाद बिस्मिल की जयंती पर नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा, अपर नगर आयुक्त एसके सिंह द्वारा नगर क्षेत्र के मो0 खिरनीबाग में स्थित बिस्मिल पार्क, नगर निगम प्रांगण एवं शहीद पार्क में स्थापित पंडित रामप्रसाद बिस्मिल एवं अन्य वीर शहीदों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण व पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धापूर्वक उनको नमन किया गया। इस अवसर पर नगर आयुक्त महोदय द्वारा देश की आजादी में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले महान क्रांतिकारी एवं अमर शहीद बिस्मिल जी के जीवन पर प्रकाश डाला गया और उनके द्वारा अपने जीवन काल में किये गए कार्यों को याद किया गया। इस अवसर पर राज्य सफाई कर्मचारी आयोग के मा. अध्यक्ष सुरेंद्रनाथ वाल्मीकि, अवधेश मणि त्रिपाठी, कवि डॉ. इंदु अजनवी एवं सम्भ्रान्त लोग उपस्थित रहे।

बेसिक शिक्षा की उज्ज्वल तस्वीर बना संविलियन विद्यालय अंबरसोत

संवाददाता। लखीमपुर खीरी

● श्रृति दीदी का स्कूल बना नज़ीर, दे रहा प्रेरणा

● चौंकिए मत! प्राइवेट नहीं यह सरकारी स्कूल है कुछ यूं पेश कर रहा नजीर

बेसिक शिक्षा विभाग से संचालित परिषदीय विद्यालयों में शिक्षक एवं छात्रों का अनुशासन अन्य विद्यालयों के लिए मिसाल बन रहे हैं। इसके प्रति अभिभावकों का विश्वास जगा है। शिक्षा क्षेत्र के संविलियन विद्यालय अंबरसोत (नकहा) बेसिक शिक्षा की उज्वल तस्वीर बनकर उभरा है।

इंचार्ज प्रधानाध्यापिका श्रुति दीक्षित के नेतृत्व में प्रतिकूल परिस्थितियों व चुनौतियों से लड़कर यहां के शिक्षकों व ग्राम प्रधान ने विद्यालय को संवारने का काम किया। इससे अन्य विद्यालयों को सबक लेना चाहिए। नकहा विकासखंड स्थित संविलियन विद्यालय अंबरसोत का माहौल हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहाँ शिक्षको ने भौतिक, शैक्षिक परिवेश को शानदार बनाकर परिषदीय विद्यालयों के लिए नजीर पेश की। विद्यालय में बाला मॉडल पेंटिंग, टीएलएम, बाल संसद, शैक्षिणेत्तर गतिविधियां, स्मार्ट क्लासेज, लर्निंग कार्नर, लाइब्रेरी, कक्षा-कक्ष सज्जा, विद्युतीकरण, हरा-भरा कैंपस विद्यालय को अनूठा बनाता है।

विद्यालय की हर गतिविधि में बच्चों के रचनात्मक सोच की झलक तथा उनके आत्मविश्वास से लबरेज चेहरे इस बात को प्रमाणित करता है कि इस विद्यालय के शिक्षक व प्रधानाध्यापक निश्चित रूप से इस ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय में उत्कृष्ट शिक्षा व्यवस्था का एक प्रतिमान स्थापित किया है। इस विद्यालय के नेतृत्वकर्ता ने ब्लॉक के कई विद्यालयों को एक राह दिखाई है। खूबसूरती, हरियाली एवं पठन पाठन के लिए संविलियन विद्यालय अंबरसोत चहुओर सराहा जा रहा। श्रृति ने मेहनत, स्टाफ के सहयोग से यहां तक का सफर तय किया।

श्रृति ने विद्यालय में फलदार, छायादार, औषधीय एवं सजावटी पौधों का न केवल रोपण किया, बल्कि उनके पुष्पित, पल्लवित होने तक कड़ी मेहनत की। योगा दिनचर्या में शामिल है, ताकि नौनिहालों के शारीरिक व मानसिक विकास हो सके। गणित किट के प्रयोग व रुचिकर विधियों से छात्रों में आकृतियों व गणितीय तथ्यों की समझ हो रही। ग्राम प्रधान की सहायता से कायाकल्प के सभी 19 बिंदु संतृप्त हैं। निपुण विद्यालय बनाने का संकल्प शीघ्र ही फलीभूत होता दिख रहा।

आंवला सांसद ने किया जिला अस्पताल का औचक निरीक्षण

संवाददाता। बरेली

आंवला लोकसभा के सांसद धर्मेंद्र कश्यप ने आज जिला अस्पताल का निरीक्षण किया अपने निरीक्षण में उन्होंने इमरजेंसी वार्ड में भर्ती मरीजों से उनका हाल-चाल पूछ दवा इलाज की सुविधाओं के बारे में जानकारी दी और इमरजेंसी वार्ड के में साफ सफाई रखने के निर्देश दिए सांसद धर्मेंद्र कश्यप ने ओपीडी , डिस्पेंसरी, ब्लड बैंक, आदि का निरीक्षण किया। निरीक्षण के समय उन्होंने अस्पताल में और सुविधाएं दूर करने के निर्देश दिए।

सांसद धर्मेन्द्र कश्यप ने कहा कि प्रदेश में भाजपा सरकार है जो गरीबों की सरकार है और पहले लोग जिला अस्पताल में आने से कतराते थे उन जिला अस्पताल के नाम से उनको डर लगता था आज जिला अस्पताल में अपार भीड़ है लोगों का विश्वास बढ़ा है सरकार गरीबों के लिए काम कर रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी गरीबों की समस्याओं और उनके दुखों को दूर करने के लिए दृढ़ संकल्प है जिला अस्पताल की व्यवस्था पहले से बहुत बेहतर है और यहां पर लोग निशुल्क अपना इलाज करते हैं ऑपरेशन भी करते हैं प्राइवेट अस्पतालों झोलाछाप डॉक्टरों ने जो लूट मचा रखी है उससे उनका निजात मिलती है जिला अस्पताल में विशेषज्ञों की कमी नहीं है और तसल्ली बक्श इलाज होता है भाजपा सरकार रोजी - रोटी शिक्षा दवा बिजली पानी इत्यादि को प्राथमिकता से देख रही है और लोगों को सुविधा मिल रही हैं भाजपा शासन में लोग संतुष्ट हैं जिला अस्पताल में मुझे आज कोई कमी नहीं मिली सभी लोग ड्यूटी पर मौजूद मिले और अस्पताल की हालत बहुत बेहतर है निरीक्षण के समय जिला अस्पताल की ए डी एस आई सी डॉक्टर अलका शर्मा डॉ अजय मोहन, डॉ दिनेश गंगवार भी उपस्थित थे।

2024 लोकसभा चुनावों में हम ही जीतेंगे: प्रेमप्रकाश

संवाददाता। बरेली

महानगर कांग्रेस कमेटी ने स्टेशन रोड स्थित ग्रीन हवेली में पार्टी कार्यकर्ताओं की एक आवश्यक बैठक आयोजित कर मिशन 2024 मेंष् फ्तेह संप्रदायवादष् को लेकर अपने कार्यकर्ताओं को जागरूक करते हुए मिशन में जुट जाने की अपील की..बैठक की अध्यक्षता करते हुए महा नगर अध्यक्ष अजय शुक्ला ने कहा कि 'कर्नाटक की जीत से हिला मोदी का किला' उन्होंने कहा कि राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी अपने सबसे बड़े जनसंपर्क के पश्चात 2024 के लिए एक विजन डॉक्यूमेंट तैयार करेगी जिसमें बेरोजगारी, गरीबी उन्मूलन, महिला अधिकारिता ,रोजगार सृजन और राष्ट्रीय एफ सी , इन्हीं सब मुद्दों के साथ कांग्रेस पार्टी का एक-एक कार्यकर्ता हर घर तक जाकर पार्टी का प्रचार करेगा और सांप्रदायिक ताकतों को देश से उखाड़ फेंकने की अपील करेगा.. महानगर अध्यक्ष शुक्ला ने संगठन में विस्तार करते हुए विभिन्न पदों पर पदों पर कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारी देकर अपने अपने वार्ड और बूथ तक संगठन को मजबूत करने का मंत्र दिया। बैठक में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य प्रेम प्रकाश अग्रवाल ने कहा आने वाला कल कांग्रेस का होगा जिस प्रकार से हमने कर्नाटक में जीत हासिल की है उसी प्रकार से 2024 लोकसभा चुनावों में हम जीत हासिल करेंगे, हमारे प्रधानमंत्री राहुल गांधी होंगे। वरिष्ठ कांग्रेसी नेता एवं पीसीसी सदस्य नवाब मुजाहिद हसन ने कहा हमें 2024 में एकजुट होकर लोकसभा चुनाव की तैयारी करनी है हमें मतभेद भुलाकर एक दूसरे का साथ देना है महानगर उपाध्यक्ष महेश पंडित एवं प्रवक्ता पीसीसी सदस्य योगेश जौहरी ने कहा नगर निगम चुनाव 2023 कांग्रेस सफ्लता से 2024 लोकसभा चुनाव में इसका फायदा होगा कांग्रेस सभासद मेंसर जहां, महेसर खान, इशरत जहां, सादिक अंसारी मौजूद रहे।

अतिक्रमण के खिलाफ चला प्रशासन का बुल्डोजर, अभियान से मचा हड़कंप

- राठ रोड तुलसी नगर सहित कई स्थानों पर ध्वस्त किए अतिक्रमण
- मुख्य मार्गों से अतिक्रमण हटाने के बीच दिनभर दिखी अफ़रा-तफ़री
- अतिक्रमण हटाए जाने से से नगर वासियों में खुशी
- शहर में यातायात व्यवस्था को दृष्टिगत रख कई जगह रूट डायवर्जन

संवाददाता। उरई, जालौन

बरसों से नगर के लिए गंभीर समस्या बना मुख्य मार्गों पर काबिज अवैध अतिक्रमण के खिलाफ एक बार फिर जिला प्रशासन ने पूरे दमखम के साथ मुहिम छेड़ दी है रविवार को सिटी मजिस्ट्रेट क्षेत्राधिकारी पुलिस और नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी के संयुक्त अभियान में राठ रोड सहित कई स्थानों पर बुलडोजर चलाकर अतिक्रमण ध्वस्त कराया गया इस दौरान दिनभर आवागमन प्रभावित रहा तो वही दुकानदारों में भी अफ़रा-तफ़री का माहौल देखने को मिला। चिन्हित किये गये 28 अतिक्रमणकारियों को कुछ दिन पूर्व ही अपना अतिक्रमण हटाने की चेतावनी दी गयी थी। लेकिन इसके बाद भी किसी ने अपना अतिक्रमण नहीं हटाया। रविवार को जैसे ही प्रशासनिक अमला दल बल के साथ मौके पर पहुंचा तो वहां पर प्रात: 7 बजे से ही अफ़रा तफ़री मच गई। प्रशासन द्वारा शुरू किए गए अतिक्रमण विरोधी अभियान को लेकर नगर के प्रबुद्ध वर्ग के लोगों में खुशी की लहर व्याप्त है जब इस संबंध में विभिन्न वर्ग के लोगों से बात की तो हर किसी ने कहा कि अब नगर के विकास के लिए यह बहुत जरूरी हो गया है।

शहर की यातायात ब्यवस्था को सुगम बनाने के उद्देश्य से पुलिस और प्रशासन के अधिकारियों ने विभिन्न मार्गों रूट डायवर्जन किया है। जिसके तहत राठ रोड से उरई शहर की ओर आने जाने वाले समस्त वाहन बुलेट एजेंसी चौराहे से वाया अजनारी रोड होते हुए अपने रास्ते जा सकेंगे जबकि शहीद भगत सिंह चौराहा से राठ रोड की तरफ आने जाने वाले समस्त वाहन बाया स्टेशन रोड मोनी मंदिर होते हुए अपने रास्ते जा सकेंगे।

इसी प्रकार पीली कोठी से शहीद भगत सिंह चौराहा की तरफ आने जाने वाले समस्त वाहन कोच रोड होते हुए अपने रास्ते जा सके घंटाघर से मौनी मंदिर तक रीजेंसी से समस्त वाहनों का आवागमन पूर्ण रूप से प्रतिबंध रहेगा। बताते चले कि इन रास्तों से निकलने वाहनों की बजह से जाम की स्थिति का सामना करना पड़ता था इसी को देखते हुए पुलिस प्रशासन यह कदम उठाया है। प्रशासन ने कई स्थानों पर निर्माण कार्य कराने की मुहिम चलाई है उसको देखते हुए ऐसा लगता है कि राठ रोड पर जल्दी ही प्रशासन द्वारा कुछ इस तरह का ही निर्माण कार्य कराया जा सकता है।

नील गाय मांस के तस्कर हुए गिरफ्तार

उरई, जालौन। जीतामऊ के जंगल से वन्य पशुओं के मांस की तस्करी कर रहे पांच लोग स्थानीय पुलिस की सतर्कता से कानून के शिकंजे में फंस गये। उनके खिलाफ वन संरक्षण अधिनियम और शस्त्र अधिनियम के तहत कार्यवाही कर जेल भेज दिया गया। बताया गया है कि दो आरोपी जीतामऊ के जंगल में नील गायों का शिकार कर उनका 70 किलो मांस दो बोरियों में लादकरे बेचने ले जा रहे थे कि पुलिस को भनक लग गयी। इनके नाम साबाना (20 वर्ष) और साहिल (25 वर्ष) निवासीगण थाना कर्नलगंज कानपुर नगर बताये गये हैं। तीन और लोग पुलिस द्वारा इनके साथ बताकर गिरफ्तार किये गये हैं। ये हैं अमन (15 वर्ष), नगीना (30 वर्ष) निवासीगण घटापाहरा कानपुर देहात और अनिल राजपूत निवासी धरगवां उरई। थाना प्रभारी दिनेश कुरील ने बताया कि इनके पास से दो छुरी भी बरामद की गयी हैं। सीओ रविन्द्र कुमार का कहना है कि गिरफ्तार आरोपियों को जेल भेज दिया गया है। इनके गिरोह में और लोगों के भी शामिल होने का संदेह जताया जा रहा है।

जनसंपर्क अभियान के तहत मानिकपुर में संपन्न हुई भाजपा की टिफ़िन बैठक

सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण को समर्पित है मोदी सरकार : चंद्रप्रकाश

संवाददाता, चित्रकूट

भाजपा नेतृत्व की नरेंद्र मोदी की सरकार के सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण के सफलतम नौ वर्ष पूर्ण होने पर महा-जनसम्पर्क अभियान के तहत मानिकपुर विधान सभा के समस्त कार्यकर्ताओं की टिफिन बैठक वनवासी कल्याण केंद्र मानिकपुर के सभागार में आयोजित हुई।

इस महत्वपूर्ण बैठक की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष चन्द्र प्रकाश खरे ने की तथा पूर्व सांसद भैरोप्रसाद मिश्र , ब्लॉक प्रमुख गंगाधर मिश्र, अरविंद मिश्र ,नवनियुक्त नगर पंचायत अध्यक्ष राजापुर संजीव मिश्र , प्रदेश कार्यसमिति सदस्य आनंद त्रिपाठी की उपस्थिति रही। बैठक के संयोजक ओम प्रकाश मिश्र बाला जी रहे। बैठक का शुभारंभ डॉ श्यामाप्रसाद मुखर्जी और पं दीनदयाल उपाध्याय के चित्रों पर पुष्पार्चन व दीप प्रज्वलन करके हुआ। इसके बाद जिला महामंत्री आलोक पाण्डेय के साथ समस्त कार्यकर्ताओ ने वन्दे मातरम गान किया। बैठक में कार्यकर्ताओ को सम्बोधित करते हुए जिलाध्यक्ष चन्द्र प्रकाश खरे ने कहा कि भाजपा की मोदी सरकार के नौ वर्ष सेवा सुशासन और गरीब कल्याण को समर्पित हैं। सभी कार्यकर्ता गांव गांव बूथ बूथ पर जाकर जनसंवाद करके नौ वर्ष की उपलब्धियों पर चर्चा करें। 21 जून को योग दिवस, 23 जून को बलिदान दिवस पर सभी बूथ पर कार्यक्रम सम्पन्न कराने के लिए कार्यकर्ताओं को प्रयास करना है।

पूर्व सांसद भैरोप्रसाद मिश्र ने कहा कि पिछले नौ वर्ष में मोदी सरकार ने देश का मान बढ़ाया है। बैठक को संबोधित करते हुए जिला महामंत्री आलोक पाण्डेय ने कहा कि भारत के अमृतकाल में हम सबको बलिदान नहीं करना है बल्कि योगदान करना है, आत्मनिर्भर भारत के पुनर्निर्माण में।

नवनिर्वाचित प्रतिनिधियों समेत मेधावी बच्चों को किया सम्मानित

फतेहपुर। वीआईपी रोड स्थित चक्रवती सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य सामाजिक संस्थान में रविवार को मौर्य कुशवाहा उत्थान समिति की ओर से मेधा अलंकरण, कैरियर गाइडेंस एवं नवनिर्वाचित नगर निकाय प्रतिनिधि सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समिति संरक्षक मंडल के सदस्यों एवं प्रबन्ध कार्यकारिणी के पदाधिकारियों ने नवनिर्वाचित नगर पालिका अध्यक्ष राजकुमार मौर्य के अलावा वार्ड नं. 2 आवास विकास से निर्वाचित सभासद दीपक कुमार मौर्य, खागा नगर पंचायत से नवनिर्वाचित सभासद अखिलेश मौर्य एवं प्रेमा देवी मौर्य का माल्यार्पण एवं बैज अलंकरण कर भव्य स्वागत एवं अभिनन्दन किया। कैरियर गाइडेंस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आचार्य नरेंद्रदेव कृषि विश्वविद्यालय अयोध्या के प्रो. रवि प्रकाश मौर्य ने शिरकत की। के अलावा पीजीएस के डीन प्रो. सुमन प्रसाद, विद्या कोचिंग के निदेशक आनन्द कुमार मौर्य, एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सुभाष चन्द्र मौर्य, डा. मयंक कुशवाहा ने कृषि क्षेत्र, कम्प्यूटर साइंस एवं मेडिकल के क्षेत्र में कैरियर बनाने हेतु जागरूक किया। स्नातक छात्रा कु. महिमा मौर्य ने स्वरचित कविता के माध्यम से बच्चों को संघर्ष करके आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के अन्त में सभी बच्ची को मेधावी सम्मान एवं ट्रॉफी देकर समिति ने उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

सिर्फ झूठी बयानबाजी करते हैं भाजपा नेताः नरेश उत्तम

फतेहपुर। समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल ने कहा कि उत्तर प्रदेश हत्याओं का प्रदेश बनकर रह गया है। कानून व्यवस्था पूरी तरह धड़ाम हो चुकी है। आए दिन हत्याएं हो रहीं हैं। पार्टी कार्यालय में पत्रकारों से वार्ता करते हुए कहा कि भाजपा सरकार में खुलेआम हत्याएं हो रही है। न्यायालय में हत्या होना प्रदेश की कानून व्यवस्था पर सवाल खड़े कर रहा है। प्रदेश में अराजकता का माहौल है। महिलाएं, नौजवान, किसान, व्यापारी कोई भी सुरक्षित नहीं है। प्रदेश सरकार की नीतियों से हर वर्ग परेशान है। आलोचकों को दबाने का प्रयास किया जाता है। उनका उत्पीड़न किया जा रहा है। सपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि भाजपा सरकार में महंगाई अपने चरम सीमा पर पहुंच गई है। बेरोजगारी की दर लगातार बढ़ रही है लेकिन प्रदेश सरकार के मुखिया गलत आंकड़े बताकर रोजगार देने का दम भर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा के लोग केवल झूठी बयानबाजी करते हैं। प्रदेश में स्वास्थ्य और शिक्षा का भी हाल बेहाल है। अस्पतालों में दवाइयां नहीं है। गरीब इलाज के लिए इधर उधर भटक रहा है।

अखिल भारतीय प्रजापति महासंघ के जिलाध्यक्ष बने सरोज प्रजापति

- प्रजापति समाज के युवा और महिलाएं शिक्षा व राजनीति में हों सक्रियः रामपाल प्रजापति

संवाददाता। चित्रकूट

अखिल भारतीय प्रजापति समाज धर्मशाला खोही में प्रजापति समाज की बैठक राजाराम प्रजापति की अध्यक्षता व अखिल भारतीय प्रजापति महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामपाल प्रजापति के मुख्य आतिथ्य में हुई। रविवार को प्रजापति समाज ने सामाजिक विषयों को लेकर प्रस्ताव रखे। समाज के गौरव राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक स्व बैजनाथ प्रजापति की प्रतिमा स्थापना पर समाज के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया। अखिल भारतीय प्रजापति समाज धर्मशाला ट्रस्ट के विकास/वार्षिक सम्मेलन, आय-व्यय का वार्षिक विवरण पेश किया। 16-17 जुलाई को अधिवेशन की सहमति बनी। अखिल भारतीय प्रजापति महासंघ चित्रकूट शाखा का गठन राष्ट्रीय संरक्षक संतोष कुमार प्रजापति के निर्देश में जिला कार्यकारिणी का गठन हुआ। नव मनोनीत जिलाध्यक्ष सरोज कुमार प्रजापति प्रधान बरद्वारा, जिला मुख्य महासचिव रामेश्वर प्रजापति, शिक्षक उपाध्यक्ष में राकेश प्रजापति, कामता प्रसाद प्रजापति, नत्थू प्रसाद प्रजापति, मेघराज प्रजापति, राकेश कुमार प्रजापति, कोषाध्यक्ष जगतपाल प्रजापति, आदि मनोनीत हुए।

दबंग महंत गरीब के घर पर कर रहा जबरन कब्जा

चित्रकूट। सीतापुर चौकी क्षेत्र के कटरा गूदर के निवासी कृष्ण प्रकाश गुप्ता उर्फबच्चा ने जिला प्रशासन समेत सूबे के मुख्यमंत्री को भेजे पत्र में कहा है कि दबंग महंत उसका घर कब्जा करने के प्रयास में जुटा है। रविवार को सीतापुर पुलिस चौकी क्षेत्र के कटरा गूदर गांव के कृष्ण प्रकाश गुप्ता ने सूबे के मुख्यमंत्री समेत उच्चाधिकारियों को लिखे पत्र में कहा कि उसका मिट्टी का कच्चा पुश्तैनी घर बना है। बंदरों के खपरैल तोड़ने पर वह लोहे की टीने लगवा रहा है। पड़ोसी हनुमान धारा के हनुमान मंदिर के महंत राधामोहन मिश्रा उसके घर पर जबरन कब्जा करने का प्रयास कर रहे हैं।

क्विक न्यूज

गैंगेस्टर एक्ट में तीन पर दर्ज हुआ मुकदमा

फर्रुखाबाद। कोतवाली के प्रभारी निरीक्षक अनिक कुमार चौबे नें तीन पर गैंगेस्टर एक्ट के तहत मुकदमा पंजीकृत कराया है। पुलिस नें मामले की विवेचना सीओ सिटी प्रदीप कुमार को सौंपी है। शहर कोतवाल नें शहर कोतवाली के मोहगा पलरिया निवासी राहुल बाथम पुत्र दिनेश उर्फबबलू को गैंग लीडर व इसके साथ उसके गैंग सदस्य सुरेश बाथम पुत्र रामनाथ निवासी मोहगा नबाव दिलावर जंग व मोहगा दिगी ख्याली कूंचा निवासी राजेश कुमार उर्फराजू पुत्र सीताराम को बनाया है। जिसमे कहा है कि आरोपी समाज विरोध कार्य में लिप्त है। उनके खिलाफ कोई भय व आतंक के चलते गबाही देनें को तैयार नही होता। जिलाधिकारी द्वारा पुलिस द्वारा भेजे गये गैंग चार्ट को अनुमोदित किया गया। जिसके बाद मुकदमा पंजीकृत किया गया।

मडैयन घाट पुल का लोक निर्माण मंत्री ने किया शिलान्यास

फर्रुखाबाद । हरदोई व फर्रुखाबाद को जोड़ने वाले मढयन घाट पुल का लोक निर्माण मंत्री ने किया शिलान्यास लोक निर्माण मंत्री जितिन प्रसाद नें जनपद फर्रुखाबाद के कमालगंज और हरदोई को जोड़नें वाले मडैयन घाट पुल का शिलान्यास किया। उन्होंने कहा की पुल बनने से दोनों जनपदों के बीच सम्बन्ध और अधिक मधुर होंगे।मंत्री नें कहा कि 19113.72 लाख की लागत से बनने जा रहे मडैयन घाट पुल से आवागमन सुलभ होगा । पुल बननें से लोगों को नाव या पीपे के पुल का सहारा नही लेना होगा। पुल अब दोनों जनपदों की समस्या का स्थायी समाधान है। पुल निर्माण लखनऊ सेतु निगम करेगा । उन्होंने बताया कि 17 सितंबर 2023 को निर्माण कार्य शुरू होगा और 2026 तक बनकर जनता को समर्पित कर दिया जायेगा । उन्होंने अधिकारियों को चेतावनी दी की सेतु निर्माण में गुणवत्ता का पूरा ध्यान रखा जाये।

ससुरालीजनों पर लगाया दहेज हत्या का आरोप

फतेहपुर। सदर कोतवाली क्षेत्र में चार दिन पहले हुई विवाहिता की मौत के मामले में मृतका के पिता ने ससुरालीजनों पर दहेज हत्या का आरोप लगाया है। पिता ने मामले की शिकायत कोतवाली में की है। गाजीपुर थाना क्षेत्र के समियाना निवासी योगेंद्र पाल सिंह ने बताया कि उसने अपनी पुत्री सारिका की शादी 22 फरवरी 23 को शहर के महिला डिग्री कालेज सिविल लाइन निवासी राघवेंद्र सिंह से की थी। राघवेंद्र ने अपने चाचा तेजबहादुर सिंह और चाची को बतौर माता-पिता बताकर शादी के कार्ड में नाम छपवाया था। शादी के बाद से ही ससुरालीजन अतिरिक्त दहेज में फार्च्यूनर की मांग को लेकर बेटी को प्रताड़ित करते थे। बेटी के बताने पर वह उसे मायके ले आये। ससुरालीजनों को समझाने बुझाने के बाद 2 जून को पति राघवेंद्र सारिका को अपने साथ लिवा लाया। पांच जून को सूचना मिली कि ससुरालीजनों ने बेटी को कुछ खिला दिया है। जिससे उसकी हालत बिगड़ गई है। उसे जिला अस्पताल फिर कानपुर रेफर किया। रास्ते मे बेटी की मौत हो गई।

ट्रक मालिकों से धोखाधड़ी कर गायब कर दिए कई ट्रक

फतेहपुर। जिले के ट्रक मालिकों से धोखाधड़ी कर शातिरों द्वारा ट्रकों को गायब कर देने का एक मामला सामने आया है! पीड़ित ट्रक मालिकों ने मामले की शिकायत कोतवाली में की है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। ट्रक मालिक राजेश कुमार, सुनील कुमार, प्रेम शंकर, विक्रम सिंह, शिव स्वरूप, गजेंद्र सिंह, जयशंकर, जय सिंह ने बताया कि रायबरेली जनपद के भोजपुर निवासी मो. शकील ने उन लोगों से एक अनुबंध पत्र 22 में तैयार करवाया। जिसमे तय हुआ कि शकील ट्रकों का शेष लोन, टैक्स और चालान जमा कर ट्रक ट्रांसफर करवा लेगा। लगभग बीस ट्रक का अनुबंध हुआ। शकील अपने साथी भोले सिंह और अमित पाल के साथ आकर सारे ट्रक लखनऊ बायपास से लेकर चला गया। काफी दिन बाद भी आरोपी ने न तो लोन जमा किया और न ही टैक्स। काफी समय बीत जाने के बाद उन लोगो ने शकील से संपर्क किया और अनुबंध पत्र का हवाला देते हुए लोन टैक्स आदि जमा कर गाड़ी ट्रांसफर करवाने को कहा तो आरोपी गाली गलौज कर जान से मारने की धमकी देते हुए भगा दिया।

क्षेत्राधिकारियों के कार्यक्षेत्र में हुआ फेरबदल

कानपुर देहात। जनपद की कानून व्यवस्था को सुदृढ करने के उद्देश्य से 5 पुलिस उपाधीक्षक के कार्यक्षेत्र में फेरबदल किया गया है। अरूण कुमार सिंह को क्षेत्राधिकारी कार्यालय भवन से सदर क्षेत्राधिकारी का कार्यभार सौंपा गया है। सुश्री प्रिया सिंह को क्षेत्राधिकारी लाइन यूपी 112/यातायात से सिकन्दरा सर्किल का क्षेत्राधिकारी बनाया गया है। डेरापुर क्षेत्राधिकारी रविकान्त गौड को भोगनीपुर सर्किल का क्षेत्राधिकारी बनाया गया है। सिकन्दरा सीओ शिव ठाकुर को डेरापुर सर्किल का कार्यभार सौंपा गया है।

मजदूर हितों की खातिर भारतीय मजदूर संघ भाजपा से दो-दो हाथ करने को तैयारः महामंत्री

- भाजपा के विचारों से तालमेल मगर सहयोग की उम्मीद नहीं

संवाददाता। हमीरपुर

हमीरपुर मुख्यालय में रविवार को भारतीय मजदूर संघ के सार्वभौमिक सामाजिक सुरक्षा की विशिष्ट वार्ता कार्यक्रम में बोलते हुए मुख्य अतिथि व संगठन के प्रदेश महामंत्री अनिल कुमार उपाध्याय ने दो टूक शब्दों में कहा कि संगठन भाजपा के विचारों से तो तालमेल रखता है मगर मजदूरों की हितों की लड़ाई के लिये संगठन भाजपा से दो दो हाथ करने को पूरी तरह तैयार है। उन्होने साफ कहा कि असंगठित क्षेत्र के मजदूरों की भलाई के लिए भाजपा कोई सहयोग नही कर रही है। कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुये महामंत्री ने कहा कि भारतीय मजदूर संघ पूरे विश्व में नंबर वन का संगठन है। विदेशों में भी इसे राष्ट्रीय संगठन की मान्यता मिल चुकी है। संगठन पूरी तरह से गैर राजनीतिक व स्वतंत्र संगठन है। उन्होंने एल-20 व जी-20 के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि जी-20 में 47 देश शामिल हैं। इसकी अध्यक्षता करने का मौका भारत को मिला है यह गौरव की बात है। देश के दो राज्यों ने मजदूरों से 12-12 घंटे काम करने के लिए आदेश कर दिया है। लेकिन उत्तर प्रदेश सरकार फिलहाल इसमें अभी रोक लगाए हुए है। उन्होने कहा कि देश में 50 करोड़ मजदूर है। जिसमें 94 प्रतिशत मजदूर असंगठित क्षेत्र में काम करता है। उनके हितों के लिए कोई अभी तक नीति नही बनी है,जो चिंता का विषय है। है। मजदूरों को हर हाल में सामाजिक सुरक्षा देनी होगी। उपाध्याय ने कहा कि कल कारखानों, ईट भट्ठों, व्यवसायिक प्रतिष्ठानों में बाल श्रमिकों व अन्य मजदूरों का शोषण किया जा रहा है।

डॉ सुरेश कोरी बने कोरी समाज महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष

हमीरपुर। प्रदेश में कोरी समाज महासंघ की प्रदेश कार्यकारिणी के गठन में डा. सुरेश कुमार कोरी को निर्विरोध प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। डा.सुरेश हमीरपुर जिले के रहने वाले हैं। डा.सुरेश ने बताया कि प्रदेश उपाध्यक्ष लालाराम कोरी कानपुर, प्रदेश महासचिव राजनलाल कमल कोरी कानपुर, प्रदेश कोषाध्यक्ष मुकेश कुमार कोरी घाटमपुर, प्रदेश संगठन सचिव राजेश कोरी जिला औरैया, प्रदेश संयुक्त सचिव श्री पाल कोरी जिला कन्नौज, प्रदेश मंत्री प्रदीप कोरी कानपुर, को सर्वसम्मति से निर्विरोध चुना गया है। प्रदेश अध्यक्ष डा सुरेश कुमार कोरी नेत्र चिकित्सक जिला अस्पताल हमीरपुर में नियुक्त है। उन्होने कहा कि वह कोरी समाज के लिये लगन व ईमानदारी के साथ काम करेंगे अपनी समाज को आगे बढ़ाने में कोई कोर कसर नही छोड़ेगे।

करोड़ों खर्च के बाद भी पेयजल संकट से नहीं मिल रही निजात

- बीडीओ ने दिया जल्द समस्या समाधान का आश्वासन

फतेहपुर। पेयजल की दिक्कत न हो इसके लिए गांव गांव सरकार की योजना के तहत करोड़ों रुपए की लागत से पानी टंकी का निर्माण कराया गया। बावजूद इसके तकनीकी खराबी के चलते महीनों से ग्रामीणों को जलापूर्ति नहीं हो पा रही। वही इस भीषण गर्मी में वाटर लेवल डाउन होने के चलते अधिकतर लगे हैंडपंप भी जवाब दे चुके हैं। नतीजतन ग्रामीण पानी की किल्लत से जूझ रहे हैं। मलवां ब्लाक के इब्राहिमपुर रामपुर गांव सहित दर्जनों गांव में हजारों की आबादी है। यहां पर प्रदेश सरकार की त्वरित आर्थिक विकास योजना के तहत पानी की टंकी बनवाई गई थी।

करीब 5.15 करोड़ की लागत से ओवरहेड टैंक का निर्माण भी कराया गया था। लेकिन यहां पर तैनात जिम्मेदारों की निष्क्रियता के चलते सरकार के करोड़ों रुपए के प्रोजेक्ट में कुछ ही दिनों के अंदर ग्रहण लग गया और पानी टंकी में लगाया गया स्टार्टर खराब हो गया। ग्रामीणों की माने तो करीब दो माह पहले स्टार्टर खराब होने से हजारों ग्रामीण पानी की समस्या से जूझ रहे हैं। भीषण गर्मी से लोग बेहाल हैं। समस्या को लेकर ग्रामीणों ने ग्राम प्रधान से लेकर उच्चाधिकारियों तक समस्या की कई बार शिकायत की लेकिन इस ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। गांव में पेयजल के लिए लगाए गए हैंडपंपों की बात की जाए तो इनके भी हालात बद से बदतर हैं। वाटर लेवल डाउन होने के कारण हैंडपंप भी पानी नहीं उगल रहे हैं। जिससे हजारों ग्रामीणों का जीवन पानी के वजह से अस्त व्यस्त है।

पेज एक का शेष

अध्यादेश दिल्ली...

जूझ रहा है। आप प्रमुख ने यह भी याद किया कि कैसे रामलीला मैदान ने 12 साल पहले देश की राजनीति में अहम भूमिका निभाई थी। उन्होंने दावा किया, यह पवित्र मंच है। 12 साल पहले इसी रामलीला मैदान से भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन सफल हुआ था। इसी तरह लोकतंत्र और संविधान को बचाने का जो आंदोलन आज इस मंच से शुरू हो रहा है, वह भी सफल होगा। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने भाजपा पर हमला करते हुए उसे भारतीय जुगाड़ पार्टी बताया, जो केवल सरकारों को गिराना जानती है। राज्यसभा सदस्य कपिल सिब्बल ने अपने संबोधन में 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा से लड़ने के लिए विपक्षी एकता पर जोर दिया। उन्होंने दावा किया, वे डबल इंजन वाली सरकारों की बात करते हैं लेकिन वास्तव में यह डबल बैरल सरकार है जिसमें एक बैरल सीबीआई और दूसरी ईडी है।

मोदी 1971...

के गठन के साथ यह चर्चा थी कि भारत में पूर्ण बहुमत की सरकार नहीं बनेगी, लेकिन, 2014 में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार बनी और 2019 में फिर से मोदी के नेतृत्व में सरकार बनी जो 2024 में फिर सत्ता में आएगी। उन्होंने कहा कि आज अयोध्या और काशी में केवल मंदिरों का निर्माण नहीं हो रहा, बल्कि सड़कों, मेडिकल कॉलेजों और विश्वविद्यालयों का भी निर्माण किया जा रहा है। इसके पहले नवाबगंज के विश्नोहरपुर स्थित अपने आवास से बृजभूषण शरण सिंह ने करीब 40 किलोमीटर की सड़क यात्रा करके कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे। उनके साथ खुली गाड़ी में तरबगंज के विधायक प्रेम नरायन पाण्डेय और कर्नलगंज के विधायक अजय कुमार सिंह भी सवार थे। रास्ते में जगह-जगह उनका स्वागत किया गया। चालीस डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक के तापमान में कार्यक्रम स्थल पर बड़ी संख्या में कार्यकर्ता एवं समर्थक मौजूद थे। माना जा रहा है कि सांसद ने अपने सम्बोधन की शुरुआत में शायरी पढ़कर अपने ऊपर लगे आरोपों पर पलटवार किया। हालांकि कार्यक्रम समाप्त होने के बाद जब पत्रकारों ने भाषण की शुरुआत शायराना अंदाज में करने की बात पूछी तो उन्होंने कहा, हम शायरी पढ़ते रहते हैं। उन्होंने हंसते हुए कहा, पढ़े-लिखे हो तो शायरी का मतलब निकालो। बिना पढ़े कैमरा पकड़ लिए हो ? उन्होंने कहा, हमारा हर कार्यक्रम ऐसे ही होता है। यह कोई नई बात नहीं है। यहां विवाद का कोई विषय नहीं है। यह पार्टी का कार्यक्रम है। गोंडा अथवा अयोध्या संसदीय सीट से चुनाव लड़ने के बारे में पूछे गए एक प्रश्न के जवाब में बृजभूषण शरण सिंह ने कहा, कैसरगंज लोकसभा से ही चुनाव लड़ूंगा, लड़ूंगा, लड़ूंगा। उन्होंने जनता के नाम एक संदेश में कहा, 2024 में एक बार फिर भाजपा की सरकार बनेगी, पूर्ण बहुमत की बनेगी। उत्तर प्रदेश की सभी सीटों पर भाजपा जीतकर जाएगी। पहलवानों के बारे में कुछ भी न बोलने पर उनसे पूछा गया कि इस मुद्दे पर बोलने के लिए आप किसका इंतजार कर रहे हैं? तो उन्होंने तपाक से कहा अदालत के फैसले का।

अफ्रीका में...

अब भारत लौट आए हैं। सूत्रों ने कहा कि भारतीय मिशन के अधिकारी जहाज के चालक दल के साथ नियमित संपर्क में रहे।

न पहले...

कि राजनीति में बहुत लोग आते हैं, प्रधान, प्रमुख, विधायक, सांसद, मंत्री, मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री बनते हैं और लोग आते-जाते रहते हैं, लेकिन मेरा मानना है कि हम किसी भी पद पर हों या न हों, जनता हमेशा तौलती है कि हम जो कहते हैं क्या हम उसे पूरा करते हैं। जनता के बीच विश्वसनीयता पहली प्राथमिकता है। विश्वसनीयता राजनीति की सबसे बड़ी पूंजी है। उन्होंने कहा, मैं पिछले 20-22 वर्षों से राजनीति में हूं और मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया, जिससे ऐसा लगे कि विश्वास में कमी आ गई हो। आपका भरोसा मेरे लिए सबसे बड़ी पूंजी है, मैं इसे कभी कम नहीं होने दूंगा। उन्होंने कहा, मेरी आवाज़ की बुलंदी में कोई कमी तो नहीं है, मेरा जो विश्वास है और जो वादा है उस पर न मैं पहले पीछे हटा न अब हटने वाला हूँ। स्थिति जैसी भी हो, लोगों के लिए लड़ना और उन्हें न्याय दिलाना हमारा वादा था और वादा रहेगा। उल्लेखनीय है कि पिछले महीने अपनी पांच दिवसीय जयपुर-अजमेर 'जन संघर्ष यात्रा' के समापन पर पायलट ने भ्रष्टाचार और पेपर लीक के मुद्दे पर सरकार के समक्ष तीन मांगें रखीं। तब गहलोत ने पायलट का नाम लिए बिना कहा था कि पेपर लीक से पीड़ित उम्मीदवारों के लिए मुआवजे की मांग 'मानसिक दिवालियापन' का संकेत है। पायलट ने रविवार को कहा कि गरीबों और युवाओं की मदद के लिए दिल बड़ा होना चाहिए। उन्होंने कहा कि इतना खजाना है कि गरीबों और युवाओं की मदद की जा सकती है। कांग्रेस नेता ने कहा जब वह प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष थे तब उन्होंने मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे साल के 365 दिन विरोध किया था लेकिन कभी उनके मुँह से कोई छोटी बात या अपशब्द नहीं निकला। उन्होंने कहा वह उम्र में बड़ी हैं लेकिन मैं आज भी कहता हूँ आपने खान आवंटित की थी.. चोरी पकड़ी गई तो उसे आपने रद्द कर दी लेकिन आवंटन तो किया था ना .. उसका तो लेखा जोखा होना पड़ेगा। हर गलती की सजा तो होती ही है।

पाक में...

आया। खबर के अनुसार, नागर विमानन प्राधिकरण (सीएए) के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि यह असामान्य नहीं है क्योंकि मौसम खराब होने की स्थिति में अंतरराष्ट्रीय रूप से इसकी इजाजत होती है।

चुनौतियों को...

दिशा में एक और कदम है। देश भर में सिविल सेवा प्रशिक्षण संस्थानों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने और सिविल सेवा अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण अवसंरचना को मजबूत करने के उद्देश्य से, क्षमता निर्माण आयोग द्वारा राष्ट्रीय प्रशिक्षण सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। बयान के अनुसार, केंद्र सरकार के विभागों, राज्य सरकारों, स्थानीय सरकारों के लोकसेवकों के साथ-साथ निजी क्षेत्र के विशेषज्ञ भी विचार-विमर्श में भाग ले रहे हैं।

फैशन शो...

ही मौत हो गई। इस हादसे में बॉबी राज नाम का एक अन्य युवक भी दब गया। पुलिस ने बताया कि इस मामले में फैशन शो के ऑर्गेनाइजर और लाइटिंग ट्रस्ट लगाने वाले लोगों से पूछताछ की जा रही है।

भारत ने...

और गेंद को अपने कब्जे में अधिक समय रखा। कोरिया को भी पेनल्टी कॉर्नर मिला लेकिन नीलम ने अंतिम लम्हों में गेंद को गोल में जाने से रोक दिया। दोनों टीम के आक्रामक रुख अपनाने के बावजूद पहला क्वार्टर गोल रहित रहा। दक्षिण कोरिया ने दूसरे क्वार्टर में भी आक्रामक रुख अपनाते हुए भारत को बैकफुट पर धकेला। कोरिया को कुछ पेनल्टी कॉर्नर मिले लेकिन टीम भारत के मजबूत डिफेंस को भेदने में नाकाम रही। अनु ने इसके बाद पेनल्टी स्ट्रोक को गोल में बदलकर भारत को बढ़त दिलाई। भारत की खुशी हालांकि अधिक समय तक नहीं रही क्योंकि सियो यिओन ने डी के अंदर से सटीक शॉट लगाकार कोरिया को बराबरी दिला दी। मध्यांतर तक स्कोर 1-1 रहा। दूसरे हाफ में भारत ने पलटवार करने की रणनीति अपनाई और टीम को इसका फायदा भी मिला जब नीलम ने पेनल्टी कॉर्नर पर गोल दागकर स्कोर 2-। किया। भारत ने इसके बाद डिफेंस पर अधिक ध्यान दिया और बढ़त बरकरार रखते हुए जीत दर्ज की। हॉकी इंडिया ने खिताब जीतने वाली टीम की प्रत्एक खिलाड़ी को दो लाख रुपए नकद देने जबकि सहयोगी स्टाफ के प्रत्एक सदस्य को एक लाख रुपए देने की घोषणा की। भारत टूर्नामेंट में अजेय रहा और साथ ही इस साल चिली में होने वाले महिला जूनियर विश्व कप 2023 में भी जगह बना ली। हॉकी इंडिया के अध्यक्ष दिलीप टिर्की ने कहा, हम बेहद गौरवान्वित हैं कि भारतीय जूनियर महिला टीम ने पहली बार जूनियर एशिया कप का खिताब जीता। उन्होंने कहा, यह इस साल होने वाले जूनियर विश्व कप में उनकी चुनौती के लिए एक मजबूत नींव के रूप में काम करेगा।

ऑस्ट्रेलिया ने...

में सुपर 12 चरण में, 2022 टी20 विश्व कप सेमीफाइनल और विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप 2021 फाइनल हार गई। भारत को उसके दमदार बल्लेबाजी क्रम ने पूरी तरह निराश किया। रोहित, शुभमन गिल, चेतेश्वर पुजारा और कोहली बड़े मैच में चल नहीं सके। पांचवें दिन कोहली और रहाणे क्रीज पर उतरे तो दर्शकों को उम्मीद बंधी थी लेकिन बोलैंड ने सातवें ओवर में ही कोहली और जडेजा को रवाना करके आस्ट्रेलिया के पक्ष में पटकथा लिख डाली। कोहली चौथे दिन जिस फॉर्म में दिख रहे थे, ऐसा लगा था कि वह भारत को चमत्कारिक जीत दिलाएंगे और 76वां शतक ठोकेंगे। लेकिन पेचीदा पिच की असमान उछाल पर विकेट नहीं बचा सके। उन्होंने दूसरी स्लिप में स्टीव स्मिथ को कैच थमाया। चंद रोज पहले ही चेन्नई सुपर किंग्स को आईपीएल फाइनल में यादगार जीत दिलाने वाले जडेजा दो गेंद बाद विकेटकीपर को आसान कैच दे बैठे। रहाणे और केएस भरत ने कुछ अच्छे स्ट्रोक्स लगाए लेकिन मिचेल स्टार्क ने वापसी करते हुए रहाणे को आउट किया। इसके बाद बस भारत की हार का इंतजार ही बाकी रह गया था।

ट्रंप ने आरोपों को निराधार बताया

गोपनीय दस्तावेजों को लेकर संघीय फैसले पर बोले

भाषा। ग्रीन्सबोरो (अमेरिका)

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने गोपनीय दस्तावेज रखने संबंधी मामले में अपने ऊपर लगे संघीय आरोपों को शनिवार को हास्यास्पद और निराधार करार दिया। ट्रंप इस मामले में अपने खिलाफ अभियोग के सार्वजनिक होने के बाद पहली बार लोगों के सामने आए। उन्होंने उन पर लगे 37 आरोपों को अपने समर्थकों पर हमला बताया और इस घटनाक्रम का राजनीतिक लाभ उठाने की कोशिश की। ट्रंप ने जॉर्जिया और नॉर्थ कैरोलाइना में रिपब्लिकन पार्टी के सम्मेलनों को संबोधित करते हुए न्याय विभाग द्वारा लगाए गए आरोपों को राष्ट्रपति के तौर पर उनकी वापसी की संभावनाओं को नुकसान पहुंचाने की कोशिश बताया। ट्रंप ने अपने समर्थकों की भीड़ से कहा, वे मुझे एक के बाद एक, कई मामलों में निशाना बनाकर मुझ पर हमला करने की कोशिश कर हरे हैं। ऐसा करके वे हमारी मुहिम रोकना चाहते हैं। अंततः वे मेरे पीछे नहीं आ रहे। वे आपके पीछे पड़े हैं। ट्रंप ने संकल्प लिया कि वह अभियोग के बावजूद राष्ट्रपति पद के चुनाव की दौड़ में बने रहेंगे। पूर्व राष्ट्रपति ने जोर देकर कहा कि उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया है। ट्रंप के आवास से गोपनीय दस्तावेज मिलने संबंधी आरोपों से जुड़े अभियोग को शुक्रवार को सार्वजनिक कर दिया गया था। यह मामला फ्लोरिडा स्थित ट्रंप के आवास मार-ए-लागो से सैकड़ों गोपनीय दस्तावेज मिलने से जुड़ा है।

स्कॉटलैंड की पूर्व मंत्री निकोला स्टर्जन पार्टी के वित्तीय मामलों में गड़बड़ी के आरोप में गिरफ्तार

लंदन। स्कॉटलैंड की राजनीति में कई वर्षों तक अपना दबदबा रखने वाली पूर्व मंत्री निकोला स्टर्जन को उनकी पार्टी के वित्तीय मामलों में गड़बड़ी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। स्वतंत्रता की समर्थक स्कॉटिश नेशनल पार्टी के वित्तीय मामलों में गड़बड़ी की जांच कर रही पुलिस ने रविवार को निकोला को गिरफ्तार कर लिया। स्कॉटलैंड की पुलिस ने कहा कि 52 वर्षीय निकोला को स्कॉटिश नेशनल पार्टी के वित्त पोषण और उसके वित्तीय मामलों में चल रही जांच के संबंध में एक संदिग्ध के रूप में हिरासत में लिया गया। पुलिस ने कहा, महिला हिरासत में है और पुलिस स्कॉटलैंड के जासूसों से पूछताछ कर रही है। ब्रिटेन की पुलिस संदिग्धों का नाम तब तक नहीं लेती, जब तक उन पर आरोप नहीं लगाया जाता।

यूएस कैपिटल में पहले हिंदू-अमेरिकी शिखर सम्मेलन का आयोजन

भाषा। वाशिंगटन

यूएस कैपिटल (संसद परिसर) में राजनीतिक भागीदारी के लिए पहले हिंदू-अमेरिकी शिखर सम्मेलन के आयोजन के वास्ते देशभर के प्रतिष्ठित भारतीय-अमेरिकी वाशिंगटन में इकट्ठा हुए हैं। आयोजकों के मुताबिक, अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष केविन मैक्कार्थी सहित कई अन्य सांसद इस शिखर सम्मेलन को संबोधित करेंगे। हाल ही में गठित राजनीतिक कार्रवाई समिति अमेरिकन्स 4 हिंदू 20 से अधिक भारतीय-अमेरिकी संगठनों के साथ मिलकर अमेरिकी कैपिटल में 14 जून को हिंदू-अमेरिकी शिखर सम्मेलन का आयोजन करेगी। इस सम्मेलन में अमेरिका में रह रहे हिंदू समुदाय की चिंताओं को सांसदों के समक्ष उठाया जाएगा। फ्लोरिडा, न्यूयॉर्क, बोस्टन, टेक्सास, शिकागो और कैलिफोर्निया सहित अन्य प्रांतों से लगभग 130 भारतीय-अमेरिकी नेता, जो 20 हिंदू और भारतीय संगठनों का प्रतिनिधित्व करते हैं, इस शिखर सम्मेलन के लिए वाशिंगटन पहुंच रहे हैं। सम्मेलन में हिस्सा लेने की तैयारियों में जुटे मशहूर हृदयरोग विशेषज्ञ डॉ. रोमेश जपरा ने शनिवार को कहा कि हिंदू-अमेरिकी देशभर में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं, लेकिन वे राजनीतिक लिहाज से काफी पीछे हैं। उन्होंने कहा, हमें लगता है कि राजनीतिक रूप से हमारे साथ कभी भेदभाव नहीं किया गया, हम अच्छा कर रहे हैं, लेकिन दुर्भाग्य से स्थितियां बदल रही हैं। डॉ. जपरा ने आरोप लगाया कि इक्वेलिटी लैब्स और केयर जैसे संगठन हिंदू धर्म को खत्म करने की कोशिश कर रहे हैं। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा, वे कईहिंदू-विरोधी गतिविधियों में लगे हैं, इसलिए हमने सोचा कि हमें एक साथ आना चाहिए। हमें सभी हिंदू-अमेरिकियों, सभी नेताओं और सभी संगठनों के कार्यकारी प्रमुखों को एकजुट करना चाहिए तथा यहां कैपिटल हिल में सांसदों के समक्ष अपने मुद्दों को उठाना चाहिए। डॉ. जपरा ने बताया कि भारतीय-अमेरिकी समुदाय प्रतिनिधि सभा में पहला हिंदू कॉकस बनाने की दिशा में काम कर रहा है, जो हिंदू-अमेरिकियों के हितों की रक्षा करने वाले सांसदों का समूह होगा। उन्होंने कहा कि हिंदू कॉकस अमेरिकी संसद के उन नेताओं के लिए समर्थन और धन जुटाएगा, जो हिंदू सिद्धांतों और मूल्यों से सहमत हैं और समुदाय की मदद करने तथा हिंदू फोबिया , हिंदुओं के खिलाफ नफरत और आव्रजन से जुड़ी चिंताओं के बारे में बात करने को तैयार हैं।

क्विक न्यूज

तालिबान ने उसके अंदर दरार पैदा होने से जुड़ी संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट को निराधार बताया

इस्लामाबाद। तालिबान ने रविवार को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) की उस रिपोर्ट को निराधार और पक्षपातपूर्ण करार दिया, जिसमें उसके (तालिबान के) अंदर पैदा हो रही दरार को उजागर किया गया है। पिछले सात महीनों में राजधानी काबुल से तालिबान के गढ़ एवं इसके सर्वोच्च नेता हिबतुल्ला अखुंदज़ादा के दबदबे वाले दक्षिणी शहर कंधार तक सत्ता में एक बड़ा बदलाव देखा गया है। सुरक्षा परिषद की विश्लेषणात्मक सहायता और प्रतिबंध निगरानी टीम द्वारा जून के शुरू में जारी की गई रिपोर्ट में कहा गया है कि तालिबान शासन संरचना सभी प्रकार के विरोध के प्रति अत्यधिक शंकित, पश्तून-केंद्रित और दमनकारी बनी हुई है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि सत्ता के केंद्र के रूप में कंधार की वापसी हुई है, जैसा कि 1990 के दशक में अफगानिस्तान में तालिबान के शासन के दौरान हुआ था तथा मौजूदा सरकार के केंद्रीय स्थान काबुल में तालिबान के वरिष्ठ मंत्रियों को दरकिनार किया जा रहा है। तालिबान के मुख्य प्रवक्ता जैसे प्रमुख लोगों ने कंधार के दक्षिण में कार्यालय स्थापित किए हैं। काबुल के बजाय कंधार से, शैक्षणिक संस्थानों और कार्य स्थलों से महिलाओं तथा लड़कियों को बाहर करने जैसे फरमान जारी किए गए।

अफगानिस्तान में सरकारी पदों और बड़ी आर्थिक परियोजनाओं को लेकर नेताओं में रस्साकशी : रिपोर्ट

संयुक्त राष्ट्र। अफगानिस्तान में तालिबान द्वारा नियुक्त गृह मंत्री सिराजुद्दीन हक्कानी बड़ी आर्थिक परियोजनाओं को कथित तौर पर अपने नियंत्रण में लेना चाहते हैं, जिनमें मुख्य रूप से तुर्कमेनिस्तान-अफगानिस्तान-पाकिस्तान-भारत (टीएपीआई) गैस पाइपलाइन परियोजना के अफगान खंड का निर्माण शामिल है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में यह दावा किया गया है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि अफगानिस्तान और उसके आसपास के क्षेत्र में आतंकवाद का खतरा बढ़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) की 1988 तालिबान प्रतिबंध समिति की विश्लेषणात्मक समर्थन एवं प्रतिबंध निगरानी टीम की 14वीं रिपोर्ट में कहा गया है कि अफगानिस्तान में संघीय और प्रांतीय प्रशासन में पदों के वितरण को लेकर तालिबान के अधिकारियों के बीच कलह स्पष्ट है। शुक्रवार को यहां जारी रिपोर्ट में कहा गया है, कार्यवाहक गृह मंत्री एवं हक्कानी नेटवर्क के नेता सिराजुद्दीन हक्कानी और कार्यवाहक प्रथम उप प्रधानमंत्री मुल्ला बरादर के बीच कथित तौर पर बड़े पैमाने पर मतभेद हैं। इसमें कहा गया है कि बरादर का सरकार में कम प्रभाव है, लेकिन उन्हें दक्षिणी प्रांतों के प्रशासनों का समर्थन मिलना बरकरार है।

सुलभ स्वच्छता परियोजना का दक्षिण अफ्रीका तक विस्तार किया जाएगा

जोहानिसबर्ग। भारत में डॉ. बिंदेश्वर पाठक द्वारा स्थापित अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित सुलभ स्वच्छता परियोजना का दक्षिण अफ्रीका में ग्रामीण समुदायों तक इन सुविधाओं को पहुंचाने के लिए विस्तार किया जाएगा। डॉ. पाठक पिछले सप्ताह पीटरमारित्जबर्ग में गांधी-किंग-मंडेला अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 2023 में अतिथि वक्ता थे क्योंकि उन्होंने जो मॉडल विकसित किया, वह गांधीवादी सिद्धांतों पर आधारित है। इस मॉडल ने न केवल स्वच्छता को बढ़ावा दिया बल्कि यह भारत में महिलाओं के सम्मान से भी जुड़ा है। उन्होंने कहा, गांधी ने स्वच्छता के बारे में बात की थी। उन्होंने 1919 में भारत में कहा था कि वह पहले एक स्वच्छ भारत और शिक्षा चाहते हैं, बाद में स्वतंत्रता। इसलिए, मैंने एक ऐसी प्रौद्योगिकी का आविष्कार किया, जिसने घर के अंदर शौचालय बनाने में मदद की ई। भारत सरकार के समर्थन के कारण, देश में अब हर घर में शौचालय है। पाठक ने कहा कि उन्होंने भारत की स्वच्छता संबंधी समस्या को हल करने के लिए रेलवे स्टेशन, बस अड्डों और पुलिस थानों जैसी जगहों पर भी सार्वजनिक शौचालय बनवाए हैं। उन्होंने कहा, इसे दक्षिण अफ्रीका में लागू किया जा सकता है क्योंकि यह एक ऐसी प्रौद्योगिकी है जिसे वैश्विक स्तर पर क्रियान्वित किया जा सकता है। उन्होंने कहा, यह प्रौद्योगिकी कम लागत पर लागू की जा सकती है, क्योंकि भारत की तरह दक्षिण अफ्रीका भी अमेरिका जैसी सीवरेज प्रणाली का खर्च नहीं उठा सकता, इसलिए वे (अमेरिकी) प्रौद्योगिकियां हमारे देशों में स्वच्छता की समस्याओं को हल करने में सहायक नहीं हैं।

यूरोपीय नेताओं ने पलयान रोकने के लिए ट्यूनीशिया की और मदद की पेशकश की

ट्यूनिस। ट्यूनीशिया की यात्रा पर आए यूरोपीय नेताओं ने इस उत्तरी अफ्रीकी देश में स्थिरता लाने और यहां से प्रवासियों को यूरोप आने से रोकने के लिए रविवार को एक अरब यूरो से अधिक राशि की वित्तीय मदद देने की पेशकश की। यूरोपीय नेताओं ने ट्यूनीशिया के लिए समुद्र के भीतर से डाटा केबल बिछाने की परियोजना और नवीनीकरण ऊर्जा परियोजनाओं में भी निवेश करने की घोषणा की। ट्यूनीशिया में निरंकुश रुख अपना रहे राष्ट्रपति ने आर्थिक संकट से गुजर रहे देश को अंतरराष्ट्रीय मदद दिलाने की प्रक्रिया को सुचारु बनाने के उद्देश्य से वार्ता के लिए इटली, नीदरलैंड और यूरोपीय संघ (ईयू) के नेताओं की मेजबानी की। प्रवासन की समस्या से निपटने के लिए यूरोपीय संघ (ईयू)द्वारा किया गए समझौते के लिए ट्यूनीशिया के राष्ट्रपति कैस सईद का समर्थन अहम है। यूरोपीय नेताओं से वार्ता की पूर्व संध्या पर सईद ने तटीय शहर स्फैक्स के प्रवासी शिविर का दौरा किया था। यह वह स्थान है जहां से प्रवासी भूमध्य सागर पार इटली के लिए नौका से यात्रा करते हैं। सईद ने शिविर में रह रहे परिवारों से बात की और पूरे अफ्रीका से यूरोप जाने के लिए ट्यूनीशिया पहुंचे लोगों के लिए अंतरराष्ट्रीय मदद की गुहार लगाई। ट्यूनीशिया के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री नजला बौदेन ने रविवार को इतालवी प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी, नीदरलैंड के प्रधानमंत्री मार्क रूट और यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सला वोन डेर लिएन से मुलाकात की।

ब्रिटेन:सहकर्मी का यौन उत्पीड़न करने के मामले में भारतीय मूल के पूर्व पुलिस अधिकारी को सजा

लंदन। ब्रिटेन में भारतीय मूल के एक पूर्व पुलिस अधिकारी को ड्यूटी के दौरान अपनी सहकर्मी का यौन उत्पीड़न करने का दोषी ठहराते हुए 16 महीने जेल की सजा सुनाई गई है। मेट्रोपोलिटन पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने शनिवार को एक बयान में कहा कि पूर्व पुलिस कांस्टेबल अर्चित शर्मा को शुक्रवार को 16 महीने कैद की सजा सुनाई गई और उसका नाम दस साल के लिए यौन अपराध रजिस्टर में दर्ज किया गया। दस साल तक पीड़ित से संपर्क करने से रोकने के लिए शर्मा के खिलाफ एक निरोधक आदेश के साथ ही उसे 156 पाउंड का जुर्माना पीड़िता को देने का आदेश दिया गया। मेट्रोपोलिटन पुलिस की नॉर्थ एरिया कमांड यूनिट से जुड़े शर्मा पर दिसंबर 2020 में ड्यूटी के दौरान एक सहकर्मी का यौन उत्पीड़न करने का आरोप लगा था।

उत्तरी वज़ीरीस्तान में मुठभेड़ में तीन सैनिकों की मौत, तीन आतंकी भी मारे गए

पेशावर। अफ्गानिस्तान की सीमा से लगे पाकिस्तान के अशांत उत्तरी वज़ीरीस्तान कबायली जिले में सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच हुई मुठभेड़ में तीन सैनिकों की मौत हो गई, जबकि तीन आतंकी भी मारे गए हैं। सेना की मीडिया शाखा इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (आईएसपीआर) ने रविवार को एक बयान में कहा कि यह मुठभेड़ खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के जिले में मीरानशाह इलाके में शनिवार-रविवार की दरमियानी रात हुई। आईएसपीआर ने बताया कि मुठभेड़ में चार आतंकवादी घायल भी हुए हैं। सुरक्षा बलों ने मारे गए आतंकवादियों के कब्जे से हथियार और गोला-बारूद बरामद किया और क्षेत्र में तलाश अभियान शुरू कर दिया है ताकि किसी अन्य आतंकी की मौजूदगी होने पर उसे भी मार गिराया जाए।

सैन फ्रांसिस्को में गोलीबारी : नौ लोग घायल, एक की हालत गंभीर

सैन फ्रांसिस्को। सैन फ्रांसिस्को के मिशन जिले में शुक्रवार रात हुई गोलीबारी में नौ व्यक्ति घायल हो गए। पुलिस ने घटना के बारे में कहा कि ऐसा प्रतीत होता है कि यह लक्षित मामला है। सैन फ्रांसिस्को क्रॉनिकल की खबर के अनुसार गोलीबारी की घटना रात करीब नौ बजे के बाद उस समय हुई जब 24वीं स्ट्रीट एवेन्यू और ट्रीट एवेन्यू चौराहे पर स्थित कपड़े की दुकान में पार्टी चल रही थी। सैन फ्रांसिस्को पुलिस विभाग ने शुरुआत में कहा कि उम्मीद है कि गोलीबारी के सभी पीड़ितों की जान बच जाएगी।

शिकागो में शव यात्रा के दौरान गोलाबारी, चार जख्मी

शिकागो। अमेरिका में शिकागो के उपनगरीय इलाके में शवयात्रा के दौरान गाड़ियों पर की गई गोलीबारी में चार लोग जख्मी हुए है जिनमें से दो की हालत गंभीर है। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि शनिवार दोपहर करीब एक बजे एक पिकअप ट्रक एक अन्य वाहन को खीच लेकर ले जा रहा था तभी गाड़ी के अंदर से किसी ने गोलीबारी कर दी। शव यात्रा शिकागो से उपनगरीय क्षेत्र ओक पार्क जा रही थी। पुलिस ने बताया कि गाड़ी में सवार दो लोगों को गंभीर हालत में अस्पताल ले जाया गया है। शव यात्रा में शामिल अन्य वाहन में सवार दो व्यक्ति भी गोलीबारी में जख्मी हुए है लेकिन उनकी हालत गंभीर नही है और उनका अस्पताल में इलाज किया गया है।

इराक में सैन्य ठिकाने पर हुए आतंकवादी हमले में दो सैनिकों की मौत

बगदाद। इराक के किरकुक में सेना के ठिकाने पर हुए आतंकवादी हमले में दो सैन्य अधिकारियों की मौत हो गई और तीन सैनिक घायल हो गए। इराकी सुरक्षा मीडिया प्रकोष्ठ ने रविवार को बताया कि आतंकवादी समूह इस्लामिक स्टेट से संबंध रखने वाले आतंकवादियों ने डिबिस जिले में शनिवार देर रात हल्के व मध्यम हथियारों से सैन्य ठिकाने को निशाना बनाया। हालांकि प्रकोष्ठ ने इस बारे में विस्तृत जानकारी नहीं दी। बयान में कहा गया है कि इराकी अधिकारियों ने हमले की जांच के सिलसिले में एक बैठक की है।इस्लामिक स्टेट ने शनिवार देर रात एक बयान जारी कर हमले की जिम्मेदारी ली।

उत्तरी जापान में भूकंप का तेज़ झटका

तोक्यो। जापान के उत्तरी हिस्से में स्थित मुख्य द्वीप होक्काइदो में रविवार को 6.2 तीव्रता का भूकंप का झटका महसूस किया गया, लेकिन किसी के हताहत होने या किसी नुकसान के बारे में अभी खबर नहीं मिली है। सुनामी की चेतावनी जारी नहीं की गई है। क्षेत्र में परमाणु संयंत्रों में समस्याओं की कोई रिपोर्ट नहीं है। इसके अलावा उत्तरी जापान में बिजली आपूर्ति या बुलेट ट्रेन के संचालन में व्यवधान की भी कोई रिपोर्ट नहीं मिली है। जापानी मौसम विज्ञान एजेंसी के मुताबिक, शाम छह बजकर 54 मिनट पर भूकंप आया जिसका केंद्र 136 किलोमीटर की गहराई में था। एजेंसी ने कहा कि झटका द्वीप के ज्यादातर हिस्से में महसूस किया गया जिसमें चितोस और अतसुमतो शहर भी शामिल हैं। एजेंसी ने लोगों को आगाह किया कि अगले कुछ दिनों में तेज़ झटके महसूस किए जा सकते हैं और भूस्खलन भी हो सकता है, इसलिए उन्हें सतर्क रहना चाहिए। होक्काइदो एचटीबी न्यूज़ ने खबर दी है कि स्थानीय ट्रेन सेवा और सबवे सेवा में विलंब हुआ और एक राजमार्ग के एक हिस्से को अस्थाई रूप से बंद कर दिया गया। देश के सबसे बड़े द्वीप उत्तरी होन्शु के कुछ हिस्सों में भी झटके महसूस किए गए। इसी द्वीप पर तोक्यो स्थित है। हालांकि राजधानी इससे प्रभावित नहीं हुई।

हिंसा के मामले में इमरान के खिलाफ कार्यवाही दो-तीन सप्ताह में शुरू होगी: पाक के गृह मंत्री

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के गृह मंत्री राणा सनाउल्लाह ने कहा है कि भ्रष्टाचार के एक मामले में पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की नौ मई को हुई गिरफ्तारी के बाद भड़की हिंसा के लिए खान के खिलाफ दो-तीन सप्ताह के भीतर कानूनी कार्यवाही शुरू की जाएगी। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के प्रमुख खान (70) ने हिंसा में अपनी संलिप्तता से इनकार करते हुए कहा कि जब हिंसक घटनाएं हुईं तो वह जेल में थे। सनाउल्लाह ने शनिवार रात जियो न्यूज के साथ एक साक्षात्कार में कहा कि हिंसक विरोध प्रदर्शन के लिए खान 100 प्रतिशत जिम्मेदार थे। गृह मंत्री ने कहा, पाकिस्तान में जो कुछ भी हुआ ... पाकिस्तानी राजनीति में नफरत, पाकिस्तान की राजनीति में अराजकता, पाकिस्तान में आर्थिक गिरावट और देश में अस्थिरता : केवल एक ही व्यक्ति इन सबका सूत्रधार है। उसका नाम इमरान खान है।

मंत्री ने आरोप लगाया कि खान ने युवाओं के मन में जहर घोल दिया और वह राजनीतिक विरोधियों की मौत से कम कुछ भी स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं।

भूमि घोटाले में मामला दर्ज

लाहौर। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के खिलाफ रविवार को एक और मामला दर्ज किया गया, जो देश के पंजाब प्रांत में धोखाधड़ी के जरिए औने-पौने दाम पर 5,000 कनाल (625 एकड़) भूमि की खरीद से संबद्ध है।पिछले साल अप्रैल में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री पद से बेदखल होने के बाद पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी के प्रमुख खान (70) के खिलाफ मामलों की कुल संख्या अब बढ़कर 140 से अधिक हो गई है।

सेना का समर्थन खोने से परेशान हैं इमरान खान: बिलावल

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो-जरदारी ने कहा है कि पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान राजनीति में सेना के दखल के खिलाफ नहीं है, बल्कि वह उससे इसलिए परेशान है क्योंकि सेना अब उनका समर्थन नहीं कर रही।बिलावल ने शनिवार को कतर स्थित अल जजीरा समाचार चैनल से कहा, पाकिस्तान सेना को लेकर खान की दिक्कत पिछले साल अप्रैल में तब शुरू हुई जब उसने घोषणा की कि वह राजनीति में नहीं पड़ेगी और किसी का पक्ष नहीं लेगी। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ के अध्यक्ष खान का सेना के साथ मुद्दा यह नहीं है कि वे राजनीति में शामिल है।

पाकिस्तान पुलिस ने अपहृत हिंदू लड़की को कराची से बरामद किया

भषा। कराची

पाकिस्तान के सिंध प्रांत में एक अफगान पश्तून परिवार द्वारा कथित तौर पर अपहृत हिंदू बच्ची को कराची से सकुशल बरामद किया गया है। एक पुलिस अधिकारी ने यह जानकारी दी। अधिकारी के मुताबिक, आरोपी परिवार ने लड़की का कथित तौर पर जबरन धर्मांतरण कराया और उसका निकाह एक मुस्लिम व्यक्ति से करा दिया। टंडो अल्लाहयार के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सैयद सलीम शाह ने बताया कि रवीना मेघवाल को दक्षिणी सिंध के टंडो अल्लाहयार से अगवा कर कराची ले जाया गया था। शाह के अनुसार, लड़की के परिवार और सिंध प्रांत में अल्पसंख्यकों के अधिकारों के लिए आवाज उठाने वाले संगठन पाकिस्तान दहरावर इत्तेहाद (पीडीआई) ने अपहरण की शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने कहा, मामले की जांच के बाद हमने एक टीम कराची भेजी, जहां से लड़की को सकुशल बरामद किया गया और वापस मीरपुरखास लाया गया। शाह के मुताबिक, अपहरण के आरोपी अफगान पाश्तून परिवार ने दावा किया है कि लड़की ने अपनी मर्जी से इस्लाम कबूल किया था और जामो खान नाम के मुस्लिम शख्स से शादी चराई थी। उन्होंने बताया कि जब पीड़िता और आरोपियों को टंडो अल्लाहयार की एक अदालत में पेश किया गया, तब जामो खान और उसके वकीलों ने एक विवाह प्रमाणपत्र दिखाया, लेकिन जब उससे (जामो खान से) अपना राष्ट्रीय पहचान पत्र सौंपने को कहा गया, तो पता चला कि वह पाकिस्तानी नागरिक नहीं है और उसके पास अफगानिस्तान का पहचान पत्र है।

भारत-अमेरिका मॉडल दिखाता है कि रणनीतिक साझेदार सभी क्षेत्रों में कैसे काम कर सकते हैं : यूएसआईएसपीएफ

न्यूयॉर्क। भारत-अमेरिका के बीच मजबूत संबंधों के पक्षधर एक जाने-माने अमेरिकी संगठन का कहना है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अमेरिका की राजकीय यात्रा द्विपक्षीय संबंधों के लिए बड़ा मील का पत्थर है। संगठन ने कहा कि भारत और अमेरिका के बीच संबंधों का मॉडल दर्शाता है कि दो रणनीतिक सहयोगी कैसे सभी क्षेत्रों में एक साथ काम कर सकते हैं। प्रधानमंत्री मोदी अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन और प्रथम महिला जिल बाइडन के निमंत्रण पर 21 जून से 24 जून तक अमेरिका की यात्रा पर रहेंगे। यूएस-इंडिया स्ट्रैटजिक पार्टनरशिप फोरम (यूएसआईएसपीएफ) के अध्यक्ष जॉन चैम्बर्स ने पीटीआई-भाषा के साथ विशेष साक्षात्कार में कहा, मैं समझता हूं कि यह यात्रा भविष्य के लिए एक बड़ा मील का पत्थर होगी। मैं हमेशा से भारत, उसके भविष्य और वैश्विक मंच पर उसके नेतृत्व से आर्थिक रूप से क्या हासिल किया जा सकता है, इसका बहुत बड़ा समर्थक रहा हूं। सिस्को में चेयरमैन एमेरिटस और जेसी2 वेंचर्स के संस्थापक चैम्बर्स ने भारत और अमेरिका के दुनिया के सबसे मजबूत रणनीतिक साझेदार के रूप में उभरने की संभावनाओं को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि यह साझेदारी न केवल दोनों देशों के बीच कारोबार, बल्कि भारत के 28 राज्यों और केंद्र-शासित प्रदेशों और अमेरिका के 50 प्रांतों में रोजगार को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगी। मोदी का 22 जून को वाशिंगटन डीसी में राजकीय अतिथि के रूप में स्वागत किया जाएगा और उसी दिन वह अमेरिकी कांग्रेस के संयुक्त सत्र को संबोधित करेंगे। वह दो बार यह सम्मान पाने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री होंगे।

उत्तर पश्चिम पाकिस्तान में भारी बारिश से 34 व्यक्तियों की मौत

पेशावर। उत्तर पश्चिम पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में मूसलाधार बारिश, तेज हवाओं और गरज चमक के साथ वर्षा होने की वजह से कम 34 व्यक्तियों की मौत हो गई और 100 से अधिक अन्य घायल हो गए।प्रांतीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (पीडीएमए) के मुताबिक, क्षेत्र में शनिवार को हुई भारी बारिश की वजह से बन्नू, दीखान, लक्की मारवात और करक जिलों में लोगों की जान गई। दक्षिणी जिलों के कुछ हिस्सों में दीवार और पेड़ गिरने की घटनाओं से लोग हताहत हुए हैं। घायल हुए 110 से ज्यादा लोगों को अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। प्रांतीय सरकार ने पुनर्वास एवं राहत गतिविधियों के लिए चार करोड़ रुपए जारी किए हैं। लक्की, करक और बन्नू में कम से कम 69 मकान क्षतिग्रस्त हो गए हैं। अधिकारियों को आशंका है कि मरने वालों की संख्या और बढ़ सकती है। खैबर पख्तूनख्वा में राहत कार्यों के सचिव ने संबंधित अधिकारियों को प्रभावित क्षेत्रों में राहत गतिविधियों में तेजी लाने का निर्देश दिया है।

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने अधिकारियों को बिपरजॉय चक्रवात के मद्देनजर कदम उठाने का निर्देश दिया

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने अधिकारियों को अरब सागर में सक्रिय बिपरजॉय चक्रवात के मद्देनजर आपातकालीन उपाय करने का आदेश दिया है। चक्रवात के कारण कराची और सिंध प्रांत के निचले इलाकों में बाढ़ तथा आंधी आने की संभावना है। प्रधानमंत्री ने देश के उत्तर पश्चिम खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के विभिन्न इलाकों में भारी बारिश के मद्देनजर यह आदेश दिया है। पाकिस्तान की मौसम विज्ञान एजेंसी ने भी अलर्ट जारी कर अधिकारियों को चक्रवात बिपरजॉय के मद्देनजर तैयार रहने को कहा है।इससे पहले, विशेषज्ञों ने अनुमान जताया था कि चक्रवात से पाकिस्तान को कोई खास नुकसान नहीं पहुंचेगा। हालांकि, इसके कारण तटीय इलाकों में बारिश होने के साथ-साथ तेज हवाएं चलेंगी। पाकिस्तान के मौसम विज्ञान विभाग (पीएमडी) ने शनिवार देर रात एक अलर्ट जारी किया, जिसमें कहा गया है कि पूर्व-मध्य अरब सागर के ऊपर सक्रिय चक्रवात तीव्रता बनाए हुए है और पिछले 12 घंटों के दौरान उत्तर-उत्तरपूर्व की ओर बढ़ा है। बिपरजॉय चक्रवात बंदरगाह शहर कराची से 840 किमी दूर है और सिंध व बलूचिस्तान प्रांतों के तटीय क्षेत्रों की ओर बढ़ रहा है। द डॉन समाचार पत्र की खबर में कहा गया है कि बिपरजॉय एक अत्यंत गंभीर चक्रवाती तूफान का रूप ले रहा है और अगले 24 घंटों में और मजबूत हो सकता है।

होंडुरास ने चीन में अपना दूतावास खोला

बीजिंग। चीन के साथ कूटनीतिक संबंध स्थापित करने के लिए कुछ महीने पहले ताइवान से रिश्ते तोड़ने के बाद मध्य अमेरिकी देश होंडुरास ने रविवार को चीन में अपना दूतावास खोला। चीन के आधिकारिक मीडिया सीसीटीवी ने कहा कि चीनी विदेश मंत्री छिन गांग ने और होंडुरास के उनके समकक्ष एनरिक रीना ने रविवार सुबह दूतावास के उद्घाटन समारोह में हिस्सा लिया। रिपोर्ट में कहा गया कि होंडुरास को अब भी दूतावास का स्थाई स्थान निर्धारित करने की आवश्यकता है और इसके कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि करनी होगी। चीन के विदेश मंत्रालय के एक बयान के अनुसार, छिन ने संकल्प जताया कि चीन होंडुरास के साथ दोस्ताना सहयोग का एक नया मॉडल स्थापित करेगा। होंडुरास की राष्ट्रपति शियोमारा कास्त्रो की चीन की छह दिवसीय यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच मजबूत होते राजनयिक संबंध का यह प्रतीक सामने आया।

फर्जी खबरों का पता लगाने व इसके प्रसार को रोकने में एल्गोरिदम हो सकता है उपयोगी

भाषा। वेंकुवर (कनाडा)

फर्जी खबर एक जटिल समस्या है तथा इसके दायरे में शब्द, तस्वीरें और वीडियो हो सकते हैं। फर्जी खबर गढ़ने के कई तरीके हो सकते हैं, जिसके जरिए लोगों के नाम, तारीख या आंकड़ों सहित चुनिंदा तथ्यों में बदलाव कर एक फर्जी खबर गढ़ी जा सकती है। एक खबर को पूरी तरह से बनावटी घटनाओं या किरदारों के साथ भी गढ़ा जा सकता है। तकनीक से भी फर्जी खबर गढ़ी जा सकती है क्योंकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता में प्रगति से गलत सूचना उत्पन्न करना विशेष रूप से आसान हो जाता है। नुकसानदेह प्रभाव: क्या 2020 के अमेरिकी चुनावों में धांधली हुई थी? या क्या जलवायु परिवर्तन एक धोखा है? , इस तरह के प्रश्नों में तथ्यों की जांच उपलब्ध आंकड़ों का विश्लेषण कर की जा सकती है। साथ ही, इन सवालों का सही या गलत जवाब

दिया जा सकता है, लेकिन इस तरह के सवालों को लेकर गलत सूचनाएं फैलने की संभावना रहती है। गलत सूचना या फर्जी खबर की अल्पावधि में बड़ी आबादी पर नुकसानदेह प्रभाव देखने को मिल सकता है। तकनीकी प्रगति से पहले भी फर्जी खबरों की धारणा मौजूद थी, लेकिन सोशल मीडिया ने इस समस्या को बढ़ा दिया है। वर्ष 2018 में किए गए ट्विटर के एक अध्ययन से पता चला है कि झूठी खबरों को बॉट की तुलना में मनुष्यों द्वारा अधिक रीट्वीट किया जाता है, जबकि सच्ची कहानियों की तुलना में फर्जी खबरों को 70 प्रतिशत अधिक रीट्वीट किए जाने की संभावना होती है। इसी अध्ययन में पाया गया कि जहां सही खबरें 1,000 से अधिक लोगों तक ही पहुच सकीं, वहीं फर्जी खबरों के 1,00,000 लोगों तक फैलने की संभावना रही। वर्ष 2020 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव, कोविड-19 के टीके और जलवायु परिवर्तन से जुड़ी फर्जी सूचनाओं के गंभीर परिणाम हो सकते हैं। कोविड-19 के बारे में गलत जानकारी फैलने के चलते प्रतिदिन पांच से 30 लाख अमरीकी डॉलर के बीच नुकसान हुआ, जबकि राजनीतिक रूप से संवेदनशील भ्रामक सूचनाओं के प्रसार की कीमत सार्वजनिक अव्यवस्था, हिंसा या लोकतांत्रिक संस्थानों से जनता का भरोसा टूटने के तौर पर चुकानी पड़ सकती है।

क्यूबा में 2019 से चीन का जासूसी अड्डा मौजूद : अमेरिका

वाशिंगटन। चीन कम से कम 2019 से क्यूबा में एक जासूसी अड्डे का संचालन कर रहा है। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन के प्रशासन के एक शीर्ष अधिकारी ने शनिवार को यह दावा किया। उन्होंने कहा कि चीन खुफिया सूचनाएं जुटाने की अपनी क्षमताएं बढ़ाने के वैश्विक प्रयासों के तहत क्यूबा में एक जासूसी अड्डे का संचालन कर रहा है। अधिकारी ने नाम न जाहिर करने की शर्त पर बताया कि अमेरिका की खुफिया एजेंसियां चीन के पिछले कुछ वर्षों से क्यूबा से जासूसी करने और वैश्विक स्तर पर बड़े पैमाने पर गोपनीय जानकारियां जुटाने के प्रयास में शामिल होने की बात से वाकिफ हैं। अधिकारी के मुताबिक, बाइडन प्रशासन ने अपने जासूसी अभियान को विस्तार देने की चीन की कोशिशों को नाकाम करने के प्रयास तेज कर दिए हैं। उन्होंने कहा कि बाइडन प्रशासन को लगता है कि वह कूटनीति और अन्य अनिर्दिष्ट कार्वाइयों के माध्यम से इस दिशा में थोड़ी प्रगति करने में कामयाब रहा है।

दीपिका पादुकोण मेरी पसंदीदा : विन डीजल

लॉस एंजिलिस-मुंबई। हॉलीवुड अभिनेता विन डीजल ने कहा है कि वह एक बार फिर भारत की यात्रा करने को लेकर उत्सुक है। डीजल 2017 में दीपिका पादुकोण अभिनीत अपनी फिल्म एक्सएक्सएक्स: रिटर्न ऑफ द ज़ेंडर केज के प्रचार के सिलसिले में भारत आए थे। यह पादुकोण की पहली हॉलीवुड फिल्म थी।

DATE OF BIRTH CORRECTION

I, Arun Kumar Verma, My Army No. 18010737X, Rank-NK, Unit 236 Bengal Engineer Reg. S/o Surendra Verma, a Permanent Resident Vill-Jengkha No.1 P.O. Jengkha, P.S. Kheroni Dist-West Karbi Anglong, Assam do here by declared that my brother Date of Birth wrongfully mentioned in my Service Record at 958 File Record as 07/02/1998 instead of 04/01/2003. I, surjit Verma do here by declared that Date of Birth wrongfully mentioned in my brother Service Record 958 File as 07/02/1998 instead of 04/01/2003. This is true.

PUBLIC NOTICE

License Nos. 49 of 2008 dated 14.03.2008 & 184 of 2008 dated 25.10.2008 have been granted to NCR Business Park Private Limited & Others for development of a Commercial Colony over an area admeasuring 10.2187 acres in Sector-66, Gurugram.
Vide this Public notice, NCR Business Park Private Limited hereby inform that vide office memo no. LC-1291/JE(DS)/2023/16795 dated 02.06.2023, The Director General, Town & Country Planning, Haryana, Chandigarh has accorded in-principle approval for allocating FAR of 350 under Transit Oriented Development (TOD) to NCR Business Park Private Limited in accordance with the policy of DTCP dated 09.02.2016.
And whereas, office of The Director General, Town & Country Planning, Haryana, Chandigarh has required seeking of objection against the proposed Transit Oriented Development (TOD). Accordingly, vide this public notice objections are hereby invited from the General Public / allottees (if any) on the above. The in-principle approval memo no. LC-1291/JE(DS)/2023/16795 dated 02.06.2023 is available for perusal/reference of the General Public/Allottees (if any) on; a) our website: www.ilcinfra.com; b) at the Project site office in Sector 66 Gurgaon & c) in the office of The Senior Town Planner, Town & Country Planning, HUDA Complex Sector-14, Gurugram.
Any objection on the said proposed Transit Oriented Development (TOD) may be filed in the office of The Senior Town Planner, Town & Country Planning, HUDA Complex, Sector-14, Gurugram & at below mentioned address within 30 days of the publication of this Public notice failing which it shall be assumed that there are no objections to the proposed Transit Oriented Development.

Date: 12.06.2023
Place: Gurugram

for NCR Business Park Private Limited
Khasra No. 950/1078, Badshapur Village
Sector-66, Golf Course Extension Road, Gurugram

पायनियर
नई दिल्ली, सोमवार, 12 जून 2023

मध्य प्रदेश में सत्ता विरोधी लहर नहीं : शिवराज

योजनाएं बदल रही लोगो की जिंदगी: सीएम

भाषा। जबलपुर

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने रविवार को कहा कि प्रदेश में न तो कोई उनका विरोधी है और न ही उनकी सरकार के खिलाफ कोई सत्ता विरोधी लहर है। उन्होंने दावा किया कि प्रदेश की जनता में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति श्रद्धा और प्रेम है तथा राज्य सरकार की ओर से लागू की गईं योजनाएं लोगों की जिंदगी बदल रही हैं। लाडली बहना योजना के तहत गरीब व मध्यम वर्ग की महिलाओं के खाते में प्रति महीने एक-एक हजार रुपए हस्तांतरित करने के बाद उन्होंने शनिवार को घोषणा की वह इस राशि को धीरे-धीरे प्रति महीने 3,000 रुपए कर देंगे।उन्होंने पीटीआई-भाषा को दिए एक साक्षात्कार में इस घोषणा को रेवड़ी संस्कृति का हिस्सा मानने से इनकार किया और कहा कि उनकी सरकार ने लाडली लक्ष्मी से लेकर कन्या विवाह और अब लाडली बहना के जरिए जिन भी योजनाओं की शुरुआत की, उसने एक सामाजिक क्रांति लाने का काम किया और महिलाओं को सशक्त करने की दिशा में कदम बढ़ाया है।शिवराज ने कहा, लाडली बहना कोई पहली योजना नहीं है। महिला सशक्तीकरण की दिशा में यह बहुत महत्वपूर्ण कड़ी है। मध्य प्रदेश में पहले पुरुषों और महिलाओं के अनुपात में काफी अंतर था। एक हजार बेटों पर 912 बेटियां जन्म लेती थीं। लोग बेटियों को बोझ मानते थे। इसलिए हमने लाडली लक्ष्मी योजना शुरू की। इसका असर ए हुआ कि मध्य प्रदेश में बेटी अब बोझ नहीं रही। अब वह वरदान साबित हो रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्होंने महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से सशक्त करने के लिए एक के बाद एक कई योजनाएं शुरू की हैं।उन्होंने कहा कि लाडली लक्ष्मी के बाद कन्यादान योजना शुरू की गई, स्थानीय निकाय के चुनावों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था की गई, फिर पुलिस भर्ती में उनके लिए 30 प्रतिशत आरक्षण दिया गया, शिक्षक भर्ती में 50 प्रतिशत आरक्षण किया गया।शिवराज ने कहा कि इन योजनाओं का असर ए हुआ कि आज बेटे और बेटियों के जन्म अनुपात का अंतर बहुत कम है।यह पूछे जाने पर कि लाडली बहना योजना के तहत उन्होंने प्रति महीने एक हजार रुपए देना तय किया था लेकिन अब वह प्रति महीने तीन हजार रुपए दिए जाने की बात कर रहे हैं तो क्या यह रेवड़ी संस्कृति नहीं है, जिसका कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) विरोध करती रही है।उन्होंने कहा, यह रेवड़ी संस्कृति नहीं है। इससे पोषण का स्तर सुधरेगा। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई ठीक हेगी। कई बुनियादी जरूरतें पूरी होंगी। इससे परिवार में बदलाव आएगा। लाडली लक्ष्मी हो या कन्या कन्या विवाह योजना। हमारी कोई भी योजना रेवड़ी संस्कृति का हिस्सा नहीं है। हमने जो भी कार्यक्रम या योजनाएं बनाई हैं वे सामाजिक परिवर्तन के लिए हैं। इन्हें रेवड़ी संस्कृति नहीं कहा जा सकता। यह पूछे जाने पर कि क्या सत्ता विरोधी लहर की काट के लिए वह इस प्रकार की घोषणाएं कर रहे हैं तो उन्होंने इसे सिरे से खारिज किया। उन्होंने कहा, मध्य प्रदेश में न कोई एंटी है और न ही ऐसी कोई लहर है। मुख्यमंत्री ने कहा, मुझे लगता है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति जो श्रद्धा और प्रेम है वह अथाह है। मध्य प्रदेश की भाजपा सरकार की जो योजनाएं हैं, वे लोगों की जिंदगी बदल रही हैं।

जबलपुर रैली के साथ कांग्रेस के चुनाव अभियान की शुरुआत करेंगी प्रियंका

भाषा। जबलपुर

प्रियंका गांधी वाद्रा साल के अंत में होने वाले मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस के प्रचार अभियान की शुरुआत सोमवार को जबलपुर से नर्मदा तट पर पूजा-अर्चना करने के बाद करेंगी। पार्टी के एक नेता ने यह जानकारी दी। जबलपुर राज्य के महाकोशल क्षेत्र का केन्द्र है और यहां आदिवासी मतदाताओं संख्या बहुत ज्यादा है। 2018 के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस ने आठ जिलों के इस संभाग में अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित 13 सीटें में से 11 पर जीत हासिल की जबकि शेष दो सीटों पर भारतीय जनता पार्टी को जीत मिली थी।बलपुर के महापौर और कांग्रेस के शहर प्रमुख जगत बहादुर सिंह ने रविवार को पीटीआईभाषा से कहा, प्रियंका जी शनिवार को सुबह करीब 11.15 बजे शहीद स्मारक में एक जनसभा को संबोधित कर पार्टी के चुनाव अभियान और संकल्प 2023 की शुरुआत करेंगी। वह सुबह करीब 10:30 बजे जबलपुर पहुंचेगीं और नर्मदा नदी की पूजा करने के लिए ग्वारीघाट जाएंगी। उन्होंने कहा कि रैली स्थल के रास्ते में प्रियंका मुगलों से लड़के हुए शहीद हुई रानी दुर्गावती की प्रतिमा पर माल्यार्पण करेंगी। उन्होंने कहा कि रैली में कम से कम दो लाख लोगों के शामिल होने की संभावना है। उन्होंने दावा किया, महाकोशल क्षेत्र या आठ जिलों वाले जबलपुर संभाग के लोग खुद को भाजपा द्वारा उपेक्षित महसूस करते हैं। हमने इस क्षेत्र में (पिछली बार) अच्छा प्रदर्शन किया था। इस बार चुनाव में हम शानदार प्रदर्शन करने वाले हैं। यह पूछे जाने पर कि उन्होंने पार्टी के प्रचार अभियान के लिए जबलपुर को क्यों चुना, मध्य प्रदेश से कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य और उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ वकील विवेक तन्खा ने कहा कि रैली महाकोशल में आयोजित की जा रही है क्योंकि राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा इस क्षेत्र से होकर नहीं गुजरी थी। उन्होंने कहा, महाकोशल क्षेत्र में रैली से पड़ोसी विंध्य और बुंदेलखंड क्षेत्रों में कांग्रेस को मदद मिलेगी। इसके अलावा, महाकोशल में मजबूत सत्ता विरोधी लहर (भाजपा सरकार के खिलाफ) है और कांग्रेस के पारंपरिक आदिवासी मतदाताओं की बड़ी आबादी इस क्षेत्र में रहती है।

349 राहत शिविरों में रह रहे 50 हजार से अधिक विस्थापित लोग

मणिपुर हिंसा:

भाषा। इंफाल

मणिपुर में जातीय हिंसा के कारण विस्थापित हुए 50,000 से अधिक लोग वर्तमान में राज्य भर के 349 राहत शिविरों में रह रहे हैं। राज्य के सूचना एवं जनसंपर्क मंत्री डॉ. आर. के. रंजन ने रविवार को कहा कि सभी जिलों में विशेष रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में तलाशी अभियान शुरू कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि अभियान के दौरान 53 हथियार और 39 बम बरामद किए गए हैं। रंजन राज्य सरकार के प्रवक्ता भी हैं। उन्होंने कहा कि जातीय संघर्ष के कारण प्रभावित हुए छात्रों की शिक्षा के लिए एक खाका तैयार किया गया है और इसे जल्द ही सार्वजनिक किया जाएगा। मंत्री के हवाले से एक आधिकारिक बयान में कहा गया, जातीय हिंसा से विस्थापित कुल 50,698 लोग वर्तमान में 349 राहत शिविरों में शरण लिए हुए हैं। जिला और क्लस्टर नोडल अधिकारियों को विशेष रूप से महिलाओं, बुजुर्गों और बच्चों के लिए खोले गए राहत केंद्रों की देखरेख करने के लिए कहा गया है। उन्होंने कहा कि आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि को रोकने के लिए एक मूल्य नियंत्रण तंत्र स्थापित किया गया है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच)-37 के माध्यम से विभिन्न वस्तुओं को राज्य में लाया जा रहा है। बयान में कहा गया कि मई की शुरुआत में हिंसा भड़कने के बाद से 35,000 मीट्रिक टन निर्माण सामग्री, ईंधन और आवश्यक वस्तुओं को 2,376 ट्रकों में मणिपुर लाया गया है। रंजन ने कहा कि मौजूदा 242 बैंक शाखाओं में से कुल 198 अब चालू हैं और शेष को जल्द से जल्द चालू कर दिया जाएगा। मई की शुरुआत में राज्य में जातीय हिंसा भड़कने पर पुलिस थानों से बड़ी संख्या में हथियार लूट लिए गए थे। मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह दोनों ने लोगों से हथियार डालने की अपील की है। बयान में कहा गया कि कुल 990 हथियार और गोला-बारूद से जुड़ी 13,526 अन्य वस्तुएं सरकार को सौंपी गई हैं।

चक्रवात बिपरजॉय के 15 जून को कच्छ तट पर पहुंचने की संभावना

एनडीआरएफ,एसडीआरएफ के दल किए जा रहे तैनात

भाषा। अहमदाबाद

प्रचंड चक्रवाती तूफान बिपरजॉय के कच्छ जिले और पाकिस्तान के कराची तट के बीच 15 जून को पहुंचने की संभावना के मद्देनजर गुजरात सरकार राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) एवं राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) के दलों को तटीय इलाकों में तैनात कर रही है तथा छह जिलों में आश्रय केंद्र स्थापित करेगी। तूफान तटीय क्षेत्र में किस स्थान पर जमीन से टकराएगा, उसके बारे में आने वाले दिनों में स्थिति स्पष्ट होगी। एक अधिकारी ने रविवार को बताया कि 13 से 15 जून के बीच भारी बारिश होने और 150 किलोमीटर (किमी) प्रति घंटा की रफ्तार तक हवा बहने से कच्छ, जामनगर, मोरबी, गिर सोमनाथ, पोरबंदर, और देवभूमि द्वारका जिलों के चक्रवात से प्रभावित होने की संभावना है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने रविवार को कहा कि सौराष्ट्र-कच्छ और कराची तट से 15 जून को दोपहर 125-130 किमी प्रति घंटा से लेकर 150 किमी प्रति घंटा तक की गति वाली हवा के साथ चक्रवात के गुजरने की अत्यधिक संभावना है। राहत आयुक्त आलोक पांडे ने संवाददाताओं से कहा कि गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने तटीय जिलों के जिलाधिकारी, सेना, नौसेना और भारतीय तटरक्षक के प्रतिनिधियों और विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ बैठक की है। पांडे ने कहा कि विभिन्न विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि वे तटीय जिलों में चक्रवात के प्रभाव को कम करने के लिए पहले से तैयारी करें और समन्वय स्थापित करें।
उन्होंने कहा कि इसके प्रभाव से निपटने के लिए गुजरात सरकार तटीय क्षेत्रों में एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की कई टीम को तैनात कर रही है। साथ ही, सरकार तट रेखा से 5-10 किमी के दायरे में रहने वाले लोगों के लिए छह जिलों में आश्रय स्थल स्थापित करेगी। पांडे ने कहा, बैठक में मुख्यमंत्री ने सभी विभागों को चक्रवात से प्रभावित होने की संभावना वाले जिलों के जिलाधिकारियों के साथ समन्वय में अधिकतम संभव राहत व बचाव कार्य करने का निर्देश दिया है। मुख्यमंत्री ने यह जिम्मेदारी तटीय जिलों के वरिष्ठ मंत्रियों को दी है, जो चक्रवात के संभावित प्रभाव को ध्यान में रखते हुए आपदा प्रबंधन कार्य की योजना बनाने और उन्हें क्रियान्वित करने में स्थानीय प्रशासन की मदद करेंगे। मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) ने एक बयान में ऋषिकेश पटेल, कानूभाई देसाई,राघवजी संघवी, जगदीश विश्वकर्ता और पुरषोत्तम सोलंकी को उन जिलों में पहुंचने का निर्देश दिया है, जहां की उन्हें जिम्मेदारी सौंपी गई है। आईएमडी ने कच्छ, देवभूमि, द्वारका, पोरबंदर, जामनगर, राजकोट, जूनागढ़ और मोरी जिलों में 14 और 15 जून को भारी बारिश होने की चेतावनी जारी की है।

क्विक न्यूज़

गर्भवती महिलाएं सुंदरकांड का पाठ करें, रामायण पढ़ें: राज्यपाल सौंदरराजन

नई दिल्ली। तेलंगाना की राज्यपाल तमिलिसाई सौंदरराजन ने रविवार को कहा कि गर्भवती महिलाएं मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ बच्चे पैदा करने के लिए सुंदरकांड का पाठ करें और उन्हे रामायण जैसे महाकाव्यो को भी पढ़ना चाहिए। सौंदरराजन ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़े एक संगठन के गर्भ संस्कार कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए यह टिप्पणी की। वह स्त्री रोग विशेषज्ञ और भ्रूण चिकित्सक भी है।संवर्धिनी न्यास द्वारा तैयार किए गए गर्भ संस्कार कार्यक्रम के तहत, संगठन से जुड़े डॉक्टर गर्भवती माताओ को वैज्ञानिक और पारंपरिक उपायो के बारे मे बताएंगे ताकि वे संस्कारी और देशभक्त बच्चो को जन्म दे सकें। ऑनलाइन माध्यम से जारी किए गर्भ संस्कार मॉड्यूल के अनुसार इन उपायो मे भगवद गीता जैसे धार्मिक ग्रंथो का पाठ करना, संस्कृत मंत्रो का जाप करना और योगाभ्यास शामिल होगा। यह प्रक्रिया गर्भाधान से पहले से प्रसव के चरण तक शुरू होगी और तब तक जारी रहेगी जब तक कि बच्चा दो साल का नही हो जाता। इसके अनुसार कार्यक्रम के दौरान गर्भवती महिलाओ के परिवार के सदस्यो का भी मार्गदर्शन किया जाएगा।
संवर्धिनी न्यास, राष्ट्र सेविका समिति की एक शाखा है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सौंदरराजन ने गर्भ संस्कार कार्यक्रम मॉड्यूल विकसित करने मे संवर्धिनी न्यास के प्रयासो की सराहना की और कहा कि गर्भावस्था के प्रति इस वैज्ञानिक और समग्र दृष्टिकोण के कार्यान्वयन से निश्चित रूप से सकारात्मक परिणाम मिलेंगे।उन्होने कहा, गांवो मे, हमने गर्भवती महिलाओ को रामायण, महाभारत और अन्य महाकाव्यो के साथ-साथ अच्छी कहानियां पढ़ते देखा है।

अनमोल देगा आम लोगों को लाभ

लुधियाना। सप्लाई चेन मैनेजमेंट कमोडिटी ट्रेडिंग और कोयला आयात के अग्रणी खिलाड़ियों में से एक अनमोल इंडिया लिमिटेड के बोर्ड ने शेयर धारकों को 4:1 के रेशो में बोनस शेयर देने को मंजूरी दी है, शेयर धारकों की मंजूरी के बाद होगी प्रक्रिया पूरी अर्थात नियत तारीख पर कंपनी के शेयरधारकों द्वारा धारित हर 1 इक्विटी शेयर के लिए उन्हें 4 इक्विटी शेयर बोनस में दिए जाएंगेए शेयर धारकों की मंजूरी के बाद। हाल ही में अनमोल इंडिया लिमिटेड ने 31 मार्च 2023 को समाप्त तिमाही में और वित्तीय वर्ष 2022-23 में शानदार कमाई होने की घोषणा की थी। अनमोल इंडिया का नेतृत्व कर रहे विजय गोयल के पास कोयला उद्योग में 37 वर्षों का अनुभव है। हाल ही में आईएसबी के पूर्व छात्र। चशु गोयल भी बोर्ड ऑफडायरेक्टर्स के रूप में शामिल हुए हैं और तब से उन्होंने कंपनी के विकास को गति देने के लिए विभिन्न डिजिटल इनिशिएटिव की शुरुआत की है। अनमोल ने अपनी स्थापना के बाद से उल्लेखनीय विकास पथ के साथ सप्लाई चेन मैनेजमेंट इंडस्ट्रीए कमोडिटी ट्रेडिंग और कोयला इम्पोर्ट में एक प्रतिष्ठित स्थान अर्जित किया है। कंपनी ने भारत में 100 विभिन्न लोकेशन्स में ग्राहकों से भरोसा हासिल किया है। कमोडिटी व्यापार के लिए एंड.टू.एंड सप्लाई चेन मैनेजमेंट दृष्टिकोण को अपनाते हुए कंपनी में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है।

धुले में टीपू सुल्तान के अवैध स्मारक को ध्वस्त किया गया

मुंबई। महाराष्ट्र के धुले मे नगर निकाय ने एक यातायात चौराहे पर निर्मित 18वी सदी के मैसूर के शासक टीपू सुल्तान के स्मारक को अवैध बताते हुए ध्वस्त कर दिया।पुलिस के एक अधिकारी ने रविवार को बताया कि ऑल इंडिया इत्तेहादुल मजलीस-ए-मुस्लिमीन के विधायक फारूक शाह अनवर ने मुंबई से करीब 322 किलोमीटर दूर धुले मे वदजई रोड के चौराहे पर इस स्मारक का कथित तौर पर निर्माण कराया था। अधिकारी ने कहा, नगर निकाय ने पुलिस बंदोबस्त मे शुक्रवार को इस स्मारक को ढहा दिया। विधायक से इसे खुद ध्वस्त करने के लिए कहा गया था। हालांकि, जिला अधिकारी और लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) के अधिकारियो के बीच हुई बैठक के बाद स्मारक को ध्वस्त कर दिया गया। अधिकारी ने दावा किया कि इलाके मे स्थिति शांतिपूर्ण है और किसी भी अप्रिय घटना की कोई सूचना नही है। सोशल मीडिया पर प्रसारित आपत्तिजनक संदेशो और स्टेटस मे टीपू सुल्तान तथा औरंगजेब के चित्रो के इस्तेमाल को लेकर महाराष्ट्र के कई हिस्सो मे पिछले कुछ दिनो से तनाव व्याप्त है।

परिवारवाद की राजनीति को बढ़ावा दे रही राकांपा : एकनाथ

श्रीनगर। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने रविवार को राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) पर परिवारवाद की राजनीति को बढ़ावा देने का आरोप लगाया। राकांपा अध्यक्ष शरद पवार ने एक दिन पहले ही अपनी बेटी सुप्रिया सुले को पार्टी का कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया था। शिंदे ने यहां जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा से मुलाकात भी की। शिंदे ने राजभवन मे पत्रकारो से कहा, मै सिर्फ इतना कहूंगा कि जिस तरह उद्धव जी शिवसेना मे खुद मुख्यमंत्री बने और अपने बेटे को मंत्री बनाया, वही राकांपा मे भी हो रहा है। शिंदे ने कहा, शरद पवार अध्यक्ष है और परिवार के एक सदस्य को कार्यकारी अध्यक्ष बनाया। यह उनकी पार्टी का आंतरिक मामला है और मुझे इसमे दखल देने की जरूरत नही है, लेकिन ऐसा ही होता है।

चुनावी गारंटी अन्य राज्यों में कांग्रेस के लिए अनुकरणीय : शिवकुमार

भाषा। बेंगलुरु,

कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने कहा है कि राज्य में कांग्रेस की पांच गारंटी का चुनावी वादा एक कठिन निर्णय था और उन्हें लगता है कि यह अन्य राज्यों में पार्टी के लिए अनुकरणीय हो सकता है, जो वहां की वित्तीय स्थिति पर निर्भर करेगा। शिवकुमार ने यहां पीटीआई-भाषा से एक साक्षात्कार में कहा, सरकारें करोड़ों रुपए का कर्ज माफ कर बड़े कारोबारियों की मदद करती हैं, लेकिन आम आदमी की मदद कैसे की जाए? इसलिए हमने गारंटी देने का फैसला किया। उन्होंने कहा कि आर्थिक मुद्दे, बेरोजगारी और गरीबी वैचारिक नहीं, बल्कि मुख्य मुद्दे हैं। शिवकुमार (61) ने यह भी दावा किया कि 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए कर्नाटक में भाजपा और जनता दल (सेक्युलर) एकजुट हो रहे हैं। हालांकि, उन्होंने हाल ही में हुए कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के शानदार प्रदर्शन के बाद पार्टी को लोकसभा में भी अच्छी-खासी संख्या में सीट पर जीत हासिल होने का विश्वास जताया। चुनावी गारंटी को लेकर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ने कहा कि पार्टी की संबंधित राज्य इकाइयों को इस बारे में फैसला करना होगा। यह पूछे जाने पर कि क्या चुनावी गारंटी उन अन्य राज्यों में लागू करने की रणनीति पर कांग्रेस विचार कर सकती है, जहां अगले एक साल में विधानसभा चुनाव होने हैं क्योंकि ऐसा लगता है कि यह कर्नाटक में शानदार जीत मिलने के लिए एक महत्वपूर्ण कारक रहा है, इस पर शिवकुमार ने कहा कि यह संबंधित राज्य की वित्तीय स्थिति पर निर्भर करता है। कांग्रेस की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष शिवकुमार ने कहा, यह सब उनकी वित्तीय ताकत पर निर्भर करता है। कर्नाटक वित्तीय रूप से मजबूत है। हमने महंगाई के कारण यह गारंटी दी। महंगाई बढ़ गई है जबकि आय कम हो गई है, इसलिए महंगाई की भरपाई करने के लिए हमने सोचा कि सरकार को लोगों की मदद करनी चाहिए। हम जानते हैं कि यह एक बहुत ही कठिन फैसला है। विधानसभा चुनाव के बाद, कर्नाटक में कांग्रेस की नवगठित सरकार ने दो जून को कांग्रेस की पांच चुनावी गारंटी को लागू करने का फैसला किया और इस वित्तीय वर्ष के भीतर ए योजनाएं लागू करने के लिए एक समय सीमा भी निर्धारित की। लोगों को सब्सिडी लाभ मुहैया करने की चुनावी गारंटी को भारतीय राजनीति के इतिहास में पहला बड़ा राजनीतिक निर्णय बताने संबंधी अपने बयान को याद करते हुए शिवकुमार ने कहा, यह 50,000 करोड़ रुपए से अधिक का होगा। एक दिन में, मंत्रिमंडल की बैठक में हमने आम आदमी की मदद के लिए इसे (चुनावी गारंटी) को मंजूरी दी... हमने जो वादा किया, उसे निभा रहे हैं। अगले साल होने वाले लोकसभा चुनावों के बारे में एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी कर्नाटक में भाजपा और जद (एस) की चुनावी रणनीति का मुकाबला करने के लिए वैकल्पिक योजना बनाएगी। कांग्रेस ने राज्य की कुल 28 संसदीय सीट में से कम से कम 20 सीट जीतने का लक्ष्य रखा है। उपमुख्यमंत्री ने कहा, राष्ट्रीय स्तर के बो में मैं नहीं कह सकता, लेकिन जहां तक कर्नाटक की बात है, भाजपा और जद (एस) दोनों एकजुट हो रहे हैं, यही मुझे पता चला है। उन्होंने कहा, इसलिए हम वैकल्पिक योजनाएं बनाएंगे। हमें कोई आपत्ति नहीं है, उन्हें हाथ मिलाने दीजिए, लेकिन कांग्रेस पार्टी अच्छी-खासी संख्या में सीट जीतेगी। उल्लेखनीय है कि कर्नाटक में लोकसभा की 28 सीट है। भाजपा ने 2019 के लोकसभा चुनाव में 25 सीट पर जीत हासिल की थी, जबकि उसके समर्थन से निर्दलीय को एक सीट मिली थी। वहीं, कांग्रेस और जद (एस) ने एक-एक सीट जीती थी।विधानसभा चुनाव से पहले दी गई कांग्रेस की पांच गारंटी में सभी घरों को 200 यूनिट तक मुफ्त बिजली(गृह ज्योति), हर परिवार की महिला मुखिया को 2,000 रुपए मासिक सहायता (गृह लक्ष्मी), गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) के परिवार के प्रत्एक सदस्य को 10 किलोग्राम मुफ्त चावल (अन्न भाग्य) शामिल

असम में अगले पांच दिनों तक भारी बारिश की संभावना

गुवाहाटी। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने रविवार को पूर्वोत्तर राज्य असम मे अगले पांच दिनो तक भारी बारिश का पूर्वानुमान व्यक्त किया है। गुवाहाटी स्थित आईएमडी के क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केंद्र (आरएमसी) ने एक विशेष मौसम बुलेटिन मे रविवार और सोमवार के लिए एलो अलर्ट तथा मंगलवार से बृहस्पतिवार तक ऑरेज अलर्ट जारी किया है। विभाग के मुताबिक, अगले पांच दिनो के दौरान बंगाल की खाड़ी से पूर्वोत्तर भारत मे निम्न-दबाव की दक्षिणी या दक्षिण-पश्चिमी हवाओ के कारण भारी बारिश की संभावना है। आरएमसी ने बुलेटिन मे कहा, इसके प्रभाव मे, अगले पांच दिनो के दौरान असम मे गरज के साथ भारी से बेहद भारी बारिश होने की संभावना है।बुलेटिन के मुताबिक, मौसम की यह स्थिति अन्य पूर्वोत्तर राज्यो जैसे अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, नगालैंड, मणिपुर और मिजोरम मे भी व्याप्त होने की संभावना है।

सभी बाधाओं को पार कर पाई सफलता

मुंबई। माइक्रोफाइनेंस वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहित करता है और महिलाओं और कम आय वाले लोगों सहित वंचित समूहों को सशक्त बनाता है। माइक्रोफ इनेंस इंस्टीट्यूशंस नेटवर्क की एक रिपोर्ट के अनुसार 6 करोड़ से अधिक महिलाओं ने आसानी से सुलभ लोन का लाभ उठाया है ऐसा ही एक मामला प्रमिला देवी का है जिन्होंने चुनौतियों का सामना किया और एक बेहतर उद्यमी के रूप में उभरीं। वह वाराणसी जिले की रहने वाली हैं। एक छोटी सी किराने की दुकान खोलकर बतौर उद्यमी अपनी यात्रा शुरू की।एक मित्र द्वारा मुथूट माइक्रोफिन के बारे में जानकारी मिली, वह तेजी से पड़ोस के जॉइंट लायबिलिटी ग्रुप जेएलजी का हिस्सा बन गई और अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए 25,000 का फर्स्ट साइकिल लोन प्राप्त किया। प्रमिला ने सफलतापूर्वक दुकान की स्थापना की और आवश्यक वस्तुओं का स्टॉक किया। कुछ ही महीनों में उसकी मेहनत रंग लाई और उसने एक स्थिर और सम्मानजनक आय अर्जित करना शुरू कर दिया। मेहनती प्रमिला यहीं नहीं रुकीं, उन्होंने एक सिलाई इकाई खोलने का फैसला किया और एक नई सिलाई मशीन खरीदने के लिए 45,000 का सेकंड साइकिल लोन लिया। प्रमिला के समर्पण ने उनके नए उद्यम की सफलता सुनिश्चित की इससे उनके पति द्वारा ऑर्डर लाने में उनकी सहायता की।

केरल में छोटी नौका वाले मछुआरे आजीविका बचाने के लिए कर रहे हैं संघर्ष

भाषा। कोच्चि

जलवायु परिवर्तन के खतरे के कारण केरल में छोटी नौका वाले मछुआरों को अपनी आजीविका बचाने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। यहां दक्षिणी चेल्लनम में समुद्री तूफान से कारण बर्बाद होने वाली नौकाओं की संख्या जहां बढ़ती जा रही है, वहीं तट पर लौटे मछुआरों की टोकरी में मछलियों की संख्या घटती जा रही है। यह हमें याद दिलाता है कि जलवायु परिवर्तन किस तरह तटवर्ती केरल के लोगों की आजीविका को छीन रहा है। जर्नल क्लाइमेट डायनमिक्स में प्रकाशित वर्ष 2021 के एक अध्ययन के मुताबिक अरब सागर में चक्रवाती तूफान आने की आवृत्ति में वर्ष 2001 से 2019 के बीच 52 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।चक्रवाती तूफान की अवधि में 80 प्रतिशत इजाफा हुआ है, लेकिन अति गंभीर चक्रवाती तूफान आने के मामलों में 1982 और 2000 के बीच की अवधि की तुलना में लगभग तीन गुना वृद्धि हुई है। केरल में तटीय समुदाय आजीविका के लिए मछली पकड़ने पर निर्भर हैं, लेकिन इन्हें अपना अस्तित्व बचाने के लिए एक गंभीर खतरे का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि अगर समुद्री लहरों या तूफान के कारण उनकी नावें बर्बाद हो जाती हैं तो उनके पास कोई सहारा नहीं रह जाता।वर्ष 2019 में दक्षिण चेल्लनम के 56 वर्षीय वी एस पोडियाल मछली पकड़ने के लिए निकले थे, लेकिन समुद्र में उनकी नाव पलट गई। उन्होंने कहा, जब ऊंची-ऊंची लहरें टकराने लगीं तो मेरी नाव पलट गई। हम 18 लोग थे और चार घंटे के बाद हमें बचा लिया गया था, लेकिन मेरी नाव क्षतिग्रस्त हो गई थी जिसकी मरम्मत नहीं की जा सकती थी। उन्होंने कहा, नौका की मरम्मत का कोई उपाय नहीं बचा है और सरकार की तरफ से हमारी मदद के लिए कोई योजना नहीं है। यदि उपकरण खो गए, तो सरकार से मुआवजा मिलने की कोई योजना नहीं है। कई मछुआरे इस समस्या से जूझ रहे हैं। पोडियाल के बगल में खड़े पीवी विल्सन ने भी वर्ष 2021 में अपनी नौका समुद्र में गंवा दी थी जिसके बाद उन्हें मछली पकड़ने का काम छोड़ना पड़ा क्योंकि वे नई नौका खरीदने की स्थिति में नहीं थे।विल्सन ने कहा, मेरी योजना अपने बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए भेजने की थी, लेकिन मेरी नाव पलटने के बाद हमारे पास कोई पैसा नहीं बचा था। मेरी दो बेटियां शिक्षक बनना चाहती थीं, लेकिन पैसे के अभाव में उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ी। दक्षिण चेल्लनम में सेंट जॉर्ज चर्च के पादरी फादर जॉन कलाथी ने कहा कि उनके क्षेत्र में 600 परिवार हैं जिनमें से 99 प्रतिशत परिवार की कमाई का साधन मछली पकड़ना है।कलाथी ने कहा, जलवायु परिवर्तन, मौसम, समुद्र और पानी में बदलाव के कारण स्थिति उनके लिए भयानक है। मछलियां पहले से कम मिल रही हैं, लेकिन मछली पकड़ने पर खर्च बहुत अधिक है। उन्होंने कहा कि साहूकारों के कर्ज के जाल में फंसने से मछुआरों की मुश्किलें बढ़ रही हैं। कलाथी ने कहा कि अपनी नौका खोने वाले ज्यादातर मछुआरों को अपनी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए साहूकारों से उच्च ब्याज दरों पर कर्ज लेना पड़ता है और वे इसमें फंस जाते हैं।

76 साल के हुए लालू, समर्थकों ने मनाया जश्न

भाषा। पटना

बिहार में भीषण गर्मी से बेपरवाह राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने रविवार को पार्टी संस्थापक अध्यक्ष लालू प्रसाद का 76वां जन्मदिन मनाया।पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष के जन्मदिन के अवसर पर यहां अनुयायियों और परिवार के सदस्यों की उपस्थिति में 76 पाउंड वजन का एक विशाल केक काटा गया। पटना के कई हिस्सों में राजद कार्यकर्ताओं द्वारा गरीबों को भोजन करवाया गया।इस अवसर की विशिष्टता राजद के अब प्रदेश में सत्ता में होने एवं पार्टी सुप्रीमो के शहर में रहने के कारण और भी बढ़ गई क्योंकि पिछले कई वर्षों से जेल की सजा और खराब स्वास्थ्य ने उन्हें अपने जन्मदिन पर अपने लोगों से दूर रखा था।बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यहां दस सर्कुलर रोड स्थित अपनी पत्नी राबड़ी देवी को आवंटित सरकारी बंगले में रह रहे हैं। वहां आधी रात को ही उस समय जश्न शुरू हो गया था जब उनके छोटे बेटे तेजस्वी यादव सहित परिवार के सदस्यों से घिरे हुए उन्होंने छोटा सा केक काटा। तेजस्वी यादव राज्य के उपमुख्यमंत्री हैं।राजद सुप्रीमो की पुत्री रोहिणी आचार्य इस अवसर पर मौजूद थीं।उन्होंने पिछले साल अपने पिता को अपनी एक किडनी दान किया।इस अवसर पर लालू के बड़े बेटे और बिहार सरकार में मंत्री तेज प्रताप यादव ने अपने पसंदीदा देवता भगवान कृष्ण से जुड़े उत्तर प्रदेश के एक शहर बरसाना में दिन बिताने का फैसला किया।तेज प्रताप ने ट्विटर पर लालू के साथ एक वीडियो कॉल पर बातचीत का एक क्लिप साझा किया है जिसमें उन्होंने उन्हें जन्मदिन की बधाई दी। राजद प्रमुख के जन्मदिन के अवसर पर उन्हें कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शुभकामनाएं दी हैं।बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राजद सुप्रीमो को उनके जन्मदिन की बधाई एवं शुभकामना देते हुए उनके स्वस्थ एवं सुदीर्घ जीवन की कामना की।

विश्व कप के लिए अलग तरीके से सोचना : रोहित

● रणनीति बनानी होगी

भाषा । लंदन

आईसीसी फाइनल में एक और नाकामी के बाद भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने कहा कि उनकी टीम को अक्टूबर नवंबर में भारत में होने वाले वनडे विश्व कप के लिए अलग तरीके से सोचकर रणनीति बनानी होगी। पिछले दस साल में आईसीसी टूर्नामेंटों में नॉकआउट चरण में पहुंचने के बावजूद खिताब नहीं जीत पाने का दुख भारतीय टीम को भी है। भारत ने आखिरी विश्व कप 12 साल पहले जीता था और इस बार भी भारत में हो रहे टूर्नामेंट में अपेक्षाओं का भारी दबाव रहेगा। रोहित ने कहा , अक्टूबर में जब विश्व कप होगा तो हम अलग तरह से खेलने की कोशिश करेंगे। हम लोगों को आजादी देंगे और यह नहीं सोचेंगे कि अमुक मैच जीतना है। उन्होंने कहा , हम यह सोचते रहे हैं कि यह मैच महत्वपूर्ण है, यह टूर्नामेंट महत्वपूर्ण है और चीजें अनुकूल हो नहीं पा रही हैं। अब हमें अलग तरह से सोचना और रणनीति बनानी होगी। हमारा संदेश और फोकस कुछ अलग करने पर होना चाहिए। रोहित ने कहा कि टीम को भारत में विश्व कप के दौरान बनने वाली हाइप से निपटना होगा। उन्होंने कहा , हमने लड़कों से खुलकर खेलने के लिए कहा है। यह सीधा संदेश है। टेस्ट क्रिकेट हो, टी20 या वनडे , हम दबाव में खेलना नहीं चाहते। उन्होंने कहा , अगर आप देखें तो गिल और मैने जिस तरह दूसरी पारी में शुरूआत की थी, हमारा लक्ष्य उन पर दबाव बनाने का था। यही वजह है कि हमने दस ओवर में 60 रन बनाए थे। इस तरह की मानसिकता से खेलने पर हालांकि आउट होने के जोखिम भी रहते हैं। भारतीय कप्तान ने कहा , इसके बाद लोग कहते हैं कि एकाग्रता भंग हो गई। ऐसा नहीं है। बात बस इतनी है कि हम अलग तरह से खेलना चाहते हैं। हमने इतने आईसीसी टूर्नामेंट खेले लेकिन जीत नहीं सके। हमारा प्रयास अलग तरह से खेलने का रहेगा। डब्ल्यूटीसी चक्र पूरा होने के बाद टीम में बदलाव की बातें होने लगेंगी। कई खिलाड़ी 30 पार हो चुके हैं और अगले चक्र में कुछ कठिन फैसले लेने होंगे। अगले चक्र के लिए टीम तैयार करने के बारे में पूछने पर रोहित ने कहा , किसी भी टूर्नामेंट में आप यही सोचते हैं कि अच्छा कैसे कर सकेंगे। अभी यह मैच खत्म हुआ है और हमने अभी भविष्य के बारे में नहीं सोचा है। बातें होंगी लेकिन हमे देखना है कि क्या जरूरत है और टीम के लिए क्या सही है। रोहित, विराट कोहली, चेतेश्वर पुजारा और शुभमन गिल दोनों पारियों में नहीं चल सके। इस बारे में कप्तान ने कहा , हम दो फाइनल खेल चुके हैं। उन्हें यह नहीं सिखाया जा सकता कि बल्लेबाजी कैसे करनी है। यह खुद को तैयार करने और रणनीति पर अमल करने की बात है। हमारे सीनियर बल्लेबाजों के अच्छे प्रदर्शन के दम पर हम पिछली बार यहां अच्छा कर सके थे।

मौसम और पिच पर घास को देखकर पहले गेंदबाजी का फैसला लिया : द्रविड़

लंदन। मुख्य कोच राहुल द्रविड़ ने आस्ट्रेलिया के खिलाफ विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल में पहले गेंदबाजी के भारत के फैसले का बचाव करते हुए कहा कि मौसम और पिच को देखकर यह फैसला लिया गया था। जीत के लिए 444 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए भारतीय टीम पांचवे दिन पहले ही सत्र मे 234 रन पर आउट हो गई। इस मैच की कमेंट्री कर रहे पूर्व कप्तान सौरव गांगुली ने द्रविड़ से कुछ कठिन सवाल पूछे। उन्होंने पहले गेंदबाजी के फैसले पर भी सवाल किया। हमने मौसम और पिच पर जमी घास को देखकर यह फैसला किया था। हमें लगा था कि बाद मे बल्लेबाजी करना आसान हो जाएगा। इंग्लैंड में पिछले कुछ समय में अधिकांश टीमें ऐसे ही फैसले लेती आई है। हमें लगा था कि यह अच्छा फैसला है क्योंकि आस्ट्रेलिया के तीन विकेट 70 रन पर गिर गए थे लेकिन अगले दो सत्र मे हमने काफी रन दिए। हम उन्हे 300 रन पर भी आउट कर पाते तो मैच मे बने रहते। हमने सोचा कि लक्ष्य चाहे जो भी हो, हम जुझारूपन नही छोड़ेंगे हालांकि इसके लिए असाधारण प्रदर्शन की जरूरत थी। हमारे गेंदबाजों ने निराश किया क्योंकि इस पिच पर 469 रन नही बनने चाहिए थे। इसके बाद बल्लेबाजो ने खराब शॉट खेले। पिछले दस साल मे आईसीसी खिताब नही जीत पाने के बारे में पूछने पर उन्होंने कहा , हम करीब पहुंच रहे है। हम सेमीफाइनल, फाइनल में पहुंच रहे है लेकिन हमने पिछले पांच दिन में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नही किया। हम आत्ममंथन करेंगे। हमारे पास शीर्ष पांच मे अनुभवी खिलाड़ी है जिन्होंने ऊंचे मानक कायम किए है। ए खिलाड़ी भविष्य में लीजैंड कहलाएंगे।

रक्षात्मक रणनीति, दूसरी जमात तैयार नहीं करने से कोच द्रविड़ को मिल रही नाकामी

नई दिल्ली। तकनीकी फैसले लेने मे हिचकिचाहट, सीनियर खिलाड़ियों को आईना नही दिखा पाना और दूसरी जमात के खिलाड़ियों को तैयार नही करने से भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच के रूप में महान बल्लेबाज राहुल द्रविड़ को उतनी सफलता नही मिल पा रही। इस साल के आखिर मे विश्व कप मे भी यही हश्र रहा तो उनका अनुबंध बढ़ने की उम्मीद नही है। शायद वह खुद ही अनुबंध का विस्तार कराना नही चाहेंगे क्योंकि अपेक्षाओं पर खरे नही उतर पाने की कसक उनके चेहरे पर झलकने लगी है। अपने जमाने मे तेज गेंदबाजो को बेखौफ खेलने वाले द्रविड़ बतौर कोच सवालों की बौछार पर बगलें झांकते नजर आते है। वहीं इससे पहले कोच रहे रवि शास्त्री सवालों का सीधा जवाब देते थे , फिर वह आपको पसंद आए चाहे नही। भारत की आस्ट्रेलिया के हाथों विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप हार के तुरंत बाद पूर्व कप्तान सौरव गांगुली ने स्टार स्पोर्ट्स पर इंटरव्यू के दौरान उनसे सवाल किया , राहुल, तुम लीजैंड रहे हो लेकिन उपमहाद्वीप के बाहर हमारे शीर्षक्रम के बल्लेबाज जूझते क्यो नजर आ रहे है। इस पर द्रविड़ ने कहा , हमारे पास शीर्ष पांच में अनुभवी खिलाड़ी है जिन्होने ऊंचे मानक कायम किए है। ए खिलाड़ी भविष्य मे लीजैंड कहलाएंगे। उन्होने आस्ट्रेलिया मे दो श्रृंखलाएं जीती, इंग्लैंड में टेस्ट जीते। हम जो कर सकते है, कर रहे है। इस बात से ना तो गांगुली संतुष्ट दिखे और न ही लाखों क्रिकेटप्रेमी जो टीवी के आगे नजरें गड़ाए बैठे थे। सीनियर टीम के साथ दो साल के कार्यकाल में अक्सर द्रविड़ इसी तरह नजर आए है।

अश्विन को टीम से बाहर रखना मेरी समझ से परेः सचिन

नई दिल्ली। महान खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर ने अनुभवी रविचंद्रन अश्विन को विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) फाइनल के लिए भारतीय एकादश में जगह नही मिलने को चौंकाने वाला फैसला करार देते हुए कहा कि उनकी क्षमता के स्पिनर को प्रभावी होने के लिए अनुकूल परिस्थितियों की जरूरत नही होती है। तेंदुलकर ने रविवार को ट्वीट किया, भारत को मैच में बने रहने के लिए पहली पारी में बड़ा स्कोर खड़ा करना था, लेकिन वे ऐसा नही कर सके। भारतीय टीम के लिए कुछ अच्छे क्षण थे, लेकिन मैं अश्विन को अंतिम एकादश में शामिल नही करने के फैसले को पचा नही पा रहा हूं। वह इस समय दुनिया का नंबर एक टेस्ट गेंदबाज है।

स्कोरबोर्ड

आस्ट्रेलिया पहली पारी : 469 रन, भारत पहली पारी : 296 रन, आस्ट्रेलिया दूसरी पारी : आठ विकेट पर 270 रन (घोषित), भारत दूसरी पारी : रोहित पगबाधा बो लियोन 43, गिल का ग्रीन बो बोलैंड 18, पुजारा का कारी बो कमिंस 27,कोहली का स्मिथ बो बोलैंड 49, रहाणे का कारी बो स्टार्क 46, जडेजा का कारी बो बोलैंड 0,भरत का और बो लियोन 23, ठाकुर पगबाधा बो लियोन 0,उमेश का कारी बो स्टार्क,शमी नाबाद 13,सिराज का बोलैंड बो लियोन 1, **अतिरिक्त** : 13 रन, कुल योग : 63.3 ओवर में 234 रन, **विकेट पतन** :1- 41, 2 -92, 3-93, 4-179, 5-179, 6-212, 7-213, 8-220, 9-224, **गेंदबाजी** : कमिंस 13-1-55-1, बोलैंड 16-2-46-3, स्टार्क 14-1--77-2, ग्रीन 5-0-13-0, लियोन 15.3-2-41-4

खबरें स्टेडियम से

कोहली से होने चाहिए सवाल : गावस्कर

लंदन। आस्ट्रेलिया के खिलाफ विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल मे आसानी से घुटने टेकने वाली भारतीय टीम पर बरसते हुए सुनील गावस्कर ने कहा कि बल्लेबाजी शर्मनाक थी। आस्ट्रेलिया ने भारत को 209 रन से हराकर खिताब जीता। गावस्कर ने कहा , बल्लेबाजी बहुत ही खराब रही। आखिरी दिन तो बिल्कुल शर्मनाक प्रदर्शन था। खासकर शॉट्स का चयन। चेतेश्वर पुजारा ने कल बेहद खराब शॉट खेले जबकि उससे इसकी उम्मीद नही की जा सकती। शायद कोई उसके दिमाग मे घुसकर स्ट्राइक रेट, स्ट्राइक रेट चिल्ला रहा होगा। एक सत्र भी आप नही खेल सके। एक सत्र में आठ विकेट। कोहली के विकेट के बारे मे उन्होने कहा , यह बहुत ही औसत शॉट था। आफ स्टम्प से बाहर जाती गेंद वह तब तक छोड़ रहा था। शायद उसे लगा कि अर्धशतक पूरा करने के लिए एक रन चाहिए। जब आप किसी उपलब्धि के करीब होते है तो ऐसा होता है। जडेजा के साथ भी हुआ। उसने ऐसी गेंद खेली जो उसे नही खेलनी चाहिए थी। रहाणे के साथ भी ऐसा हुआ।

ग्रीन के कैच पर पोंटिंग ने कहा, सही फैसला किया गया

लंदन। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग का मानना है कि विश्व टेस्ट चैपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) फाइनल के चौथे दिन भारत के सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल का कैच लेते समय हरफनमौला कैमरून ग्रीन के हाथ से गेंद एक समय जमीन को छू गई थी लेकिन उन्होने इस दौरान तीसरे अंपायर को सही फैसला लेने का श्रेय दिया। गिल जब 18 रन पर बल्लेबाजी कर रहे थे तब स्कॉट बोलैंड की गेंद उनके बल्ले का किनारा लेकर गली में ग्रीन के बाईं ओर गई जिन्होंने जमीन से एक इंच ऊपर कैच लपका। ग्रीन इसके तुरंत बाद जश्न मनाने लगे। इस दौरान भारतीय सलामी बल्लेबाज क्रीज पर खड़ा रहा। तीसरे अंपायर रिचर्ड केटलबोरो ने इसके बाद गिल को आउट करार दिया। भारत के कप्तान रोहित शर्मा ने निराशा में नही चिल्लाया जबकि द ओवल के स्टैंड में चारों ओर धोखा, धोखा के नारे लगे।

भारत की हार के लिए खिलाड़ी व बीसीसीआई जिम्मेदार

लंदन। विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल में ऑस्ट्रेलिया के हाथों करारी शिकस्त झेलने के बाद भारत के पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री ने इस बात पर संशय जताया कि भविष्य में इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) और इस मुकाबले के बीच अधिक समय मिलेगा। शास्त्री ने कहा यह तभी संभव होगा जब इससे जुड़े सभी हितधारकों (बीसीसीआई और आईपीएल फ्रेंचाइजी) के विचारों में बदलाव होगा। शास्त्री हालांकि उनके विचारों से सहमत नही हुए और इसकी जिम्मेदारी खिलाड़ियों पर डाली। ऐसा कभी नही होने वाला है। आपको यथार्थवादी बनना होगा। आपको 20 दिन तभी मिलेंगे जब आप आईपीएल से बाहर हो जाएंगे। यह आपकी पसंद की बात है। शास्त्री ने यह भी संकेत दिया कि बीसीसीआई को आगे का रास्ता तय करने के लिए आईपीएल टीमों के साथ बातचीत करनी होगी। यह संस्थान पर भी निर्भर करता है। बीसीसीआई भविष्य में इसकी समीक्षा करेगा। अगर डब्ल्यूटीसी फाइनल का आयोजन आईपीएल के बाद जून के महीने में होता है तो उस सत्र में इस लीग के फाइनल में पहुंचने वाली फ्रेंचाइजी के लिए कुछ नियम होने चाहिए।

उप्र ओलंपिक संघ आज करेगा सम्मान

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की मेजबानी में खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स-2022 उत्तर प्रदेश के सफल व ऐतिहासिक आयोजन में डा.नवनीत सहगल अपर मुख्य सचिव खेल व युवा कल्याण ने कुशल व सफल नेतृत्व क्षमता से उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी। इसके साथ ही उत्तर प्रदेश के खेल निदेशक डा.आरपी सिंह ने अथक प्रयास व परिश्रम और कार्यकुशलता से महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन किया था। इन दोनो को उत्तर प्रदेश ओलंपिक संघ आगामी 12 जून 2023 सोमवार को केडी सिंह बाबू स्टेडियम के मीटिंग हाल में सम्मानित करेगा।

ओडिशा को राष्ट्रीय रग्बी सेवंस में दोहरा खिताब

पुणे। ओडिशा ने महिला राष्ट्रीय रग्बी सेवंस मे दबदबा बनाते हुए यहां बालेवाड़ी के श्री शिव छत्रपति खेल परिसर में सीनियर और जूनियर वर्ग के खिताब जीते। ओडिशा की सीनियर महिला टीम ने शनिवार को यहां मेजबान महाराष्ट्र को 31-7 से हराकर सीनियर महिला राष्ट्रीय रग्बी सेवंस खिताब जीता। सेमीफाइनल मे ओडिशा ने पश्चिम बंगाल को 26-5 जबकि महाराष्ट्र ने केरल को 14-5 से शिकस्त दी। ओडिशा ने जूनियर फाइनल मे भी मेजबान महाराष्ट्र को बेहद एकतरफा मुकाबले मे 52-0 से हराकर जूनियर महिला राष्ट्रीय रग्बी सेवंस का खिताब जीता।

अश्मिता, रवि ने मालदीव चैलेंज का खिताब जीता

नई दिल्ली। भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ियों अश्मिता चालिहा और रवि ने माले में विपरीत अंदाज मे जीत दर्ज करते हुए मालदीव अंतरराष्ट्रीय चैलेंज मे क्रमशः महिला और पुरुष एकल के खिताब जीते। तीसरी वरीय अश्मिता ने एक गेम से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए शनिवार को ऑल इंडियन महिला एकल फाइनल मे हमवतन तस्नीम मीर को 19-21, 21-17, 21-11 से हराया। असम की खिलाड़ी का यह तीसरा बीडब्ल्यूएफ अंतरराष्ट्रीय चैलेंज खिताब है। उन्होने इससे पहले टाटा ओपन इंडिया इंटरनेशनल और दुबई इंटरनेशनल का भी खिताब जीता है।

दिव्या और मैरी को एशिया शतरंज का स्वर्ण व रजत

अल्माटी। भारत की दिव्या देशमुख एशियाई महाद्वीपीय शतरंज चैंपियनशिप की महिला क्लासिकल स्पर्धा में रविवार को यहां चैंपियन बनी, तो वहीं मैरी एन गोम्स उपविजेता रही।सत्रह साल की दिव्या ने कजाकिस्तान की जेनिया बालाबाएवा के साथ नौवें और अंतिम दौर के मुकाबले को ड्रा खेला और 7.5 अंकों के साथ शीर्ष पर रही। मैरी ने भी आखिरी दौर मे ड्रा खेला और 6.5 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर रही।

अदिति अशोक ने एलपीजीए में कट हासिल किया

गेलोवे (अमेरिका)। भारतीय गोल्फर अदिति अशोक ने दूसरे दौर में तीन ओवर 74 के स्कोर के साथ यहां शॉपराइट एलपीजीए क्लासिक में कट हासिल किया।अदिति हालांकि संयुक्त 61वें स्थान पर चल रही है।पहले दौर मे दो अंडर 69 का स्कोर बनाने वाली अदिति का कुल स्कोर एक ओवर है। अदिति ने दूसरे दौर मे दो बर्डी की लेकिन वह पांच बोगी भी कर गईं जिससे उनका स्कोर तीन ओवर रहा। डेनी होमक्विस्ट पहले दौर में 64 के स्कोर के बाद दूसरे दौर में 67 के स्कोर के साथ शीर्ष पर बरकरार है।

जोकोविच ने जीता रिकॉर्ड 23वां ग्रैंडस्लैम

● फ्रेंच ओपन : कैस्पर रूड को हराया

भषा । पेरिस

नोवाक जोकोविच ने टेनिस के इतिहास में सबसे ज्यादा ग्रैंडस्लैम खिताब जीतने वाले पुरूष खिलाड़ी बन गए। उन्होंने फ्रेंच ओपन फाइनल में रविवार को कैस्पर रूड को हराकर 22 बार के ग्रैंडस्लैम चैम्पियन रफेल नडाल को पीछे छोड़ दिया। सर्बिया के 36 वर्ष के जोकोविच ने तीन घंटे 13 मिनट तक चले मुकाबले में 7–6, 6–3, 7 –5 से जीत दर्ज की। वह नडाल से एक खिताब आगे और अब टेनिस को अलविदा कह चुके रोजर फेडरर से तीन खिताब आगे हो गए। रोलां गैरो पर 14 बार के चैम्पियन नडाल चोट के कारण इस बार नहीं खेल रहे थे। जोकोविच ने यहां 2016 और 2021 में भी खिताब जीता है। वह टेनिस के इतिहास में हर ग्रैंडस्लैम कम से कम तीन बार जीतने वाले पहले खिलाड़ी बन गए। उन्होंने दस आस्ट्रेलियाई ओपन, सात विम्बलडन और तीन अमेरिकी ओपन जीते हैं। वह एक बार फिर एक कैलेंडर वर्ष में सभी ग्रैंडस्लैम जीतने की राह पर है। रॉड लावेर ने 1969 में यह कारनामा किया था जिसे उसके बाद कोई दोहरा नहीं सका। `कोविच 2021 में आस्ट्रेलियाई ओपन, फ्रेंच ओपन और विम्बलडन जीतकर उसके करीब पहुंचे थे लेकिन अमेरिकी ओपन फाइनल में दानिल मेदवेदेव से हार गए। विम्बलडन तीन जुलाई से आल इंग्लैंड क्लब पर खेला जाएगा। कोरोना महामारी के दौरान टीका नहीं लगवाने के कारण जोकोविच आस्ट्रेलियाई ओपन और अमेरिकी ओपन नहीं खेल सके थे। जोकोविच ने इस खिताब के साथ ही 23 बार की ग्रैंडस्लैम चैम्पियन सेरेना विलियम्स की बराबरी भी कर ली जिन्होंने पिछले साल टेनिस से विदा ले ली है। मागरेट कोर्ट ने अमैच्योर युग में 24 खिताब जीते हैं लेकिन ओपन युग में जोकोविच और सेरेना सबसे आगे हैं।

महिला फेंच ओपन ट्राफी के साथ इगा

खिलाड़ियों ने दृढ़ता, प्रतिभा व टीम वर्क दिखाया : मोदी

भाषा । नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय महिला जूनियर हॉकी टीम को एशिया कप 2023 चैम्पियन बनने पर बधाई देते हुए रविवार को खिलाड़ियों की दृढ़ता, प्रतिभा और टीम वर्क की तारीफ की। मोदी ने टीम की तस्वीर के साथ ट्विटर पर लिखा, महिला हॉकी जूनियर एशिया कप 2023 जीतने पर हमारे युवा चैंपियनों को बधाई। टीम ने अपार दृढ़ता, प्रतिभा और टीम वर्क दिखाया है। उन्होंने हमारे देश को बहुत गौरवान्वित किया है। भविष्य के प्रयासों के लिए उन्हें शुभकामनाएं। हॉकी इंडिया ने खिताब जीतने वाली टीम की प्रत्एक खिलाड़ी को दो लाख रुपए नकद देने जबकि सहयोगी स्टाफ के प्रत्एक सदस्य को एक लाख रुपए देने की घोषणा की।हॉकी इंडिया ने पुरस्कार की घोषणा करते हुए ट्विटर पर लिखा, ऐसी ऐतिहासिक उपलब्धियां बड़े इनाम की हकदार हैं। हॉकी इंडिया महिला जूनियर एशिया कप 2023 का पहला खिताब जीतने पर प्रत्एक खिलाड़ी को दो लाख रुपए और सहयोगी स्टाफ प्रत्एक सदस्य को एक लाख रुपए का नकद पुरस्कार देने की घोषणा की घोषणा करता है।साइ ने भी भारतीय खिलाड़ियों की सराहना की। उन्होंने ट्विटर पर लिखा, इस टीम के 17 खिलाड़ी खेलों इंडिया और राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र की उपज है। उन्होंने बताया, हमारी जूनियर टीम पूरे टूर्नामेंट में अपराजित रही, जिसमें अन्नु नौ गोल के साथ शीर्ष स्कोरर रही। हमारी गोलकीपर माधुरी ने इस दौरान शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने उत्कृष्ट रक्षात्मक कौशल दिखाते हुए कुछ बेहद करीबी बचाव किए। खिलाड़ियों को बधाई।

खेल मंत्री ठाकुर ने नारी शक्ति को सलाम किया

नई दिल्ली। केंद्रीय खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने भारतीय महिला जूनियर हॉकी टीम के एशिया कप चैम्पियन बनने को ऐतिहासिक उपलब्धि करार देते हुए नारी शक्ति को सलाम किया। ठाकुर ने इस जीत को ऐतिहासिक करार देते हुए इन खिलाडियों के विकास में खेलों इंडिया कार्यक्रम के योगदान के बारे में बताया। एक शानदार और अविस्मरणीय रविवार। इतिहास रचने के लिए हमारी नारी शक्ति को हार्दिक बधाई। उन्होंने अपने कौशल और जुनून के दमदार प्रदर्शन से चार बार के चैंपियन दक्षिण कोरिया को हराकर पहली बार महिला जूनियर हॉकी एशिया कप का खिताब जीता।

भारतीय प्रशंसकों को याद आई धोनी की कप्तानी

भाषा । नई दिल्ली

पिछले दस साल से आईसीसी ट्रॉफी को तरस रही भारतीय क्रिकेट टीम रविवार को जब आस्ट्रेलिया के हाथों विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल हारी तो क्रिकेटप्रेमियों के सब्र का बांध मानों टूट गया और उन्हें चार आईसीसी खिताब जीतने वाले कैप्टन कूल महेंद्र सिंह धोनी की याद आई। भारत ने आखिरी आईसीसी खिताब 2013 में जीता था जब महेंद्र सिंह धोनी की कप्तानी में चैम्पियंस ट्रॉफी फाइनल में इंग्लैंड को मात दी थी। भारत की हार के साथ ही पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री का वह बयान भी वायरल हो गया जो उन्होंने कमेंट्री करते समय कहा था। इस पूर्व हरफनमौला ने कहा था कि आईसीसी ट्रॉफी जीतना आसान नहीं है लेकिन महेन्द्र सिंह धोनी से इसे काफी आसान बना दिया था।धोनी की अगुवाई में भारतीय टीम ने 2007 में टी20 विश्व कप के बाद 2011 में एकदिवसीय विश्व कप और 2013 में चैंपियंस ट्रॉफी का खिताब जीता था। धोनी को इसके साथ ही टेस्ट की साल की सर्वश्रेष्ठ टीम को दिए जाने वाले तत्कालीन गदा (आईसीसी मेस) को भी उठाने का मौका मिला था। कई प्रशंसकों ने ट्विटर पर तीनों वैश्विक ट्रॉफी और गदे के साथ धोनी की तस्वीर साझा कर अपनी भावनाओं को व्यक्त किया। ट्विटर पर प्रशंसकों का गुस्सा विकेटकीपर श्रीकर भरत के चयन पर भी निकला। पुलकित नाम से बने एक ट्विटर अकाउंट पर भरत का मजाक उड़ाते हुए लिखा, खिलाड़ी ऐसा बनो की कोई आपसे कुछ उम्मीद लगा के ना बैठे।

एशिया कप के लिए पीसीबी के हाइब्रिड मॉडल को स्वीकार कर सकता है एसीसी

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के सचिव जय शाह की अगुआई वाली एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) के भारत की गैरमौजूदगी वाले चार एशिया कप मुकाबलों का आयोजन पाकिस्तान जबकि बाकी मुकाबलों का आयोजन श्रीलंका के गॉल और पाल्लेकल में कराने के पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के हाइब्रिड मॉडल को स्वीकृति देने की संभावना है। एसीसी के इस संबंध मे मंगलवार को औपचारिक घोषणा करने की उम्मीद है और हाइब्रिड मॉडल के आधिकारिक रूप से स्वीकृत होने के बाद पाकिस्तान क्रिकेट टीम के अक्टूबर-नवंबर में भारत में होने वाले एकदिवसीय विश्व कप के लिए आने का रास्ता भी साफ हो जाएगा। पाकिस्तान को अब अहमदाबाद में खेलने में कोई समस्या नही होनी चाहिए। एसीसी बोर्ड के एक सदस्य ने पीटीआई को नाम जाहिर नही करने की शर्त पर बताया, ओमान क्रिकेट बोर्ड के प्रमुख पंकज खीमजी, एसीसी कार्यकारी बोर्ड के सदस्य, को हल निकालने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी क्योंकि अधिकांश देश हाइब्रिड मॉडल नही चाहते थे।

एफआईएच प्रो लीग हॉकी : भारत ने अर्जेंटीना को 2-1 से हराया

इंधोवेन। पिछले मैच में नीदरलैंड से मिली हार से उबरते हुए भारत ने एफआईएच प्रो लीग के अपने आखिरी मैच में रियो ओलंपिक चैम्पियन अर्जेंटीना पर रविवार को 2– । से जीत दर्ज की। भारत के लिए आकाशदीप सिंह ने दूसरे और सुखजीत सिंह ने 14वें मिनट में फील्ड गोल किए। वहीं अर्जेंटीना के लिए एकमात्र गोल लुकास टोस्कानी ने 58वें मिनट में दागा। इस जीत के बाद भारत 30 अंक लेकर अंकतालिका में शीर्ष पर बना हुआ है। अनुभवी आकाशदीप ने दूसरे ही मिनट में गोल करके भारत को बढत दिला दी। सर्कल के भीतर अकेले खड़े आकाशदीप ने गेंद का इंतजार किया और दाहिने फ्लैंक से बेहतरीन मूव पर गेंद को लेकर उन्होंने गोल के भीतर डाल दिया। अर्जेंटीना ने जवाबी हमला बोला लेकिन भारतीय डिफेंस मुस्तैद था।

भारत की नजरें जीत के साथ फाइनल में जगह पक्की करने पर

मंगोलिया पर शानदार जीत के बाद भारतीय टीम सोमवार को यहां चार देशों के इंटरकांटिनेंटल कप फुटबॉल टूर्नामेंट में वानुआतु के खिलाफ जब मैदान में उतरेगी तो उसकी कोशिश जीत के साथ फाइनल में जगह पक्की करने की होगी। ऐसे में अगर भारतीय टीम वनुआतु के खिलाफ जीत दर्ज करती है तो वह फाइनल में जगह पक्की कर लेगी।

सरकार बृजभूषण का बचाव करने की कोशिश कर रही है: विनेश

भाषा । नई दिल्ली

बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे पहलवानों का मानना है कि सरकार भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के निवर्तमान अध्यक्ष को बचाने की कोशिश कर रही है जो उत्तर प्रदेश से भारतीय जनता पार्टी के संसद भी है। खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने सात जून को आश्वासन दिया था किबृजभूषण के खिलाफ 15 जून तक आरोपपत्र दायर कर दिया जाएगा, जिसके बाद पहलवानों ने अपना आंदोलन रोक दिया था। दिल्ली के जंतर मंतर पर 23 अप्रैल से डब्ल्यूएफआई के निवर्तमान प्रमुख के खिलाफ अपना आंदोलन फिर से शुरू करने के बाद से पहलवान उनकी गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं।सरकार ने पहलवानों की कई मांगों को स्वीकार कर लिया है, जिसमें बृजभूषण के परिवार के किसी भी सदस्य या सहयोगी को आगामी डब्ल्यूएफआई चुनाव लड़ने की अनुमति नहीं दी जाएगी।ओलंपिक पदक विजेता साक्षी मलिक, बजरंग पूनिया और विनेश फोगाट के नेतृत्व में पहलवानों ने कहा है कि जब तक सिंह को सलाखों के पीछे नहीं पहुंचाया जाता, वे अपना विरोध प्रदर्शन समाप्त नहीं करेंगे। विश्व चैम्पियनशिप में दो बार पदक जीतने वाली विनेश ने रविवार को पंजाब में प्रदर्शन कर रहे किसानों को समर्थन देने के जाते समय हरियाणा के खटकड़ टोल प्लाजा पर मीडिया से बात की किंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के साथ पहलवानों की बैठक के बारे में पूछे जाने पर विनेश ने कहा, उन्होंने कुछ प्रस्ताव दिए थे कि वे हमारे लिए इतना कर सकते हैं लेकिन बृजभूषण की गिरफ्तारी को छोड़कर और सब काम हो रहा है। यह पूछे जाने पर कि बृजभूषण को गिरफ्तार क्यों नहीं किया जा रहा है, इस पहलवान ने कहा, आपको अमित शाह से पूछना होगा कि उन्हें (डब्ल्यूएफआई प्रमुख) गिरफ्तार क्यों नहीं किया जा रहा है।

आसाम ने जीती टीम चैंपियनशिप

● 40वीं राष्ट्रीय ताइक्कांडो चैंपियनशिप ● बंगाल को दूसरा स्थान

लखनऊ। आसाम ने 40वीं राष्ट्रीय ताइक्कांडो चैंपियनशिप और 26वीं राष्ट्रीय पूमसे ताइक्कांडो चैंपियनशिप में सर्वाधिक 36 स्वर्ण पदक अपने नाम करते हुए ओवरऑल टीम चैंपियनशिप ट्राफी पर कब्जा जमा लिया। ताइक्कांडो फेडरेशन ऑफ इंडिया के तत्वाधान में ताइक्कांडो अकादमी ऑफइंडिया द्वारा केडी सिंह बाबू स्टेडियम के बहुउद्देश्यीय हाल में संपन्न इस चैंपियनशिप में पश्चिम बंगाल की टीम 19 स्वर्ण पदक के साथ उपविजेता रही। ओडिशा की टीम को तीसरे स्थान से संतोष करना पड़ा। आसाम ने इस चैंपियनशिप में 36 स्वर्ण, 9 रजत व 7 कांस्य सहित कुल 52 पदक जीते। पश्चिम बंगाल ने 19 स्वर्ण, 16 रजत व 12 कांस्य सहित कुल 47 पदक के साथ दूसरा स्थान हासिल किया। तीसरे स्थान पर रही ओडिशा ने 4 स्वर्ण, 13 रजत व 14 कांस्य सहित कुल 31 पदक जीते। समापन समारोह में मुख्य अतिथि सुधीर हलवासिया पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष भाजपा उत्तर प्रदेश विशिष्ट अतिथि भारत में ताइक्कांडो खेल के संस्थापक ग्रैंड मास्टर डा. जिम्मी आर जगत्यानी चेयरमैन ताइक्कांडो अकादमी ऑफ इंडिया ने पुरस्कार प्रदान किए। समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए आयोजन सचिव पीटर जगत्यानी ने बताया कि इस चैंपियनशिप के माध्यम से चयनित खिलाड़ी कोरिया में आगामी 20 से 26 जुलाई 2023 तक दक्षिण कोरिया में होने वाली अंतर्राष्ट्रीय वर्ल्ड ताइक्कांडो हनमदांग चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे।

मैनचेस्टर सिटी ने इंटर मिलान को हराकर पहला चैंपियन्स लीग खिताब जीता

इस्तांबुल। रोड्री के गोल की बदौलत मैनचेस्टर सिटी ने शनिवार को यहां इंटर मिलान को।–0 से हराकर पहली बार चैंपियन्स लीग फुटबॉल टूर्नामेंट का खिताब जीता।स्पेन के रोड्री ने इस्तांबुल के अतातुर्क ओलिमपियाट स्टेडियम में मैच का एकमात्र गोल 68वें मिनट में किया और मैनचेस्टर सिटी को पहली बार यूरोपीय क्लब फुटबॉल का शीर्ष खिताब दिलाया। टीम के मैनेजर पेप गुआर्डियोला ने टीम की खिताबी जीत के बाद कहा, यह किस्मत में लिखा था। यह हमारा है। अबु धाबी के शेख मंसूर बिन जाएद अल नाहयान ने 15 साल पहले सिटी को रातों रात दुनिया के सबसे अमीर क्लबों की श्रेणी में शामिल कर दिया था लेकिन इसके बावजूद टीम को चैंपियन्स लीग का खिताब जीतने में लंबा समय लग गया।गुआर्डियोला की टीम के लिए यह अंतिम मोर्चा था। टीम ने मौजूदा सत्र में प्रीमियर लीग और एफए कप के खिताब जीतने के बाद खिताबी हैट्रिक पूरी की।इस खिताबी जीत से गुआर्डियोला का सर्वकालिक सर्वश्रेष्ठ कोच का दावा भी मजबूत हुआ है। यह उनका तीसरा चैंपियन्स लीग खिताब और 30वां बड़ा खिताब है।गुआर्डियोला ने दूसरी बार सत्र में खिताबी हैट्रिक पूरी की है। इससे पहले 2009 में वह बार्सीलोना के साथ ऐसा कर चुके हैं।सिटी इस तरह इंग्लैंड का सिर्फ दूसरा क्लब बना जिसने एक ही सत्र में तीन बड़े खिताब जीते। मैनचेस्टर यूनाईटेड ने इससे पहले 2009 में यह कारनामा किया था।इंटर मिलान को हालांकि मुकाबले को अतिरिक्त समय में ले जाने का मौका मिला था लेकिन टीम इसका फायदा नहीं उठा सकी। स्थानापन्न खिलाड़ी रोमेलु लुकालु को तो 89वें मिनट में सिर्फ गोलकीपर एडरसन को छकाना था लेकिन चार मीटर की दूरी से वह हेडर सीधा गोलकीपर के हाथों में मार बैठे।